

511

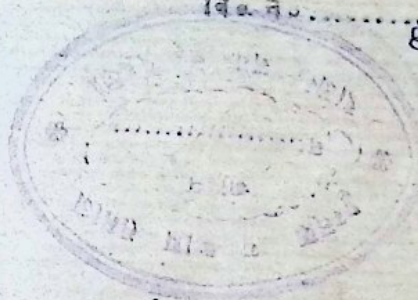
222

प्रो०
आर्य समाज पुस्तकालय

राजेंद्र नगर, नई दिल्ली-60

ले० न०..... 703.....

वि० न०..... E-222.....

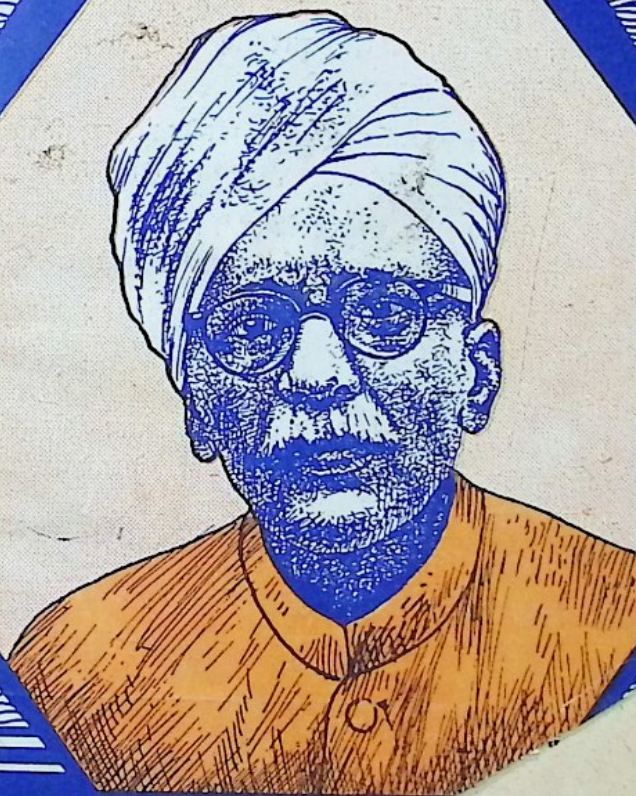


ओ३म्

आर्योदय

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा संचालित

हिन्दी साप्ताहिक



५६

५८

महाशय-कृष्ण

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान
संसद सदस्य
श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती का सन्देश

आदरणीय महाशय जी से मेरा व्यक्तिगत परिचय तो अधिक न था किन्तु आरम्भ से ही मैं "प्रताप" में उनके द्वारा लिखे लेखों को ध्यान से पढ़ता रहा हूँ ।

वस्तुतः बहुत लम्बे समय तक पंजाब के हिन्दुओं के मन और मस्तिष्क पर महाशय जी के विचार छाए रहे हैं और सभी को उन्होंने सोचने की दिशा प्रदान की है ।

प्रदेश के अनेक आर्थिक आधारों में मत-भेद होते हुए भी आर्य समाज के कार्यों में हम एक साथ रहे, चले और कार्य किया ।

वे निर्भीक, निडर और स्पष्टवक्ता थे । जिसको भी उन्होंने आर्यसमाज की दृष्टि से ठीक समझा, उसका सदा पूरी शक्ति से साथ दिया । पंजाब में आर्यसमाज और आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्माण में उनका जो योगदान रहा है, वह उनका स्थायी कीर्ति स्तम्भ है ।

परमात्मा करे कि हम स्वर्गीय आदरणीय महाशय जी के गुणों से निरन्तर प्रेरणा लेकर आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाने में यत्नशील और सफल हों ?

(यह पंक्तियाँ हस्पताल में रोग शय्या से ही लिख रहा हूँ ।
पाठक हृदय के भावों को समझ संक्षेप के लिए क्षमा करें ।)

—जगदेवसिंह सिद्धान्ती

सम्पादक :—

हरिप्रकाश, सभा मंत्री
सह सम्पादक—
भारतेन्द्र नाथ

{ इस अंक का मूल्य
५० नए पैसे

आर्य समाज पुस्तकालय

राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-60

५११

ले. नं. ७०३

६११२

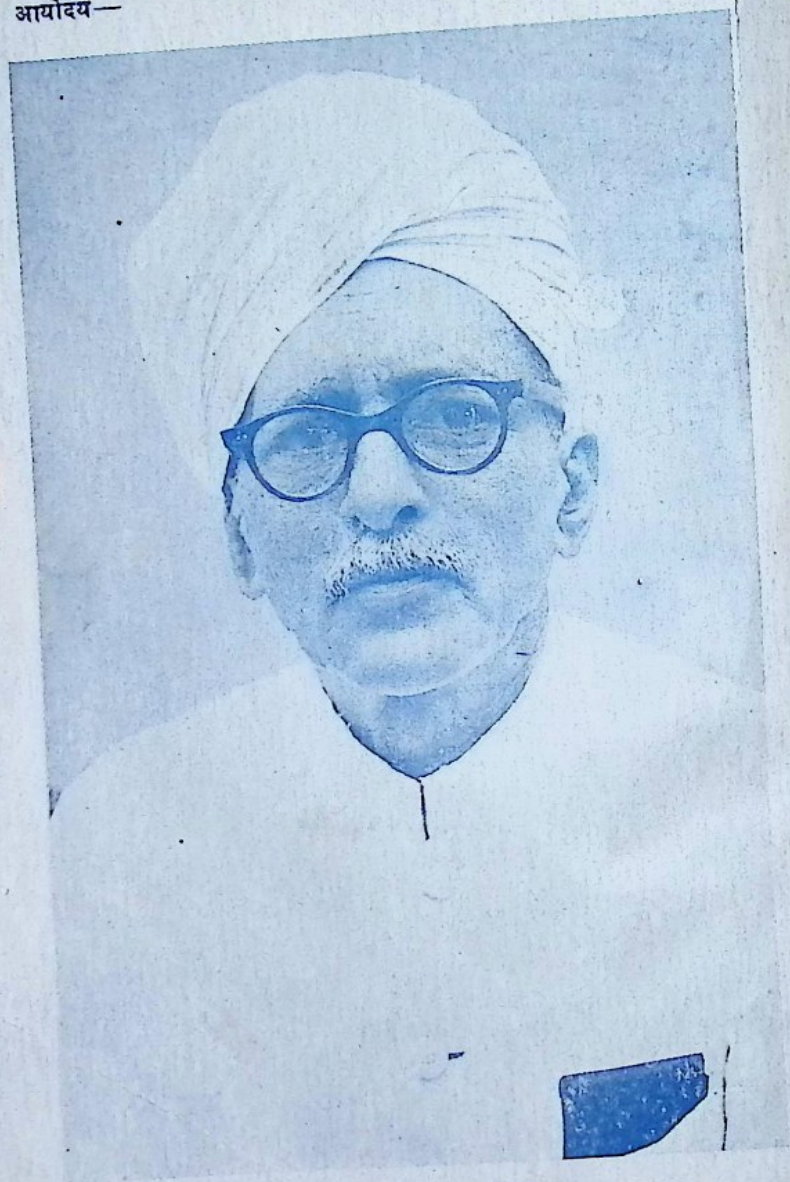
कहाँ ? क्या ?

किसका ?

१. सम्पादकीय		
२. सब व्यर्थ है (कविता)	भारतेन्द्र नाथ	७
३. महाशय जी के अन्तिम क्षण	श्री के० नरेन्द्र एम० ए०	८
४. महाशय कृष्ण का अन्तिम लेख		८
५. भव्य कंडी	श्री स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती	१७
६. कलिपुगी आर्य कृष्ण	स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती	१६
७. भीठी याद	स्वामी सत्यमुनि सरस्वती	२१
८. आर्य नेता	श्री सूर्यभानु एम० ए०	
	उपकुलपति कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय	२४
९. जैसा उन्हें देखा	आचार्य प्रियव्रत जी गुरुकुल कांगड़ी	२७
१०. सदेश	श्री गोपीबन्धु भार्गव	३३
११. तीसरी पीढ़ी	श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय	३४
१२. कृष्ण सप्तक (कविता)	प्रणव शास्त्री एम० ए०	३७
१३. मधुर-स्मृतियाँ	श्री रामनाथ जी उपप्रधान	३६
१४. श्रद्धाञ्जलि	पं० धर्मदत्त विद्यामातण्ड	४२
१५. निभंय पत्रकार	श्री आराधक	४४
१६. लौह पुरुष	श्री रामगोपाल जी (शालवाले)	४६
१७. आर्यसमाज के भोष्म पितामह	श्री सत्यदेव विद्यालंकार	५०
१८. महाशय जी !	श्री पं० मुनीश्वर देव जी	
	"सिद्धान्त शिरोमणि"	५६
१९. महाशय कृष्ण	श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक	५८

२०. सिद्धान्त के घनी	पं० रामस्वरूप (पाराशर)	६१
२१. प्रकाश स्तम्भ	श्री पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति	६४
२२. प्रहरी	श्री भक्तराम जालंधर	६७
२३. पंजाब के मुख्य मन्त्री श्री प्रतापसिंह का सन्देश		६६
२४. अनुकरणीय पहलू	श्री महात्मा ज्ञानेश्वरानन्द	७०
२५. मूर्धन्य नेता	श्री पं० आनन्दप्रिय बड़ौदा	७२
२६. दूरदर्शी	श्री मदनजित् आर्य	७४
२७. हम ऋणी हैं	कविराज रामसिंह वैद्य	७६
२८. मेरे बड़े भाई	डाक्टर लालचन्द जी	७८
२९. अविचल नेता	पं० त्रिलोकचन्द शास्त्री	८०
३०. विशेष गुण	आचार्य भद्रसेन अजमेर	८२
३१. प्रेरणा के स्रोत	श्री ओम्प्रकाश एम० ए०	८४
३२. अपूर्णीय क्षति	श्री पं० रघुवीरसिंह शास्त्री	८८
३३. श्रद्धांजलि	श्री नरेन्द्र जी	९०
३४. स्मृति शेष है (कविता)	श्री रमाकान्त	
३५. कृष्ण (कविता)	श्री चित्रसेन आर्य	९३
३६. संस्मरण	श्री भवानीलाल भारतीय	९५
३७. कुछ स्मृतियां	श्री कुन्दनलाल	९८
३८. महाशय कृष्ण के कुछ पत्र		१०२
३९. महाशय जी और लुधियाना	श्री बाबूराम	१०८
४०. मैंने उनसे क्या सीखा ?	श्री क्षितीश वेदालंकार	११२
४१. समाचार पत्रों व प्रसिद्ध पत्रकारों की श्रद्धांजलियां		११६

आर्योदय—



स्व० महाशय कृष्ण

ओ३म्

राजधानी में आर्यसमाज का एकमात्र साप्ताहिक

आर्योदय

हिन्दी साप्ताहिक नयी दिल्ली

वर्ष ४ | रविवार—६ वैशाख २०२०, २१ अप्रैल १९६३ | अंक २६, ३०, ३१

हे ईश्वर !

पाहि नो अग्ने रक्षसो

अजुष्टात्पाहि धूर्तेरररूपो अघायोः ।

त्वा युजा पृतनायूँरभिष्याम् ॥

ऋ० ७।१।१३॥

हे (अग्ने) तेजस्वी ईश्वर ! (अजुष्टात् रक्षसः) हीन राक्षसों अथवा अप्रेमी जनों से (नः पाहि) हमारी रक्षा कर । (अररूपः धूर्तेः) अदाता धूर्त से, तथा (अघायोः) पापी से हमें (पाहि) सुरक्षित रख । (त्वा युजा) तेरे साथ रहकर (पृतनायूँ) सैन्य लेकर चढ़ाई करने वालों का (अभिष्याम्) पराभव करें ।

हे ईश्वर ! सब दुष्ट दुर्जनों से हमारा बचाव कर । तेरी शक्ति से सुरक्षित होते हुये हम शत्रुसेना पर चढ़ाई करके उनको पराजय करें ।

●
महाशय कृष्ण
(विचार मुद्रा में)
●



●
महाशय जी की
युवावस्था
का
एक चित्र
●

सम्पादकीय-

अनुकरणीय, कर्मठ, और...

जिन की छत्र-छाया में सदा प्रेरणा पायी, कार्य की दिशा का बोध मिला, संकट और भ्रंशवात में सहारा मिला, वह अनुपम विभूति आज केवल स्मृति में ही शेष है !

स्मृति की रेखा गहरी है- प्रेरक है, मार्ग-दर्शक है। हम अत्यन्त, श्रद्धा-भावना के साथ उस वीर पुरुष के प्रति नत मस्तक हैं जो ज्ञान से जिया और अन्तिम क्षण तक भी आर्यसमाज जिसके मन-मन्दिर का आराध्य रहा।

उनके गुण-गौरव का गान करने की सामर्थ्य लेखनी में नहीं फिर भी प्रस्तुत अंक में उनके अनेक मित्रों, सहयोगियों के हार्दिक उद्गार हम प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि आर्यसमाज की आने वाली पीढ़ी निरन्तर आदरणीय महाशय जी के गुणों को, अपने जीवन में धारण करती रहेगी।

हम सभी यह सदा स्मरण रखें कि महाशय जी आदि से अन्त तक केवल आर्यसमाज के थे। राजनीति की लहरों से निरन्तर खेलते रहने पर भी राजनीति में वे कभी लीन न हुए। वे यदि चाहते तो अत्यन्त सरलता से पंजाब में सर्वोच्च पद प्राप्त कर सकते थे पर उन्होंने शासन की कुर्सी ठुकरा कर जनता के मन मंदिर पर आसीन रहना ही श्रेयस्कर समझा ! कभी उन्होंने किसी अन्य संस्था को आर्यसमाज से अधिक महत्त्व नहीं दिया।। सीधे शब्दों में उनका जीवन, लक्ष्य, स्वप्न केवल आर्यसमाज था। सोते, जागते, बैठते, उठते, खाते, पीते, उन्हें केवल आर्यसमाज की ही चिन्ता थी।

स्व० महाशय जी का यह अकेला गुण ही यदि आज हम अपने जीवन में धारण करें, तो आर्यसमाज अपरिमित शक्ति संपन्न हो सकता है !

: ५ :

इस विस्तृत भूमंडल में अनेकों जन्म लेते हैं अनेकों मृत्यु की गोद में सो जाते हैं, धन्य हैं वे जो अपने लिए नहीं अगि तु सभी के लिए कार्य-रत रहते हैं। ऐसे महान् आत्माओं के लिए ही लाखों नयन अश्रुपात करते हैं।

वीर-धीर कर्मठ-मार्ग-दर्शक आर्यसमाज के परवाने, आदर्श कर्मयोगी महाशय जी की स्मृति में श्रद्धा का यह पुष्प पाठक “आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब” की ओर से स्वीकार करें।

परमात्मा हम सभी को ऐसी बुद्धि-बल प्रदान करे कि हम उनके कार्य को आगे बढ़ाने में सफल हो सकें।

आर्योदय का स्थान परिवर्तन

१३ अप्रैल से सभा ने अपने प्रमुख पत्र “आर्योदय” का स्थान जालंधर के स्थान पर दिल्ली परिवर्तित कर दिया है। अंतरंग सभा तो यह निश्चय पहले ही कर चुकी थी किन्तु अनेक कठिनाइयों के कारण हम इसे मूर्त रूप न दे सके।

हमें विश्वास है कि आर्य जनता के सहयोग द्वारा भारत की राजधानी नई दिल्ली में आर्य समाज का एक मात्र साप्ताहिक “आर्योदय” आर्य समाज की गौरवमयी परम्पराओं के अनुरूप उन्नति कर सकेगा।

पाठकों को यह ज्ञान कर हर्ष होगा कि प्रसिद्ध पत्रकार व लेखक श्री पं० भारतेन्द्रनाथ “साहित्यालंकार” की सेवाएँ भी इस अंक से ही “आर्योदय” को प्राप्त हो गयी हैं। वैसे तो वह पिछले कुछ मासों से ही “आर्योदय” को सहयोग दे रहे थे। पर स्थान की दूरी से इतना अधिक ध्यान नहीं दिया जा सका।

अब यह जनता के सहयोग पर निर्भर है कि “आर्योदय” कितनी प्रगति करे.....

हम आशावान हैं और दृढ़ निश्चय है कि हमें निराशा न होगी।

—हरिप्रकाश

सब व्यर्थ है ?

एक प्रश्न है ज्वलंत,
दीप्त प्राण बुझ रहे,
नवीन लुप्त हैं पता नहीं कहाँ ?

× × ×
स्वप्न भस्म हो गए, शून्य की पुकार में,
काँपती है यह धरा, गगन आज डोलता,
पूछता है मौन कवि का हृदय,
पशु बल जो बढ़ रहा-उसे कौन रोकेगा?

× × ×
दानवता की गरदन पर दयानन्द ने प्रहार किया था !
उस के तपः पूत शिष्यों ने,
चहुँ दिश जय-जयकार गुँजायी थी ! जय ध्वनि से—
आततायी का अंतर थर्राया था !
पापों के सिंहासन डोल उठे थे,
लगता था धरती सतयुग के स्वागत में तैयार खड़ी है !

× × ×
इन्हीं प्रयत्नों में,
कलम-कला के धनी,
वीर-नर-पुंगव महाशय कृष्ण थे ! ज्योति थे !
विकास में “दयानन्द-लक्ष्य” के रत, दिन रात,
कहीं अधूरा कुछ भी न रह जाए,
सर्वत्र वेद की पताका लहराए ?

× × ×
वे चले गए.....हम छले गए,
स्तम्भ गिर रहे हैं.....इमारत भूलने लगी हैं ?
श्रद्धाँजलि केवल यह हो सकती है कि.....हम स्तम्भ बनें ?
आर्य समाज के लिए जिएं और मरें,
अन्यथा सब व्यर्थ है।

—भारतेन्द्र नाथ

अन्तिम क्षण !

श्री के० नरेन्द्र एम० ए०

महाशय जी जीवन के अन्तिम क्षण तक आर्यसमाज के कार्यों में भाग लेते रहे। रविवार को सायंकाल आपके जीवन का अन्तिम सायंकाल था। संभवतः प्रभु को यही स्वीकृत था कि आप विदा होने से पूर्व दिल्ली के सब आर्य बन्धुओं के दर्शन कर सकें और उन्हें दर्शन दे सकें। आप ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष्य में राष्ट्रपति के सम्मान में आयोजित समारोह में सम्मिलित हुए। साढ़े सात बजे वहाँ से लौटे और अपने कमरे में प्रविष्ट होने से पूर्व वरामदे में कुरसी पर बैठ गये। उनका ड्राइवर उनके कमरे में उनका बिस्तर ठीक कर रहा था कि वह कुरसी से उठकर अन्दर जाने लगे। उसने कहा कि आप बैठे रहें, मैं अभी आपको अन्दर ले आता हूँ।” लेकिन उनके कहने के बावजूद वह अपनी कुरसी से उठ खड़े हुए और आगे बढ़ने लगे। इस पर आपकी छड़ी फिसल गई और आप दरवाजे के बाहर गिर गये। अचानक गिरने से आपके दिल पर कितना प्रभाव पड़ा, यह कहना कठिन है। सम्भव है कि हुआ हो, लेकिन देखने में ऐसा कोई लक्षण न था। उस समय मैं साथ के कमरे में बैठा था। उनके गिरने की आवाज सुनकर मैं भागा-भागा वरामदे में पहुँचा। उन्हें उठाया गया और वह चलकर अपने बिस्तर पर पहुँचे। वहाँ आपको लिटा दिया गया। आपकी कोहनी में मामूली-सी खराम आई थी। उस पर मरहम लगाई गई और आप आराम से लेट गये। आध-पौन घण्टा इसी तरह लेटे रहे। साढ़े आठ बजे आपने प्रतिदिन की तरह भोजन किया। साढ़े नौ बजे मुझे बुलाया और कहने लगे कि “मुझे साँस लेने में कष्ट हो रहा है।” इस पर मैंने पूछा कि

डाक्टर को बुला लूँ ?” उन्होंने उत्तर दिया कि थोड़ी देर देख लेते हैं। यदि आवश्यकता हुई तो बुला लेंगे। आध घण्टे बाद मुझे कहने लगे कि “कष्ट बढ़ता जा रहा है।” उस समय उनके गले से साँस निकलने की आवाज आ रही थी। सीना भी जोर-जोर से बोल रहा था। मैंने डाक्टर को टेलीफोन किया और वह दस मिनट में आ गया। जब डाक्टर उनके कमरे में प्रविष्ट हुआ, तो आप हंस कर कहने लगे कि “मैं आप को तंग करने का कोई न कोई बहाना बना ही लेता हूँ।” डाक्टर साहब ने हँस कर उत्तर दिया कि “तंग करना हो तो चाय के समय तंग कीजिए। इस समय रात को क्यों तंग करते हैं ?” दोनों इस उत्तर पर खूब हँसे। इसके बाद डाक्टर साहब ने उसकी नब्ज देखी, ब्लड-प्रेशर लिया और तत्काल ही मेरी ओर देखकर कहा कि वीर जी को टेलीफोन कर दो।” मैंने उत्तर दिया कि “डाक्टर साहब ऐसी तो कोई बात दिखाई नहीं देती।” डाक्टर साहब ने उन्हें सुलाने का इन्जेक्शन दिया। इसके बाद दो और इन्जेक्शन दिये। देखते-देखते आप सो गये। मुझे आश्चर्य हुआ, क्योंकि उन्हें तत्काल ही नींद आ गई। वह एक प्रकार से बेहोश हो गये। उस समय हालत यह थी कि बीस मिनट में उनका ब्लडप्रेशर १७० से गिर कर १२० तक आ गया। डाक्टर साहब परेशान थे कि यदि ब्लडप्रेशर इसी प्रकार गिरता गया, तो न जाने क्या हो जाये। दस मिनट बाद उन्होंने मुझे बताया कि अब ब्लड-प्रेशर १३० हो गया है, जिसका मतलब यह लिया जाता है कि स्थिति में कुछ सुधार हुआ है।। पीने ग्यारह बजे डाक्टर साहब ने कहा कि “अब यह सो गये हैं और प्रातःकाल ६ बजे आकर देखूँगा। सवा ग्यारह बजे तक मैं उनके कमरे में रहा। इसके बाद ड्राइवर ने कहा कि “अब वह सो गये हैं आप भी जाकर आराम कीजिए। यदि आवश्यकता हुई तो मैं आपको बुला लूँगा।” मैंने उनकी ओर देखा, लेकिन मुझे सन्तोष न हुआ, वह बेहोश थे, सो न रहे थे। बेहोशी की उस स्थिति में कुछ कहना चाहते थे, लेकिन उनके गले से सप्ट शब्द न निकलते थे। कोई भी देख सकता था कि आप संघर्ष कर रहे हैं। बेहोशी में विस्तर से उठने का प्रयत्न करते, लेकिन रह जाते। फिर मुँह से कुछ निकालते, लेकिन कुछ समझ न आ रहा था। अस्तु सवा ग्यारह बजे मैं अपने कमरे में चला गया। पीने बारह बजे ड्राइवर आया और कहने लगा कि

“पिता जी को उलटी आई है ।” मैं उसी समय उठकर उनके पास पहुँचा । वह यथापूर्व बेहोश थे । लेकिन उस समय उनका साँस पहले से कम कठिनाई से आ रहा था । इसके बावजूद उनकी हालत देखकर मुझे चिंता हुई । दस मिनट इसी तरह गुजर गये और मैं उनके चेहरे की ओर देखता रहा । धीरे-धीरे आप चुप होते गये । बारह बज कर पाँच मिनट पर ड्राइवर ने कहा कि “अब वह बिल्कुल सो गये हैं ।” मैंने कहा कि “यह चुप्पी नींद की नहीं ।” जब उनके माथे पर हाथ लगाया, तो वह ठण्डा हो रहा था । फिर उनके सीने पर हाथ रखा, तो कुछ समझ में न आया । इस पर मैंने ड्राइवर से कहा कि “विजली बन्द कर दो ।” उसने विजली बन्द की, तो मैंने उनकी आँखों पर टार्च जलाई, लेकिन कोई प्रभाव न पड़ा । बस फिर तत्काल डाक्टर को टेलीफोन किया गया वह पाँच मिनट में पहुँच गये और उन्होंने भी आते ही आँखें देखीं और कह दिया ।



महाशय कृष्ण के प्रति !

वेद-ज्ञान गंगा के प्रसार में थे लीन सदा,
 सत्य धर्म राह सारे देश को दिखायी थी ।
 यवन-ईसाई, मिरजायी सभी हार माने,
 गर्दन कभी न ऊँची अपनी भुकायी थी ।
 होवे वो निजाम या हो कैरों दोनों परेशान,
 “ओ३म्” ध्वजा सदा “देव” जीत फहरायी थी ।
 माने या न माने कोई सत्य है परन्तु यह,
 लेखनी से सब का ही पटकी लगायी थी ।

—देवकीनन्दन “देव”

यह दुनिया पं० नेहरू की नहीं ?

स्व० श्री महाशय कृष्ण का अन्तिम लेख

हमारे प्रधान मन्त्री में बहुत-सी विशेषताएँ हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह अत्यन्त भद्र पुरुष हैं। क्या मजाल जो अपने विरोधी के लिए भी उनकी जिह्वा से कोई ऐसा शब्द निकले, जो उनके लिए शोभनीय नहीं। वह सब के मित्र हैं और किसी के शत्रु नहीं। अपने विरोधियों के साथ अत्यन्त सज्जनता का व्यवहार करते हैं। वह मिथ्या-भाषी भी नहीं हैं। नम्र इतने हैं कि कोई निर्धन व्यक्ति उन्हें निमन्त्रण दे, तो उसके घर भी पहुँच जाएँगे और कोई भी उनसे भेंट करना चाहे तो उसे मौका अवश्य देंगे।

परन्तु सज्जन व्यक्तियों के भाग्य में धोखा खाना लिखा है। यह इसलिए कि वह दूसरों को भी अपने जैसा समझते हैं। इसलिए उन्होंने भी धोखा खाया है। उन्होंने चीन के प्रधान मंत्री मि० चाऊ एन लाई को अपना भाई बनाया। उन्हें भारत आने का निमन्त्रण दिया वह आए भी। उनका जलूस निकाला गया। उसमें हिन्दी चीनी भाई-भाई के नारे लगाए गए। दिल्ली नगर निगम की ओर से उन्हें अभिनन्दन पत्र पेश किया गया। आशय यह है कि जितनी सेवा उनकी की जा सकती थी, की गई। पंचशील के आधार पर एक विज्ञप्ति भी प्रकाशित की गई, जिस पर दोनों देशों के प्रधान मन्त्रियों के हस्ताक्षर थे। बाण्डुंग सम्मेलन में भी पंचशील और 'जियो और जीने दो' का सिद्धान्त स्वीकार किया गया। इस सम्मेलन में भी चीन सम्मिलित था।

इसके बावजूद उसने चीन पहुँचते ही भारत पर हमले की तैयारी शुरू कर दी। चार वर्ष हुए जब पंडित जी को भी स्वीकार करना पड़ा कि चीन भारत के साथ द्रोह कर रहा है, जब उसने लद्दाख का कई हजार वर्गमील क्षेत्र हथिया

लिया। परिणाम यह हुआ कि हम पूरी तैयारी न कर सके और जब हमारी सेनाओं की चीनी सेनाओं से भिडन्त हुई, तो हमारी पराजय हुई। इसलिए कि उसके पास सेना भी अधिक है और आधुनिकतम शस्त्रास्त्र भी। ऐसा समय भी आया जब कि असम खतरे में पड़ गया और तेजपुर का जिलाधीश तो अपनी सुरक्षा को अपने कर्त्तव्य से अधिक प्राथमिकता देते हुए प्रजा को चीन की दया पर छोड़ कर भाग गया। उसे अब सरकार ने पदच्युत कर दिया है। यदि अमरीका और ब्रिटेन तुरन्त ही भारत की सहायता को न आ जाते, तो कह नहीं सकते कि चीन भारत का क्या हाल करता। फिर पं० नेहरू शांतिवादी हैं। इसलिए कि सम्भव हो तो चीन से युद्ध न करना पड़े, वह पुनः धोखा खा रहे हैं। कोलम्बो में ६ देशों के प्रतिनिधि एकत्र हुए। वह अपने आप को तटस्थ बताते हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि उनमें से चार स्पष्टरूप से चीन के साथ हैं। घाना ने तो कह ही दिया है कि वह चीन को न्यायोचित समझता है। वर्मा ने कोलम्बो में ही कह दिया था कि वह चीन के विरुद्ध नहीं जा सकता। हिन्देशिया स्पष्ट ही भारत के विरुद्ध है।

इन देशों से जिनका अपना कोई महत्त्व नहीं और जो चीन से भयभीत है, हम क्या आशा कर सकते हैं। परन्तु पं० नेहरू ने उनके द्वारा प्रस्तुत सुझावों को पूर्णतया स्वीकार कर लिया, जिन्हें चीन क्रियात्मक रूप में रद्द कर चुका है। परन्तु हमारे प्रधान मन्त्री न जाने किस प्रतीक्षा में बैठे हैं? कुछ वर्ष पूर्व की बात है, नदियों के पानी के विषय में भारत और पाक में झगड़ा था। विश्व बैंक को मध्यस्थ बनाया गया। उसने एक पंचाट दिया, जिसके अन्तर्गत सिंध, जेहलम और चिनाव पाकिस्तान को मिल गए और रावी, व्यास और सतलुज भारत को। रावी नदी का कुछ पानी भी पाकिस्तान को दिया गया था। भारत ने यह पंचाट स्वीकार कर लिया, परन्तु पाकिस्तान ने इसे रद्द कर दिया, जिसका यह परिणाम हुआ कि पाकिस्तान को कुछ और देकर मताना पड़ा। पं० नेहरू स्वतः ८४ करोड़ रुपए का चँक लेकर रावलपिंडी गए और राष्ट्रपति अयूब के हवाले कर आये। उन्होंने समझा कि उन्हें भद्र व्यक्तियों से वास्ता पड़ा है और वह भी उनके साथ भद्रतापूर्ण व्यवहार करेंगे, परन्तु इधर पं० नेहरू ने बाघा की सीमा पार की, उधर अयूब ने कह दिया कि जब तक कश्मीर हमारे हवाले

नहीं किया जाता, भारत से हमारी मैत्री नहीं हो सकती। स्मरण रहे कि ८४ करोड़ नकद अदा किया गया था। पाकिस्तान को भारत का जो ऋण देना है, उसमें से काटा नहीं गया। समझा यह गया था कि इसके साथ नदियों के जल का विवाद समाप्त हुआ। किन्तु सं० स्वर्ण सिंह और मि० भुट्टो के मध्य जो वार्ता हुई है उसमें यह प्रश्न पुनः उठाया गया है और समाचार पत्रों की सूचना के अनुसार भारत ने युद्ध विराम रेखा पर पाक को कुछ क्षेत्र देना स्वीकार कर लिया है। जहाँ से जेहलम और चिनाव नदियाँ निकलती हैं, वह क्षेत्र उन्हें पेश किया गया है। इसके अतिरिक्त सारे का सारा पुंछ क्षेत्र उसे भेंट कर दिया गया है, किन्तु पाकिस्तान ने भारत की इस पेशकश को अस्वीकार कर दिया है, अब चीन और पाक में एक सीमांत सन्धि हो रही है। मि० भुट्टो इस सन्धि पर हस्ताक्षर करने २७ फरवरी पेकिंग जा रहे हैं। इस सन्धि के अनुसार पाकिस्तान भारत का तीन हजार वर्ग मील क्षेत्र चीन को भेंट कर रहा है। इसे हन्जा क्षेत्र कहते हैं। पाकिस्तान चीन के साथ उस क्षेत्र के विषय में सन्धि कर रहा है, जो भारत का है। 'माले मुफ्त, दिले बेहरम' भारत के विरोध पत्र की न चीन ने परवाह की है, न पाकिस्तान ने। इसके बावजूद कलकत्ता में सं० स्वर्ण सिंह मि० भुट्टो से भेंट करेंगे। भारत के स्थान पर कोई और देश होता होता तो यह वार्ता इस संधि के साथ ही समाप्त हो जाती।

अतः कहना पड़ता है कि हमारे प्रधान मन्त्री इस दुनिया के नहीं हैं। यह दुनिया तो जनरल आरिफ की है जिसने कासिम को, जिसे वह अपना पिता कहता था, गोली से उड़ा देने का आदेश दिया—न रहे बाँस न बजे बाँसुरी। कासिम के पुनः सत्तारूढ़ होने की जड़ काट दी गई। ऐसी दुनिया में हमारे प्रधान मन्त्री के लिए कहाँ स्थान है जो भद्र भी हैं, लोकतन्त्रवादी भी और शांतिवादी भी। ऐसी स्थिति में हम पाकिस्तान से वार्ता करते हुए घाटे में रहें, तो क्या आश्चर्य? वचाव यह है कि पाकिस्तान काश्मीर की घाटी से कम पर समझौता नहीं करेगा। इसके लिए हमारे प्रधान मन्त्री अभी तैयार नहीं हुए। कहीं इनमें भी पाकिस्तान की कोई चाल न हो। १९०४ में रूस और जापान में युद्ध हुआ। जापान की विजय हुई। सन्धि की शर्तों में जापान ने हरजाना इतना मांगा कि रूस दे नहीं सकता था। परन्तु इसे सबसे अन्तिम शर्त रखा।

जब रूस इस विचार से कि हरजाने की शर्त पर बात तो टूट ही जायेगी, शेष सब शर्तें मान चुका, तो जापान ने हरजाना छोड़ दिया। अर्थात् यह न हो कि काश्मीर घाटी की रट लगाते-लगाते पाकिस्तान हम से बहुत कुछ ले ले और फिर काश्मीर घाटी पर से अपना दावा समाप्त कर ले। परन्तु हमारी स्थिति में एक कठिनाई है कि हम यह सब कुछ नहीं जानते, जो सरकार जानती है। अतः हो सकता है कि हमारा सारा ही अनुमान गलत हो।



जाति निर्णय

नियमानुसार "गीता", "रामायण" मुद्रु।

जाति अन्वेषण—३६१ हिन्दू जातियों का 'विश्वकोष' पृ० सं० ४७१ संशोधित परिवर्धित संस्करण ६) सजिल्द ७) डाक १॥)।

ब्राह्मण निर्णय—३२४ ब्राह्मण जातियों का प्रसिद्ध ग्रंथ ६०० पृष्ठ सजिल्द १५) डाक व्यय २॥)।

क्षत्रिय वं । प्रदीप प्रथम भाग—अनेकों ब्राह्मण क्षत्रिय जातियों का प्रसिद्ध ग्रन्थ ३७१ पृष्ठ। ११०० क्षत्रिय वंशों की सूचीयुक्त ६) सजिल्द ७) डाक व्यय १॥)।

नौ मुस्लिम जाति निर्णय—५२० पृष्ठ अद्वितीय "शुद्धि व्यवस्था" सहित।

ईसाई यवन धर्म परिवर्तन शुद्धि—सहायक परम हिन्दू सहायक ६) सजिल्द ७) डाक व्यय १॥) लूणिया जाति निर्णय—लूणिया, लूनिया, नूनगर नमकगर आदि नाम से प्रसिद्ध जाति उद्धारक ४॥) सजिल्द ५॥) डाक व्यय १॥)।

पता :—

वर्ण व्यवस्था मण्डल (J) फुलेरा जयपुर

धुन के धनी

श्री भीमसेन सच्चर मू० पू० गवर्नर आंध्र प्रदेश

जै आठवीं कक्षा में पढ़ता था जब कि मुझे पहली बार आदरणीय स्वर्गीय म० कृष्ण जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने तब नया २ अपना प्रकाश समाचार पत्र जारी किया था। इसके पश्चात् बहुत अवसर उन के समीप रहने को मिले।

महाशय जी का जीवन एक खुली पुस्तक है, जिस को बड़ी सुगमता से पढ़ा जा सकता है। वह अब्बल और आखिर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के पुजारियों में से थे। आर्यसमाज के साथ उनका अगाध प्रेम था और आर्यसमाज की शिक्षा का प्रचार उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था और यह एक छिपी हुई बात नहीं कि उन्होंने जीवन भर आर्यसमाज की सेवा तन, मन, और धन से की।

वह अपनी धुन के पक्के और अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक प्रकार का खतरा मोल लेने को तैयार रहते थे। अपने विचारों को बड़े स्पष्ट रूप से प्रकट करते और उनके लिये बड़े से बड़ा बलिदान करते थे। अपने सिद्धान्त के लिये वह हर किसी से टक्कर ले सकते थे। वह एक निडर और बहादुर क्षत्रिय थे जिन्हें चेतावनी स्वीकार करने में आनन्द आता था।

सब से बढ़कर उनका स्थान हमारे समाज में एक पत्रकार के रूप में है। उनकी लेखनी की शक्ति का लोहा किसने नहीं माना। लेखनी में एक प्रभावशाली जादू था। जिस विषय को उठाया उसको शिखर तक पहुँचा दिया। उन

की स्मरणशक्ति कमाल की थी। और जिस ढंग से वह अपने विचार प्रस्तुत करते थे, मन सदैव यही चाहता था कि बनाने वाले के हाथों में कमाल है, उन्होंने मेरी मुख्यमंत्री पंजाब के रूप में काफी आलोचना की, किन्तु वह मुझे सदैव प्यार करते थे। जो प्यार और मान उन्होंने मुझे दिया वह मुझे भलि-भाँति याद है जब हम १९४२ में शाहपुर जेल में एक साथ थे उसको मैं कभी नहीं भूल सकता। मेरा यह सौभाग्य है कि जिस रात्रि उनका स्वर्गवास हुआ उसी रात्रि को कांस्टीट्यूशन क्लब में मुझे इनसे इतना प्रेम मिला कि वह सदैव मेरे जीवन में न भूलने वाली और साहस दिलाने वाली घटना रहेगी।

परमात्मा महाशय जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके पद-चिह्नों पर चलने वालों को साहस दें कि वे उनकी भान्ति जिस कार्य को हाथ में लें उसको साहस, बहादुरी और लग्न से पूरा करें।

सत्यार्थ प्रकाश [इतने मोटे अक्षरों में]

इस संस्करण की विशेषताएँ

- (१) श्री पण्डित भगवद्भक्त जी ने महर्षि की हस्तलिखित मूल प्रति से मिला कर इसे शोध है।
- (२) पैराग्राफों पर क्रम संख्या दे दी गई है।
- (३) प्रत्येक पृष्ठ पर विषय का उल्लेख कर दिया है।
- (४) अकारादि क्रम से प्रमाण सूची।
- (५) महर्षि का भव्य चित्र, सुन्दर कागज, बढ़िया टिकाऊ सुनहरी जिल्द।

बड़े आकार के ८२५ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १२) मात्र। इस समय विशेष छूट देकर १०) में दिया जा रहा है। डाक खर्च पृथक् कम से कम ३) अगाऊ मूल्य आना आवश्यक।

गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क दिल्ली।

फोन नं० २२२७६५



आर्योदय —



भक्त कड़ी

स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती

श्रीगुरु म० कृष्ण जी ने आजीवन आर्यसमाज की सेवा की और आर्य-समाज की सेवा करते हुए ही उनका निधन हुआ। आर्यसमाज और देश की परिस्थिति में कई उतार-चढ़ाव आए परन्तु उन्होंने कभी भी आर्यसमाज की सक्रिय सेवा से मुँह न मोड़ा। यदि वे अपना जीवन आर्यसमाज को अर्पण न करके किसी अन्य क्षेत्र में गए होते तो वहाँ न मालूम कितना अधिक चमकते। यदि वे सरकारी सर्विस में गए होते तो बड़े से बड़े पद पर आसीन होते। वे अन्त तक आर्यसमाज के बने रहे। यह उनके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। उन्हें प्रतिक्षण आर्यसमाज का ध्यान रहता था यहाँ तक कि रोग-शय्या पर पड़े हुए भी उन्हें आर्यसमाज की चिन्ता रहती थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और गुरुकुल कांगड़ी को सम्पन्न करने में उनका बहुत बड़ा हाथ था। इस कार्य को उन्होंने बड़े परिश्रम और मनोयोग से सम्पन्न किया था। वे वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपासत्री, मंत्री, उपप्रधान और प्रधान रहे। उन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का ध्यान सदैव रहा और अन्त तक रहा। वे वर्षों पर्यन्त सावंदेशिक सभा के सदस्य और अन्तरंग सदस्य रहे।

श्री महाशय जी सफल पत्रकार थे। सर्व प्रथम उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंग्रेजी साप्ताहिक 'आर्य पत्रिका' का योग्यता पूर्वक सम्पादन किया। तत्पश्चात् 'प्रकाश' 'प्रताप' और 'वीर अर्जुन' पत्र निकाले जिनके माध्यम से

उन्होंने आर्यसमाज और देश की उल्लेखनीय सेवा की। वे सिद्ध-हस्त लेखक थे। शत्रु-मित्र सभी उनकी लेखनी का लोहा मानते थे। उनके लेख बड़े भाव से पढ़े जाते थे। जिस विषय पर लिखते थे, उसका सजीव चित्र खींच देते थे। भले ही उनमें कोई विरुद्ध या भिन्न मत रखता होता था किन्तु उनके लेख की प्रशंसा वह भी अवश्य करता था। वे वक्ता भी बहुत अच्छे थे। उनके पत्रों की लिपि उर्दू रहती थी परन्तु भाषा प्रायः हिन्दी ही रहती थी। इस प्रकार पंजाब में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में भी उनका बड़ा हाथ रहा।

देश के मुख्यतः पंजाब के सार्वजनिक जीवन में भी उन्हें उच्च स्थान प्राप्त रहा। उसके निर्माण में उनका विशेष योग रहा। यदि यह कह दिया जाये तो अत्युक्ति न होगी।

वे हैदराबाद के धर्मयुद्ध के छटे अधिनायक थे। इस युद्ध को सफल बनाने में दिया गया उनका योग भुलाया न जा सकेगा। इसी भाँति पंजाब के हिन्दी आन्दोलन को उन्होंने अमित प्रगति प्रदान की थी।

वे आर्यसमाज की पुरानी और नई पीढ़ी के मध्य एक भव्य कड़ी थे। वस्तुतः आर्यसमाज उन जैसे यशस्वी नेता के अभाव को अनुभव करता रहेगा। ●

छप गई !

छप गई !

नौजवान जाग

(राधेश्याम)

हमारे नौजवान जो कि एक गहरी निद्रा में सो रहे थे, इसी निद्रा का एक परिणाम निकला और वह था चीन का हमला भारतवर्ष पर, उक्त पुस्तक में हमारा अतीत का इतिहास है, जिसको पढ़ कर प्रत्येक नवयुवक का खून खोलने लग जाता है। प्रसिद्ध कवियों व शायरों की सुन्दर कविताएँ व शेर भी संकलित किये गये हैं। एक प्रति का मूल्य १० नये पैसे, सैकड़ा ६)।

मिलने का पता:—

राधेश्याम गुप्त द्वारा हरीश वुक डिपो,
बल्लभगढ़ जि० गुड़गाँवा

कलियुगी आर्य कृष्ण

स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती संसत्सदस्य

उन्हीं विचार से महाशय कृष्ण इस युग के कलियुगी कृष्ण थे। जैसे श्रीकृष्ण जी ने आजीवन पाँडवों का साथ दिया एवमेव महाशय जी ने भी हिन्दुओं विशेषतया आर्यसमाज का पुनः समर्थन किया। मैं महाशय जी को यूँ तो बड़ी देर से जानता था, परन्तु हैदराबाद सत्याग्रह औरंगाबाद जेल में महाशय जी का ५०० आदमियों का जत्था गया तब मेरे जत्थे के ७२ व्यक्तियों ने महाशय जी का स्वागत किया। यद्यपि महाशय जी के लिये जेल अधिकारियों की ओर से विशेष सुविधा का प्रबन्ध किया गया था, किन्तु महाशय जी ने उस पुरानी सराय में हम सत्याग्रहियों के साथ जीरा-शीरा कोठड़ियों में नीचे भूमि पर शयन करना ही पसन्द किया। आपने लिए बाहर से पर्याप्त फल-फूल आते थे। लेकिन आप सत्याग्रहियों को बाँट दिया करते थे। और अपने सारे जत्थे की व्यवस्था महाशय जी ने मुझे सौंप दी, किन्तु निजामशाही के जेल अधिकारियों को यह अच्छा न लगा। और उन्होंने मुझको मेरे जत्थे के सत्याग्रहियों के साथ महाशय जी से पृथक् कर दिया अर्थात् हैदराबाद कारागार में भेज दिया। इसके पश्चात् महाशय जी के साथ मेरा विशेष सम्पर्क पंजाब हिन्दी-सत्याग्रह में हुआ। यद्यपि आप उन दिनों विशेष रोगी थे परन्तु आप के ऊपर रोग का कोई प्रभाव न था, आप सदा शान्त एवं गम्भीर मुद्रा में रहते थे। मेरे साथ तो महाशय जी का अति प्रेम था। मेरे विचार से महाशय जी जहाँ राजनैतिक नेता थे, वहाँ हिन्दुओं के, विशेषतया आर्यसमाज के भीष्मपितामह थे। आपके

हृदय में आर्यसमाज की ज्वाला सदा जाज्वल्यमान रहती थी । और विरोधियों के वाणों से कभी भयभीत न होते थे । “निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु” महात्मा भर्तृहरि के इस श्लोक को सदा चरितार्थ करते थे । यद्यपि आरम्भिक दिनों में महाशय जी मेरे अनशन के विरोधी थे । और वह भी इसीलिए कहते थे कि आप आर्यसमाज की विभूति हैं, हम आपको अपने हाथ से खो न बैठें । किन्तु महाशय जी एवं उनके सुपुत्रों ने अनशन के दिनों में जो सहयोग दिया है, मैं सदा उसका कृतज्ञ रहूँगा ।

महाशय जी जहाँ लेखनी के धनी थे, वहाँ स्पष्टवादिता के भी स्वामी थे । मैं आशा करूँगा कि आपके दोनों सुपुत्र आर्यसमाज में महाशय जी के अभाव को दूर करने का पूर्ण प्रयत्न करेंगे ॥

श्री गोलवलकर की ओर से महाशय कृष्ण के निधन पर शोक सन्देश

आदरणीय महाशय कृष्ण जी के सम्बन्ध में मैं क्या लिखूँ ? एक निर्भीक, धर्ममान्य, राष्ट्र मान्य, मार्गदर्शक को हम लोग खो बैठे हैं, यद्यपि विगत कुछ मास से वे अत्यधिक अस्वस्थ रहे । मुझे समाचार मिला था कि उनकी स्थिति में सुधार हो रहा है । श्री महा शिवरात्रि के ऋषि बोधोत्सव के पुण्य पर्व पर वह कार्यक्रम में जा सके इससे बड़ी आशा उत्पन्न हुई थी कि संकट टल गया है । और अभी बहुत काल तक उनका मार्ग दर्शन जनता की प्राप्ति होता रहेगा । परन्तु वह आशा तीन दिनों में ही नष्ट हो गई ।

उनके कर्मयोगी पवित्र जीवन के फलस्वरूप उन्हें पारलौकिक कल्याण प्राप्त होगा ही । उनके आदर्शों का परिपालन कर उनकी कीर्ति के अनुरूप बनने का भाग्य श्री भगवान् की कृपा से हम सब को प्राप्त हो इस हेतु हमें दृढ़ निश्चय से स्वकर्त्तव्य में जुटे रहने की आवश्यक मनः शान्ति, धृति, शक्ति प्राप्त हो, शोक निवृत्ति होकर विवेक से हृदय संतुलन हो इस आशीर्वाद की प्राप्ति हेतु परम कृपालु श्री परमात्मा के पास विनम्र प्रार्थना करता हूँ ।

मीठी याद

स्वामी सत्यमुनि सरस्वती

बजौराबाद जिला गुजराँ वाला के सम्पन्न कुलोत्पन्न युवक ने जब इस्लामिया कालेज और फोरमेन क्रिश्चियन कालेज लाहौर से बी० ए० की परीक्षा पास की। उस समय उमंगों से भरे इस व्यक्ति के स्वभाव में महत्वाकांक्षा, मनचलापन और लोक-सेवा की भावना तो थी ही—जिसका उत्कर्ष स्वर्गीय महात्मा मुंशीराम जी, धर्मवीर पण्डित लेखराम जी, मुनिवर पं० गुरुदत्त जी व तत्कालीन अन्य आर्य नेताओं के सत्संग में आ कर होता ही चला गया। वीर प्रकृति इस युवक ने आर्य-समाज की विचार-धारा के प्रचार के लिए उर्दू भाषा में साप्ताहिक प्रकाश पत्र का सम्पादन आरम्भ किया। यह पत्र चिरकाल तक आर्य-समाज की गतिविधियों और पञ्जाब व उत्तर भारत में आर्य धर्म का प्रचारक बना रहा। साप्ताहिक 'प्रकाश' को आरम्भ किये हुये अभी कुछ वर्ष ही बीते थे कि भविष्य में उत्तर भारत के एक महान् व निर्भीक पत्रकार बनने वाले उदीयमान जीवन-युक्त इस युवक ने दैनिक पत्र 'प्रताप' का प्रकाशन आरम्भ कर दिया। यह पत्र दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करते हुए एक क्रान्तिकारी संस्था का रूप धारण करने लगा। इसकी ग्राहक संख्या तीव्र गति से बढ़ने लगी। कतिपय वर्षों में ही इनके ओजस्वी व अप्रतिहत शौर्यपूर्ण लेख दीनों, अनाथों, विधवाओं और पीड़ित वर्गों के रक्षक और अत्याचारियों, देशद्रोहियों के लिए वज्रपात का काम करने लगे। पञ्जाब के बड़े-बड़े विद्वान् व नेता उनको एक उच्चकोटि का पत्रकार मानने लगे।

आर्य-समाज के इतिहास में उन्होंने अपने लेखों द्वारा महान् कार्य करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, परोपकारिणी सभा अजमेर, श्रद्धानन्द ट्रस्ट व अन्य अनेक ट्रस्टों व संस्थाओं को सबल, प्रभावशाली तथा सम्पन्न बनाने में भारी सहयोग दिया। गुरुकुल काँगड़ी, कन्या महाविद्यालय जालन्धर, कन्या महाविद्यालय देहरादून की उन्नति के लिए वे अपने अखबार में कालम के कालम लिखते रहे, गुरुकुल काँगड़ी के उत्सवों पर "गुरुकुल चलो" इस शीर्षक के लेख सहस्रों नर नारियों को चेतना व प्रेरणा प्रदान करते थे। गुरुकुल के पश्चात् आर्य धर्म के बढ़ते हुए कार्यक्षेत्र के कारण विद्वानों व प्रचारकों की बढ़ती हुई माँग के फलस्वरूप उन्होंने लाहौर में उपदेशक महाविद्यालय की स्थापना व सफलता के लिए अथक प्रयास किया। इस शुभ कार्य के लिए उनको पूज्य स्वा० सत्यानन्द जी, श्री स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी, श्री स्वा० वेदानन्द जी जैसे विद्वानों का स्वर्णिम सहयोग प्राप्त हुआ। विभाजन के पश्चात् इसी महाविद्यालय की स्थापना उन्होंने वैदिक साधन आश्रम यमुना नगर में श्री स्वा० आत्मानन्द जी महाराज की छत्रछाया में की।

आर्यसमाज के संकट व आन्दोलन

पटियाला केश, धौलपुर आर्यसमाज मन्दिर को छीनने की घटना, शुद्धि व दलितोद्धार के कार्यों, रंगीला रसूल के विरुद्ध मुसलमानों के रोष, क्रोध और वर्चस्व पूर्ण महा० राजपाल जी के बलिदान तथा स्वा० श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान के समय जबकि आर्यसमाज पर घोर संकट के काले बादल छाए हुए थे तो आर्य-जनता को इनके जादू भरे हुए लेखों ने अभिनव शक्ति और उत्साह प्रदान करते हुए आगे बढ़ने की ही प्रेरणा दी। हैदराबाद में निजामी हुकूमत के अत्याचारों के समय त्रस्त आर्य जनता की दयनीय अवस्था के उद्धार के लिये अनेक शिष्ट मण्डल हैदराबाद में जाते रहे। उस समय उनका कोई लाभ न अनुभव करते हुए महाशय जी ने अखबार 'प्रताप' के द्वारा निरन्तर प्रचार से सत्याग्रह का क्षेत्र तैयार किया। साढ़े सात सौ सत्याग्रहियों का जत्था और सार्वदेशिक सभा के लिए ७५ हजार रुपया नकद भेंट करते हुए जब गुलबर्गा व औरंगाबाद की जेलों में पहुँचा तो उत्तर भारत व दक्षिण भारत में एक

कोलाहल सा मच गया । वस्तुतः उस समय प्रताप और मिलाप दोनों पत्रों ने आर्यसमाज के आन्दोलन को सफल बनाने में बहुत भारी सहयोग दिया ।

सच्चर फार्मुला रिजनल स्कीम की आड़ में जब पंजाब के अन्दर कांग्रेस हकूमत ने मा० तारासिंह व अकालियों की सीनाजोरी व घांघली के सामने दबते हुए निख स्टेट की साम्प्रदायिक स्थापना का समारम्भ कर दिया तो उस समय आर्यसमाज व कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता कायरता व स्वार्थवशात् चुप साधे हुए थे किन्तु महाशय जी की उग्र लेखनी ने उस समय भी हिन्दु जाति व आर्य जनता को अभिनव उत्साह व संगठन की प्रेरणा प्रदान करते हुए इस अत्याचार के विरुद्ध खड़े होने के लिए तैयार किया । इस महान धर्मयुद्ध में हरयाणा, जालन्धर डिवीजन व पटियाला डिवीजन, जम्मू कश्मीर स्टेट, दिल्ली, उत्तर प्रदेश व भारत भर के आर्यों ने जो आत्म त्याग और शक्ति व वीरता का परिचय दिया, वह आर्यसमाज के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा ।

मातृभू भारत के स्वातन्त्र्य संग्राम में महाशय जी और इनके पत्र प्रताप ने भारी जागृति व प्रगति का कार्य किया । महाशय जी के दोनों पुत्र इस संग्राम के दिनों षड्यन्त्र केशों में गिरफ्तार हुए । लाहौर जेल के सींखचों के पीछे व शाही किले की दीवारों तथा काल कोठरियों में कई बार कैद भुगतते रहे । महाशय जी स्वयं भी कई बार आजादी के आन्दोलनों में कारागार में बन्द रहे । अखबार प्रताप की कई बार जमानत जप्त हुई, प्रकाशन बन्द हुआ, परन्तु उनके जोश व निर्भीकता में कुछ भी कमी न आई । देश आर्यसमाज और हिन्दु जाति उनको सेवाओं और एहसानों को भूल न सकेगी और नहीं भूलना चाहिये । ऐसे वीर-प्रकृति नेता देश और जातियों को सौभाग्य से ही प्राप्त होते हैं । जो किसी भी प्रलोभन के वशीभूत न होकर अपनी जमीर की आवाज निश्चिंक होकर बलन्द करते हैं ।

आर्य नेता



श्री सूर्यभानु एम० ए०
(उप कुलपति कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय)



मृत्यु के विकराल ग्रास से संसार का कोई भी मानव नहीं बच पाता । एक दिन ऐसा अवश्य आता है, जबकि संसार के घोर कर्मों में जूझते हुआ मानव भी अनुभव करने लगता है कि मृत्यु से जूझने की उसमें हिम्मत नहीं रही, राजा हो या रंक, बाल हो या वृद्ध, उसे मृत्यु को स्वीकार करना ही पड़ता है । यही जीवन की अन्तिम सीमा है ।

महाशय कृष्ण जी जैसे संघर्षों में पले और संघर्षों में ही बड़े हुए, महान् व्यक्ति के जीवन को जब इस प्रकार से एक दम एक ही झटके में अन्त होते हुए देखते हैं तो कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो इस मृत्यु से भयभीत न हो उठे ? महात्मा बुद्ध, स्वामी दयानन्द, तथा संसार के बड़े से बड़े व्यक्ति भी मृत्यु के इसी दृश्य को देखकर तो उस पर विजय प्राप्त करने की दिशा में ब्रती हुए थे । मृत्यु ने ही उन्हें अमरता का संकेत और संदेश दिया था । किन्तु अन्त में उनके इस भौतिक शरीर को भी पंच तत्त्वों में समा जाना ही पड़ा । उनके भक्तों को धैर्य और सन्तोष का आश्रय लेने पर विवश होने के अतिरिक्त अन्य कुछ मार्ग ही न मिला ।

आज से ८३ वर्ष पूर्व वजीरावाद (पाकिस्तान) में जन्म लेने वाले महाशय जी का शरीर आज हमारे मध्य नहीं है किन्तु उनके द्वारा किए गए कर्मों का इतिहास आर्य-जगत और विशेष रूप से पंजाब के जन सामान्य से भुलाया न जा सकेगा । वास्तव में हमें उनके निधन से काफी क्षति पहुँची है ।

भारत के बच्चे बच्चे को उन पर है सचमुच गर्व आज ।

उनका साया उठ जाने से शोकाकुल सारा समाज ॥

अपनी बाल्यावस्था से ही महाशय जी ने, देव दयानन्द के जिस पुनीत कार्य को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था, वह उसे करने में सदा ही तल्लीन रहे । हमने उन्हें कभी भी आर्य समाज से विरक्त होते नहीं देखा । किन्हीं परिस्थितियों के कारण यदि कभी उन्हें आर्य समाज के सत्संग या अन्य कार्यों से पृथक् हो जाने पर विवश भी होना ही पड़ा है तो उनकी आन्तरिक पीड़ा के दर्शन उसी समय हुए हैं । महाशय जी की आत्मा में आर्य समाज रम चुका था । उन्हें मृत्यु पर्यन्त कोई समाज सेवा से पृथक् न कर सका । आर्य समाज के लिए उनके हृदय में अगाध प्रेम था । वह नवयुवकों को सदा ही आर्य समाज में लाने के लिए तड़पते रहते थे । उनकी बातचीत में सदा ही आर्य समाज के भविष्य की चर्चा रहती थी !

आर्य समाज के हितों की रक्षार्थ वह एक और तो सरकार से झूझते रहते थे तथा दूसरी ओर उन हितों की रक्षार्थ अपना सर्वस्व न्यौछावर करने पर भी तैयार रहते थे । हैदराबाद सत्याग्रह के वह सर्वाधिकारी बन कर जेल गए । सिन्ध में सत्यार्थप्रकाश पर लगे प्रतिबन्ध को हटवाने के लिए इन्होंने रात-दिन एक कर दिया ।

महाशय जी की लेखनी में एक जादू की शक्ति थी । उनके पाठक उन्हें कभी भी भुला न सकेंगे । एक ओर तो पढ़ने वाले मुग्ध हो उठते थे दूसरी ओर सरकार या उसके सम्बद्ध व्यक्ति भी भयभीत हो उठते थे । द्वितीय महा-युद्ध में भी महाशय जी ने अपनी लेखनी से सत्य का प्रकाशन जारी रखा तो उस समय के गृह सचिव श्री मैकडानल्ड और तत्कालीन मुख्य मन्त्री सर सिकन्दर ह्याट खाँ की भी नींद हराम हो गई थी । यह महाशय जी की निर्भीकता और आर्योचित सत्य व्यवहार की अडिगता ही थी कि सरकार को स्वतः ही बिना शर्त "प्रताप" से सेन्सरशिप हटाने पर विवश हो जाना पड़ा ।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् भी यह सरकार के कार्यों की खुले शब्दों में आलोचना करते रहे हैं । उन्होंने किसी परिस्थिति में भी अपनी लेखनी पर

प्रतिबन्ध स्वीकार नहीं किया। वह कहा करते थे कि देव दयानन्द का शिष्य कभी भी असत्य से समझौता नहीं कर सकता। और यह सत्य है कि उन्होंने आयु पर्यन्त कभी भी असत्य को स्वीकार नहीं किया।

स्वर्गीय महाशय जी ने पत्रकारिता के इतिहास में तो अपना नाम अमर कर लिया है। उनकी लेखनी ने पत्रकारिता को एक नई शैली व नई दिशा प्रदान की है। हिन्दी के किसी कवि की उनके सम्बन्ध में निम्न उक्ति कितनी सार्थक प्रतीत होती है—

कृष्ण कृष्ण के ही स्वरूप, उनका हर काम निराला था।

युग के अनुरूप सुदर्शन तज, हाथों में कलम सम्भाला था ॥

ऐसे पत्रकार शिरोमणि, दुःखियों व पीड़ितों के सहायक, निर्भीक नेता, दयानन्द के सच्चे अनुयायी श्री महाशय कृष्ण जी की स्मृति सदा ही जन मन पर अमिट बनी रहेगी। ऐसे अमूल्य नेता के निधन से मुझे और मेरे साथियों को काफी दुःख हुआ है। मैं अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

सुशिक्षित आर्य कन्या की आवश्यकता !

एक आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् के सुपुत्र जिसकी आयु २४ वर्ष की है। शरीर से हृष्ट-पुष्ट सुन्दर सुशील तथा गौर वर्ण है। एम० काम् में पढ़ रहा है। प्रयाग सा० सम्मेलन की साहित्य रत्न आदि परीक्षाएँ भी पास है। शिक्षा ग्रहण के साथ-साथ सर्विस भी करता है। वेतन २००) मासिक है, के लिए सुन्दर स्वस्थ, सुशील, सुशिक्षित और गृह कार्य में दश श्रद्धालु आर्य परिवार की कन्या की आवश्यकता है। वर के पिता पंजाब निवासी तथा भाटिया ब्रादरी से सम्बन्ध रखते हैं। किन्तु विवाह सम्बन्ध बिना जाति का विचार कर पूर्ण गुण क्रमानुसार रहेगा। पत्र व्यवहार का पता:—

आदर्श साहित्य निकेतन,
केसरगंज, अजमेर।

जैसा उन्हें देखा

(श्री पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, आचार्य गुरुकुल कांगड़ी)

श्री महाशय जी के निधन से देश की और विशेषकर आर्य-समाज की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति नहीं हो सकती। और इस क्षेत्र में वे अपने प्रकार के अकेले ही व्यक्ति थे। उन्होंने लगभग साठ वर्ष आर्य-समाज की जो अनथक सेवा की है, वह आर्य समाज के इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगी। आर्य समाज की यह सेवा उन्होंने विभिन्न रूपों में की है। वे जब स्कूल और कालेज के विद्यार्थी ही थे तभी उन पर ऋषि दयानन्द की शिक्षाओं का रंग चढ़ गया था और आर्य समाज की ओर पूर्ण रूप से आकृष्ट हो गये थे। और तभी से उन्होंने आर्य समाज की गतिविधियों में रुचि लेना प्रारम्भ कर दिया था। तभी से वे आर्यसमाजों के उत्सवों में भाग लिया करते थे तथा आर्य कुमार सभाओं का नेतृत्व किया करते थे। ग्रेजुएट हो जाने पर उन्होंने अपना जीवन आर्य समाज के अर्पण कर देने का निश्चय कर दिया। सबसे पहिले उन्होंने अंग्रेजी की “आर्य पत्रिका” नामक पत्रिका का सम्पादन कार्य किया। कई वर्ष तक बड़ी सफलता से वे इस कार्य को करते रहे। फिर उन्होंने “प्रकाश” नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। प्रारम्भ में इस पत्र का सभी प्रकार का कार्य वे अपने हाथों में किया करते थे। संपादन भी वे ही करते थे, मैनेजर का कार्य भी स्वयं ही करते थे तथा पत्रों पर पता लिखने और टिकट लगाने और फिर डाकवाने तक डालने का कार्य भी स्वयं ही किया करते थे। इस निष्ठा से उन्होंने “प्रकाश” को पाला-पोसा और बढ़ाया था। इस पत्र के द्वारा उन्होंने आर्य समाज की अद्वितीय सेवा की थी। जिस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने

गुरुकुल खोलने का आन्दोलन चलाया और फिर गुरुकुल की स्थापना की उस समय स्वामी जी का कुछ प्रभावशाली लोगों की ओर से बहुत घोर विरोध किया गया। महाशय जी अपने ओजस्वी लेखों द्वारा उस समय स्वामी जी का बलशाली समर्थन करते रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यों और गति-विधियों को भी उनके “प्रकाश” द्वारा जोरदार समर्थन मिलता था। प्रकाश के लेख सभी जगह बड़े चाव से पढ़े जाते थे। महाशय जी के विरोधी तक उनके लेखों को पढ़ने से नहीं चूकते थे। उन दिनों श्री आचार्य रामदेव जी और श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी आदि आर्य समाज के उदीयमान प्रतिष्ठित नेता महाशय जी के अन्तर्गत मित्र और सहयोगी थे। महाशय जी के “प्रकाश” में इन लोगों के भी लेख निकलते रहते थे। अपने समय में “प्रकाश” इतना प्रभावशाली पत्र था कि महाशय जी और उनके साथियों का नाम ही “प्रकाश पार्टी” पड़ गया था।

आगे चलकर महाशय जी ने दैनिक “प्रताप” निकालना प्रारम्भ किया। और बहुत असें तक “प्रकाश और “प्रताप” दोनों साथ-साथ प्रकाशित होते रहे। “प्रकाश” आर्य-समाज का प्रहरी था और “प्रताप” देश की स्वतंत्रता, राष्ट्रियता और विशुद्ध राजनीति का पक्ष पोषण करता था। शीघ्र ही “प्रताप” पंजाब का सबसे अधिक लोकप्रिय पत्र बन गया। महाशय जी की लिखने की शैली निराली थी, वह बड़ी सरल, रोचक, हृदयग्राही, युक्तिसंगत, मर्मभेदी और बलशाली होती थी। लोग उनके लेखों को पढ़ने के लिए लालायित रहते थे। उनके लेखों का प्रभाव सरकार पर भी होता था। महाशय जी एक निर्भीक लेखक थे। वे अपने विचारों को निर्भयता पूर्वक प्रकट करने में कभी नहीं हिचकते थे। ब्रिटिशकाल में उनके निर्भीक विचारों के कारण प्रताप को अनेक बार भारी-भारी जमानतें जप्त करवानी पड़ी थीं। पर महाशय जी कभी भी अपनी निर्भीक सम्मति प्रकट करने से रुके नहीं। जिस प्रकार विदेशी शासन के समय वे सरकार की, उनकी राय में, गलत बातों की जोरदार आलोचना किया करते थे, उसी प्रकार स्वराज्य मिल जाने के पश्चात् स्वतंत्र भारत की अपनी सरकार की गलत नीतियों की भी वे उसी प्रकार निर्भय होकर आलोचना करते थे। उनकी इन आलोचनाओं से सरकार अप्रसन्न

भी रहती थी, फिर भी महाशय जी ने जिसे ठीक समझा उसे लिखने में कभी भय नहीं दिखाया ।

महाशय जी ने अपने जीवन के प्रभात में ही आर्य-समाज को अपना कार्य क्षेत्र बनाने का निश्चय कर लिया था और इस क्षेत्र में उतरने के पश्चात् थोड़े दिनों में ही उन्होंने वहाँ अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया था । वे शीघ्र ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा के सदस्य चुने जाने लगे थे और फिर शीघ्र ही प्रतिनिधि सभा के मंत्री भी बना दिये गये । इस पद पर वे न जाने कितने वर्षों तक सफलतापूर्वक कार्य करते रहे । उनका नाम ही “मंत्री जी” पड़ गया था । फिर आगे चल कर वे प्रतिनिधि सभा के अनेक वर्षों तक प्रधान भी रहे । उन्हें प्रतिनिधि सभा के इतिहास का, उनकी पारिपाटियों और प्रथाओं तथा पुराने प्रस्तावों का जितना ज्ञान था उतना और किसी व्यक्ति को नहीं था और उनका सभा की सारी पृष्ठ भूमि का यह विस्तृत ज्ञान भविष्य के लिए कोई निश्चय करने में बड़ा सहायक हुआ करता था । आर्य समाज के पुराने कार्यकर्त्ताओं के सम्बन्ध में भी उन्हें बहुत अधिक जानकारी थी । वे आर्य समाज के मूर्तिमान इतिहास थे । आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का जो वर्तमान दृढ़ तथा शक्तिशाली संगठन है यह मुख्य रूप से उन्हीं का बनाया हुआ है । पंजाब की आर्यसमाजों में यह जो प्रथा है कि प्रत्येक आर्य समाज एक पुष्कल धनराशि प्रतिवर्ष नियम के रूप में सभा को देती है । यह परिपाटी उन्हीं की चलाई हुई है । इस परिपाटी के कारण पंजाब प्रतिनिधि सभा अपने कार्य बहुत ही सुचारु रूप से चलाने में समर्थ रही है । सभा के द्वारा चलाए जाने वाले वैदिक धर्म के प्रचार कार्य को भी उन्होंने खूब सगठित किया था । पंजाब का विभाजन होने से पूर्व पंजाब प्रतिनिधि सभा और उसकी शाखा दलितोद्धार में मिला कर लगभग सौ उपदेशक और प्रचारक कार्य कर रहे थे । महाशय जी स्वयं भी आर्य समाज के प्रचार-कार्य में एक उपदेशक की तरह ही नियमित रूप से सहयोग दिया करते थे । वे अपनी वृद्धावस्था के पिछले कुछ वर्षों को छोड़कर प्रायः सदा ही प्रति सप्ताह शनि और रविवार को किसी न किसी आर्य समाज के उत्सव में व्याख्यान देने के लिए जाया करते थे । जहाँ महाशय जी की लेखनी में बल और चमत्कार था वहाँ उनकी वाणी भी बड़ी ओजस्वी

और प्रभावशाली थी। उनके व्याख्यान भी बड़े चाव से सुने जाते थे। और वक्तृत्व कला की दृष्टि से वे बहुत उत्कृष्ट वक्ता माने जाते थे।

लेखनी और वाणी से तो उन्होंने आर्य समाज की अद्वितीय सेवा की ही, घन से भी उन्होंने आर्य समाज की भारी सेवा की है। वे प्रायः प्रति सप्ताह आर्य-समाजों के उत्सवों पर जाते रहते थे। लाहौर से पेशावर, दिल्ली, अजमेर, बम्बई, कलकत्ता आदि दूर स्थानों तक भी उन्हें प्रायः जाना पड़ता था और सारा व्यय स्वयं अपने पास से ही किया करते थे। इतना ही नहीं बहुत बार तो समाजों को अपनी ओर से कुछ दान भी दे आया करते थे। प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा, विद्या सभा, गुरुकुल के शिक्षा पटल आदि तथा अन्य अनेक सभा समितियों के अधिवेशनों में भी उन्हें प्रायः जाना ही पड़ता था परन्तु वे ऐसे अवसरों पर कभी भी किराया आदि नहीं लिया करते थे। यह उनकी साधारण नीति थी। वे अनेक सार्वजनिक संस्थाओं परोपकारिणी, विश्वेश्वरानन्द शोध संस्थान आदि के आजीवन सदस्य रहे परन्तु ऐसी संस्थाओं से उन्होंने कभी भी मार्ग व्यय आदि कुछ नहीं लिया। इसके अतिरिक्त आर्य समाज की विभिन्न संस्थाओं को वे पुष्कल राशि दान में देते रहते थे।

जब कभी आर्य समाज पर किसी प्रकार का संकट आता तो वे आर्य समाज के गौरव की रक्षा के लिए कुछ भी उठा नहीं रखते थे। उनका शरीर प्रायः रुग्ण रहता था फिर भी ऐसे संकट के समय पर वे आगे बढ़कर जनता को मार्ग प्रदर्शन करते थे। १९३६ के हैदराबाद सत्याग्रह में तथा १९५७ के पंजाब के हिन्दी सत्याग्रह में वे आर्य समाज के गौरव की रक्षा के लिए जेल में गये और सर्वाधिकारी के रूप में आन्दोलन का नेतृत्व किया। इस प्रकार जीवन भर वे आर्य समाज और हिन्दू जाति की जो अनथक सेवा करते रहे और इन कार्यों में अपना सर्वस्व अर्पण करते रहे इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि वे अपने जीवन काल में पंजाब आर्य तथा हिन्दू जनता के शिरोमणि नेता बन गये थे।

श्री महाशय जी के व्यक्तिगत जीवन के भी कुछ ऐसे उज्ज्वल पहलू हैं। जो सदा स्मरणीय रहेंगे। खाने पीने में वे बहुत भारी संयम से काम लेते थे।

जिह्वा के वश में होकर कभी भी वदपरहेजी नहीं करते थे। वे कई रोगों से पीड़ित थे। फिर भी वे इस संयम के बल से लगभग ८४ वर्ष की दीर्घ और क्रियाशील आयु बिता सके। वे हृद दर्जों के स्पष्टभाषी व्यक्ति थे। सभा समितियों में और निजी बातचीत में भी वे सम्बद्ध व्यक्ति को बिना लाग लपेट के साफ-साफ बात कहने में कभी नहीं हिचकते थे। उनकी स्पष्ट-भाषिता के कारण कई बार अनेक लोग उनसे अप्रसन्न भी हो जाते थे। उन्होंने ऐसी बातों की कभी भी परवाह नहीं की थी।

यहाँ मेरे साथ व्यक्तिगत रूप में बीती एक घटना का उल्लेख कर देना भी अनुचित न होगा। इस घटना से महाशय जी के जीवन के एक पहलू पर विशेष प्रकाश पड़ता है। मैं उन दिनों दयानन्द उपदेशक विद्यालय का आचार्य था और वे उपदेशक विद्यालय के अधिष्ठाता थे तथा प्रतिनिधि सभा के मंत्री भी थे। कुछ समय से सभा में दो दल बन गये थे जो एक दूसरे को चुनाव में पराजित करने का प्रयत्न करते रहते थे। उस समय मेरी सहानुभूति महाशय जी के विरोधी दल के साथ थी। महाशय जी के दल ने विरोधी दल को कई वर्षों के पश्चात् पराजित किया था। मेरी सहानुभूति दूसरे दल के साथ होने के कारण महाशय जी के दल के कुछ व्यक्तियों ने उन पर बहुत दबाव डाला कि मुझे उपदेशक विद्यालय के आचार्य पद से हटाकर सभा के प्रचार विभाग में परिवर्तित कर दिया जाए। महाशय जी ने अन्तरंग सभा में ऐसा प्रस्ताव उपस्थित किया और वह सभा में स्वीकृत हो गया। इस पर मैंने त्याग पत्र दे दिया। सभा के उप प्रधान श्री पं० विश्वम्भर नाथ जी को सभा मंत्री श्री महाशय जी की यह बात पसन्द नहीं थी। उन्होंने पहिले तो मुझे समझाया कि मैं त्याग पत्र वापस ले लूँ और प्रचार विभाग में कार्य करने लगूँ। पर मैंने उनकी बात स्वीकार नहीं की। इस पर उन्होंने महाशय जी के उक्त प्रस्ताव के विरोध में उपप्रधान पद से त्याग पत्र दे दिया। घटना के विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है। परिणाम यह हुआ कि महाशय जी ने मेरे संबन्ध का उक्त प्रस्ताव वापिस करवा दिया और मैं यथापूर्व उक्त विद्यालय का आचार्य बना रहा। महाशय जी उपदेशक विद्यालय के अधिष्ठाता भी थे। मैं मन में सोचता था कि

महाशय जी अधिष्ठाता के रूप में मुझे पर्याप्त तंग कर सकते हैं। परन्तु मेरी यह आशंका सर्वथा निर्मूल निकली। महाशय जी मुझे पहिले की भाँति ही सब प्रकार का सहयोग देते रहे और जब मैं उपदेशक विद्यालय के कार्य से उनसे मिलता था तो बड़े प्रेम और आदर से मिलते थे, मेरी बातों को बड़े ध्यान से सुनते थे और मुझे पूर्ण सहयोग प्रदान करते थे मैंने यह अनुभव किया कि पहले वे मुझे जितना सहयोग देते थे, इस घटना के बाद वे उस से भी अधिक सहयोग देने लग पड़े हैं। यह छोटी बात नहीं थी कि महाशय जी जैसे प्रभावशाली व्यक्ति को जो उस समय सभा का मंत्री तथा एक प्रकार से सर्वे सर्वा ही था वह एक कार्यकर्ता के संबंध में अपना स्वीकृत प्रस्ताव वापस कर लें। परन्तु महाशय जी ने वैसा किया। लोग कहा करते थे कि महाशय जी बहुत रूखे व्यक्ति हैं परन्तु मेरे प्रति हुई इस घटना से मैंने उनके स्वभाव का बिल्कुल भिन्न रूप देखा। मेरे प्रति महाशय जी ने गांधी जी की अहिंसा और प्रेम की नीति का अवलम्बन किया। मुझे उनके इस व्यवहार ने उनके प्रति बहुत अधिक आकृष्ट किया और मेरे मन में उनके प्रति बहुत आदर और सम्मान के भाव उत्पन्न हो गये। मैं जब उपदेशक विद्यालय से गुरुकुल कांगड़ी में आचार्य बनकर आया था तो उस समय उपदेशक विद्यालय में हुई अपनी विदाई की सभा में मैंने महाशय जी के सहयोग का उल्लेख करते हुए इस घटना का भी उल्लेख किया था और कहा था कि महाशय जी ने अपने अहिंसा और प्रेम के वर्तव्य से मुझे जीत लिया है। इस घटना के पश्चात् मेरे और महाशय जी के संबंध सदा ही बहुत मधुर रहे।

मैं संवत् १९८५ में गुरुकुल ने वेदवाचस्पति की परीक्षा उत्तीर्ण करके सभा में कार्य करने के लिए लाहौर गया था तभी से मैं महाशय जी को निकट से देखता रहा हूँ और उनके साथ विभिन्न रूपों में कार्य करता रहा हूँ। मुझे सदा ही महाशय जी एक अपनी किस्म के निराले और विशिष्ट व्यक्ति दिखाई देते रहे हैं। जिनकी विशेषताओं का अपने समय की घटनाओं पर भारी प्रभाव पड़ता रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पर तो उनकी विशिष्टताओं, कार्यों और सेवाओं का इतना अधिक प्रभाव पड़ता रहा है कि एक प्रकार से कहा जा सकता है कि महाशय जी का जीवन बहुत वर्षों तक प्रतिनिधि सभा का

इतिहास ही था। वे एक महापुरुष थे। जब कभी भी कोई महापुरुष हमसे जुदा होता है तो दूसरे व्यक्तियों के लिए उसके स्थान की पूर्ति कर सना सभव नहीं हुआ करता। श्री महाशय कृष्ण जी के साथ भी यही बात है। वे अपने प्रकार के निराले महापुरुष थे और उनके चले जाने से जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी किसी प्रकार पूर्ति नहीं हो सकती। वे आर्य समज के इतिहास में सदा स्मरणीय रहेंगे। और हम सब उनके अनुयायियों के लिए उनकी स्मृति को सही अर्थों में कायम और ताजा रखने का उपाय यह है कि हम आर्य समाज और ऋषि-दयानन्द के प्रति वैसी दृढ़ निष्ठा और भक्ति रखें जैसी कि महाशय जी में थी। और जैसे महाशय जी आर्य समाज के लिए ही जिये और मरे उसी प्रकार करने का संकल्प हम भी ले लें।

पंजाब के वित्त मन्त्रो श्री गोपीचन्द जी “भार्गव” का सन्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुख-पत्र “आर्योदय” का महाशय कृष्ण की पुण्य-स्मृति में विशेषांक प्रकाशित हो रहा है यह जानकर हर्ष हुआ।

महाशय जी एक सिद्धांत-निष्ठ व्यक्ति थे। वे अपने सिद्धांतों के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने के लिये सदैव तत्पर रहे। इन्होंने अपनी निर्भीक लेखनी द्वारा राष्ट्र-भक्ति का प्रचार किया। इस प्रकार एक पत्रकार, समाज सुधारक और देश-भक्त के रूप में इन्होंने देश, विशेषतः पंजाब की जो सेवा की है, वह इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों से लिखी जायगी।

तीसरी पीढ़ी

श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय एम. ए.

आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता महाशय कृष्ण जी के देहावसान पर आर्य समाज की दूसरी पीढ़ी की समाप्ति होती है और २४ फरवरी १९६३ की रात्रि को आर्य समाज की तीसरी पीढ़ी का आरम्भ सम्भूतता चाहिये ।

महात्मा हंसराज, ला० लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज की पहली पीढ़ी के पुरुष थे । जब इन महानुभावों ने कार्य आरम्भ किया तब महाशय कृष्ण का जन्म हुआ होगा । उस युग की परिस्थितियाँ भी भिन्न थीं और कार्य-कर्त्ताओं की भावनार्यें भी भिन्न थीं, कार्य प्रारम्भ हुआ विद्यालयों से । अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये । पिछड़ी हुई जाति के लिये यह था भी आवश्यक । हमारे युवकों के मस्तिष्क निर्माण का कार्य मंकाले और उसके अनुयायियों के हाथ में था । स्कूल या तो ईसाई थे या सरकारी अर्थात् अर्द्ध-ईसाई । दयानन्द कालिजों का देश ने स्वागत किया और इन संस्थाओं को पर्याप्त न सम्भूत कर गुरुकुलों का आविर्भाव हुआ । स्वभावतः नर्म दल और गर्म दल में मतभेद हुआ । आर्य समाज रूपी गंगा की दो धारार्यें हो गईं । इन के प्रवाह ने दो भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की भूमि की सिंचाई की । और पहली अर्द्ध-शताब्दी का इतिहास प्रमाणित करता है कि दोनों क्षेत्रों को सफलता प्राप्त हुई । देश का आशीर्वाद और स्वागत दोनों दलों का प्राप्त हुआ । और देश की शिक्षा सम्बन्धी भावी नीति पर दोनों का प्रभाव पड़ा ।

यह पीढ़ी स्वामी श्रद्धानन्द जी की मृत्यु पर समाप्त होती है। और इसकी समाप्ति के साथ इसकी विशेषतायें भी समाप्त हो जाती हैं। जो धारार्य विरोधी दिशाओं में वह रही थीं उनका झुकाव फिर एक दूसरे की ओर हो जाता है। शत्रुता सहयोग में बदल जाती है। १९०० ई० के लगभग के सद्धर्म प्रचारक और आर्य गजट की फायलें उठाकर देखिये। आर्य समाज अनारकली और आर्य समाज बच्छवाली लाहौर के वार्षिकोत्सवों के व्याख्यानों को सुनिये। लाला लाजपतराय और पं० रामभजदत्त की वक्तृताओं पर गंभीर दृष्टि डालिये। उन में आप को विशेष युग की विशेषताओं की झांकी मिलेगी। आजकल के युवक को क्षोभ और आश्चर्य अवश्य होगा। मेरा और महाशय कृष्ण का बाल्यकाल था। मेरी आयु ८२ वर्ष की है। महाशय कृष्ण भी ८२ वर्ष के थे। अन्तर महीनों या दिनों का ही होगा। मेरी भावनाओं में भी उसी युग की विशेषतायें थीं। आज वह भावनायें तो नहीं हैं। उनकी स्मृति मात्र है।

जिस प्रकार दोपहर के बाद आधी रात अकस्मात् नहीं आ जाती। इसी प्रकार पीढ़ियों के बदलने में भी एक विशेष क्रम होता है। महाशय कृष्ण जी का कार्य पहली पीढ़ी के प्रभाव में आरम्भ हुआ। परन्तु उन्होंने और उनकी दूसरी पीढ़ी वाले साथियों ने अपना नया मार्ग बनाया। संस्थायें रहीं परन्तु उनका रंग बदल गया। महात्मा नारायण स्वामी जी गुरुकुल वृन्दावन के कुलपति थे और डी० ए० बी० कालेज कानपुर की कमेटी के सदस्य। उनका एक व्याख्यान गुरुदत्त भवन लाहौर में होता था और साथ ही एक व्याख्यान अनारकली के उत्सव पर। प्रयाग में गंगा और यमुना का जो दृश्य संगम पर दिखाई देता है, वही दृश्य मुझे लाहौर में आज से बीस वर्ष पूर्व दिखाई दिया।

१९४७ का एक वृत्त पाठकों के विचार के लिये रखता हूँ। महात्मा खुशालचन्द (श्री आनन्द स्वामी जी) लाहौर से भाग कर आये। बाबा मिलखासिंह की कोठी पर ठहरे। मैं सार्वदेशिक सभा का मंत्री था। मैं उनसे मिलने गया। महात्मा जो बड़े उद्वेजित और उत्तेजित थे। वे कहने लगे, “उपाध्याय जी, पंजाब में हम सब कुछ खो चुके। करोड़ों की सम्पत्ति चली गई। अब रह क्या गया है। क्यों न दो दल एक हो जायें ? यह भेद-भाव कब तक जारी रहेगा।”

मैं वहाँ से उठकर महाशय कृष्ण के पास गया। वे भी लाहीर से भागकर आये थे। ला० नारायण दत्त के पास ठहरे थे। मैंने वह सब बात कह दी। महाशय जी ने कुछ सोचा। ऐसा प्रतीत होता था कि पुराने व्रण तो अच्छे हो गये परन्तु चिन्ह शेष हैं। सत्याग्रह आदि आन्दोलनों से स्पष्ट था कि भेदभाव नहीं रहे। केवल कुछ कड़वी स्मृतियाँ हैं। जिनका कड़वापन नष्ट हो चुका है। महाशय जी बोले, “तुम यत्न करो।” प्रोत्साहन को पाकर मैंने बातचीत आरम्भ की। परन्तु जिस प्रकार त्रिवेणी के संगम पर दो मिली हुई धारायें भी अलग-अलग दृष्टिगोचर होती हैं। न श्वेत गंगा है न नीली यमुना। अपिन्तु मिश्रित ‘गंगा जमनी’ धारा। इसी प्रकार शुभकामनायें तो मिलीं। परन्तु सफलता नहीं मिली।

मैं अपने सामने इस समय एक तीसरी पीढ़ी देख रहा हूँ। इसकी भावनायें भिन्न हैं। गंगा और यमुना का जल प्रयाग से पूर्व की ओर बह कर एक हो चुका है। आजकल के युवक का ध्यान १८६० के हंसराज और मुंशीराम से आगे बढ़कर सीधा दयानन्दोन्मुख होने लगा है। हमारी संस्थाओं की रूप-रेखा बदल गई है। सार्वदेशिक सभा में दोनों दलों का प्रतिनिधित्व है। पंजाब के बाहर तो दो दलों का नाम भी नहीं।

अतः मेरा सुझाव है कि महाशय कृष्ण की स्मृति में अवशिष्ट भेदभाव को मिटा देना चाहिये। प्रयाग की त्रिवेणी को वाराणसी की गंगा में परिवर्तित कर देना चाहिये। जालंधर, अम्बाला आदि नगरों में जहाँ दो समाजें हैं उनको गुरुकुल सैक्शन और कालेज सैक्शन का नाम उड़ाकर मुहल्लों के भौगोलिक नाम देने चाहियें। सार्वदेशिक सभा में दो दलों का प्रतिनिधित्व होने के स्थान में पंजाब मात्र का संगठित प्रतिनिधित्व होना चाहिये।

मन् तो शुदं तो मन् शुदी । मन् दिल शुदं तो जां शुदी ।

ता कस् न गोमद् वाद जी मन् दीगरं तो दीगरां ।

मैंने संकेत कर दिया है। नेतागण मार्ग खोज लें। जहाँ चाह है। वहाँ रह है।

श्रीकृष्ण सप्तक

“प्रणव” शास्त्री ए. १. ५.

आर्य जाति के गुण गौरव-गाथा के गायक
 आर्य जाति के भूषण पूषण वीर-विनायक
 आर्य जाति के तिलक महोदय प्रण के पालक
 आर्य जाति के नीति-रोति रथ के संचालक
 आर्य जाति-भव सिन्धु के तुम पतवार प्रवीण थे ।
 आर्य जाति-इतिहास के एक पृष्ठ प्राचीन थे ॥ १ ॥
 तुम पाञ्चाली पुण्य क्षेत्र के रवि उजियाले
 पत्रकारिता के तडाग में किरण प्रसारे
 अनय और अज्ञान-निशा के पटल-विनाशक
 पावन पुण्य प्रकाश धारणा-अटल विचारक
 अमल कमल से नित्य ही अग्र लेख खिलते रहे ।
 भावुक जन अलिवृन्द से आनन्दी मिलते रहे ॥ २ ॥
 साहस का शुचि स्रोत हृदय में था उमड़ाया
 पत्थर सा ‘उसमानो’ दिल तुमने दहलाया
 ‘भाग्यनगर’ का भाग्य कभी था सुप्त जगाया
 आर्य जाति-जय-केतु गगन में लहराया
 तुम सत्याग्रह वीण के मञ्जुल विस्तृत तार थे ।
 ‘आर्योदय’ कल्याण के राग सदा भूतकार थे ॥ ३ ॥

जान रहा इतिहास तुम्हारी ज्योति कहानी
 प्रसरित प्रबल 'प्रताप' चमत्कृत है अभिमानी
 गुँथी हुई है अमर विचारों की मधु माला
 पिला चुके हो वीर आर्य को प्रेमी प्याला
 तुमसे लेकर प्रेरणा 'कर्मवीर-गुणगायनम्,'
 'अर्जुन' के दो प्रण रहे 'न दैन्यं न पलायनम्, ॥ ४ ॥
 गुरुकुल गङ्गा धारा के तुम उच्च समर्थक
 आर्य प्रतिनिधि सभा-संहिता के आदर्शक
 आर्य राष्ट्र के उज्ज्वल हे साकार सुदर्पण
 'दयानन्द' की 'श्रद्धा' के सानन्द समर्पण
 हे वाग्मी व्रतवीर, तब दुख दायक यह मौन है ।
 शोकित या सन्तप्त नहि कहो आर्य जन कौन है ॥ ५ ॥
 नहीं मिलेगा कभी तुम्हारा भौतिक दर्शन
 नहीं मिलेगा कभी तुम्हारा मार्ग प्रदर्शन—
 किन्तु तुम्हारी भाव पूर्ण दो धवल धरोहर
 आश्वासन है यही कि रक्षित मान्य मनोहर
 वैचारिक रथ-प्रगति के प्रगतिशील जो केन्द्र हैं ।
 पगे सदा आर्यत्त्व में श्री वीरेन्द्र नरेन्द्र हैं ॥ ६ ॥
 आर्य जाति के सबल विचक्षण हे सेनानी
 सङ्कट में रथ छोड़ चले हे ज्ञानी ध्यानी
 मान्य महाशय कृष्ण-ज्ञान की मञ्जुल माला
 युग युगान्त तक दे धरणी को नव उजियाला
 विश्व वाटिका में रहे प्रसरित सुरभि ललाम है ।
 प्रिय स्वीकृत हो देश का श्रद्धा युक्त प्रणाम है ॥ ७ ॥



मधुर स्मृतियाँ

श्री रामनाथ जी

उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा 'जाव'

जाव में आर्य समाज की उन्नति और सभा के निर्माण में स्व० महाशय कृष्ण का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उनके सम्बन्ध में अनेक संस्मरण मेरे मस्तिष्क में हैं। प्रस्तुत लेख में श्रद्धापूर्वक कुछ स्मृतियाँ भेंट कर रहा हूँ।

१९५७ में आन्दोलन के सम्बन्ध में एक दैनिक पत्र में किसी वंठक के सम्बन्ध में संवाददाता ने उपस्थित महानुभावों में मेरा नाम भी छाप दिया। महाशय जी को इस समाचार से बड़ी चिन्ता हुई तथा संवाददाता को बहुत नाराज हुए। उन्हें पता था कि इस प्रकार के समाचार से मुझे क्या हानि हो सकती है। उन्होंने मेरे साथ बात तक नहीं की परन्तु जब मुझे सारी गाथा का पता लगा तो मेरा मस्तिष्क उनकी दूरदर्शिता के प्रति झुक गया। इसी प्रकार वह सब आर्य भाइयों का ध्यान रखते थे।

महाशय जी को मैं, सिद्धान्ती जी तथा शास्त्री जी गुरुकुल भुज्जर, जिसका आचार्य भगवान् देव जी संचालन करते हैं, नवम्बर १९६० में दिखाने ले गये। १—१½ घण्टे में सब विभाग देखे तथा स्वामी आत्मानन्द जी, जो बहुत बीमार थे उनके भी दर्शन किये। सब कुछ देख कर महाशय जी बड़े प्रसन्न हुए तथा आचार्य जी को चुपके से कुछ दान भी दे आये। दो दिन बाद बड़े प्रशंसात्मक शब्दों में आचार्य जी तथा उनके गुरुकुल के बारे में प्रताप तथा वीर अर्जुन में सम्पादकीय लेख लिखा। जिसे पढ़कर मुझे आश्चर्य हुआ कि जिन बातों

कों मैं अनेक बार जाकर भी न जान सका, उन्होंने कौन सी दिव्य दृष्टि से उक्त गुरुकुल के सब विभागों तथा गतिविधियों को एक घण्टे में देख लिया तथा भांप लिया ।

२५ दिसम्बर १९६० को हम उन्हें स्वर्गीय सुमेरसिंह जी के ग्राम नयाबांस दिखाने ले गये । ४ फर्लांग पहले ही लोग प्रतीक्षा कर रहे थे । उनके साथ में, ला० हंस राज जी एम० ए०, प्रो० रामसिंह एम०, ए० तथा श्री देसराज जी उप-महापौर दिल्ली भी थे । लोगों को पता था कि महाशय जी तथा अन्य आर्य भाई आ रहे हैं । कार हलकी हुई तो महाशय जी के नारे लगने लगे । लोग हार लिए खड़े थे । ऊँचा सुनता था पर नारों की आवाज तो आ रही थी । वह हरयाणा प्रान्त में थे जिसे वह किसी कारण उस समय दूसरा प्रान्त समझ रहे थे । कहने लगे कि ला० हंसराज जी के नारे लग रहे हैं । जब वह उतरे और और सारी जनता ने उनके गले में हार डाले, नारे लगाये और जलूस निकाल कर नयाबांस के समाज मन्दिर में ले गये तब उन्हें पता लगा कि वह हरयाणा प्रान्त में भी कितने प्रिय हैं । कुछ दिन तो उन्हें यह सब स्वप्न ही दीखता रहा । उनकी लोकप्रियता का उस इलाके में उन्हें तब ज्ञान हुआ । वह उन लोगों के साथ आगे से भी अधिक स्नेह करने लग पड़े थे । उसी दिन नयाबांस से रोहतक होकर स्वामी श्रद्धानन्द दिवस की सार्वजनिक सभा में दिल्ली आकर भाग लिया । परन्तु ६½ बजे तक चाय कहीं न मिली । बैठक के बाद में, वैद्य मूल चन्द तथा वैद्य रामलाल उनके साथ कार में बैठ गये । मुझे मेरे घर उतारने लगे तो मैंने चाय के लिए प्रार्थना की, उन्होंने तुरन्त स्वीकार कर ली । मेरी धर्मपत्नी बड़ी प्रसन्न हुई । चाय का प्रबन्ध हो गया । सीभाग्य से उसी समय मेरी धर्मपत्नी के भाई ला० सन्त राम वर्मा जो पंजाब राज्य में डिब्रूगढ़ में कमिश्नर थे आ गये । वह बड़े चरित्रवान अधिकारियों में गिने जाते थे । महाशय जी ने उनकी प्रतिष्ठा सुन रखी थी तथा उनसे मिल कर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई । मुझे बाद में कहने लगे कि आपको इन के उच्च चरित्र का कारण पता है । मैंने कारण बताया तो कहने लगे कि इन्होंने आर्य स्कूल तथा आर्य कालिज में शिक्षा पाई है, इसीलिए इनका चरित्र ऊँचा है । आर्य समाज की जिस को पुट चढ़ जावेगी वह ऊँचा ही चढ़ता जावेगा । क्या मान और गर्व था उन्हें आर्य समाज तथा उसकी शिक्षा का ।

गत वर्ष सख्त बीमार होते हुए भी वह आर्य जगत के समाचार जानने तथा अपने विचार देने में उत्पुङ्ग रहते थे। पानीपत अधिवेशन से कुछ दिन पूर्व मैं उन्हें देखने गया परन्तु वह अपने कमरे में थे। मैं श्री नरेन्द्र जी की तरफ बैठक की ओर बढ़ने वाला था कि महाशय जी ने आवाज दे कर तथा इशारा करके मुझे बुला लिया। ३—४ मिनट बात हुई होगी कि नरेन्द्र जी दौड़े हुए आये तथा मुझे इशारे से ले गये। उन्होंने बताया कि सायं ६-३० बजे के बाद अधिक बातें करने से इनको नींद नहीं आती। मुझे २-३ दिन के बाद किसी ने बताया कि महाशय जी को उस रात भी नींद नहीं आई अपितु कष्ट कुछ बढ़ ही गया। मुझे बड़ा खेद हुआ। परन्तु ऐसा मरीज न मिलेगा जिसे आर्य समाज जान से भी प्यारा था।

महाशय जी का अधिक बातें करना उनके लिए हानिकारक था। इसीलिए नरेन्द्र जी उनको रोकते रहते थे। नर्स भी रखी हुई थी। वह भी रोकती थी। परन्तु मरीज भी कोई साधारण नहीं था। मोटे लोहे के जंजीर तोड़ कर आर्य समाज की बातें करने वाला मरीज था। नरेन्द्र जी रात्रि को होने वाले कष्ट की विन्ता के कारण परेशान भी हो जाते थे। प्रयत्न करने पर भी वह मरीज पर काबू न पा सकते तो निराश हो कर बैठ जाते। एक दिन सायं काल जब देखा कि महाशय जी बातें करने से नहीं हटते तो उन्होंने श्री प्रकाशवीर जी से हँसी में कहा कि अब एक डांट लगाता हूँ। बड़ी हिम्मत करके गये और कान में कहने लगे कि डाक्टर जी ने कहा है कि अधिक बातें न किया करो। सुना नहीं तो दीवारा पूछा। उन्होंने फिर वही कहा, तो कहने लगे कौन सा डाक्टर कहता है। नरेन्द्र जी ने कहा जो आप का इलाज करता है। तो कहने लगे कि वह तो स्वयं ही मेरे साथ बहुत बातें करता है। जिस तरीके से यह शब्द कहे इस से सब हँस पड़े तथा उनको पुनः बातों से रोकने का साहस न पड़ा।

महाशय जी का जीवन तो स्वयं ही एक आर्यसमाज का ग्रन्थ है। उसको लिखने के लिए बड़ा समय तथा स्थान चाहिए। कितने निडर व्यक्ति थे कि अपने परम मित्रों के दोष उनके मुँह पर कह देते थे। परन्तु उनका कोई गुस्सा न करता था। आज ६ कीलिंग रोड नई दिल्ली में वह रौनक नहीं रही जो उस महान व्यक्ति के समय थी तथा जिधर सायंकाल प्रत्येक आर्य भाई ही खिंच जाता था। काश कि वह कुछ वर्ष और आर्य समाज को दे सकते तो कितना लाभ होता।

श्रद्धाञ्जलि !

श्री पं० पसंदेन विद्यामार्तण्ड

१. महान् ख्यातो नेता, सततमभवत् स्तम्भ इह यः,
समांजस्यार्याणां, सकलजनसन्तापहरणः ।
अजस्रं जागार, ध्रुव-सबल-संकल्पसहितः
सुधीः श्रीमान् कृष्णः, भुवि प्रसृतकीर्तिः समभवत् ॥
२. प्रकाशं प्रतापं तथैवार्जुनं यः
सुसम्पाद्य कीर्तिं सितामत्र लेभे ।
महौजस्विनेता विभीर्लेखकाग्र्यः
सुधीः कृष्णसंज्ञो न कस्येह वन्द्यः ? ॥
३. यस्य प्रभावोऽत्यद्भुतो वाग् लेखनीबलतोऽभवत्,
यो राजनीतिविंशारदो विभयः प्रथितसम्पादकः ।
यश्चार्यजातिहितं सदा, हृदये स्वकीयेऽधारयत्
श्रीकृष्णसंज्ञोऽसौ बुधो नहि कस्य ननु वन्द्यो भवेत् ? ॥
४. न मुहम्मदीयानां पुरो विननाम यो भुवि जातुचित् ।
नहि शासकानां दुर्नयं, सेहे कदाचिच्छुद्धधोः ।
सत्यां स्वकीयां सम्मतिं, प्रकटीचकार सदाऽभयः
श्री कृष्ण संज्ञोऽसौ बुधो नहि कस्य ननु वन्द्यो भवेत् ॥

आर्य जगत के मान्य कर्मठ नेता, परोपकारिणी सभा के प्रधान, पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेक वर्षों तक मन्त्री और प्रधान, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भू० पू० कुलपति, 'प्रकाश', 'वीर प्रताप', 'वीर अर्जुन' इत्यादि पत्रों के सम्पादक और संचालक के रूप में सर्वत्र सुप्रसिद्ध स्वर्गीय श्री महाशय कृष्ण जी के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि मैंने ऊपर के स्वनिर्मित श्लोकों के द्वारा समर्पित की है। इन श्लोकों का भावार्थ निम्न है—

१. जो आर्य जगत् के महान् सुप्रसिद्ध नेता और आर्य समाज के सब लोगों के सन्ताप को हरने वाले स्तम्भ के समान थे, जो अपने अटल और प्रबल संकल्पों के साथ सदा कर्तव्य पालन में जागरूक रहते थे। ऐसे उत्तम बुद्धिमान् महाशय कृष्ण जी की कीर्ति सब जगह फैली हुई थी।

२. जिन्होंने प्रकाश, वीर प्रताप और वीर अर्जुन नामक पत्रों का उत्तमता से सम्पादन करके स्वच्छ कीर्ति को प्राप्त किया था, जो महान् नेता और ओजस्वी, निर्भय लेखकों के शिरोमणि थे, ऐसे उत्तम बुद्धिमान् महाशय कृष्ण जी किसके लिये वन्दनीय न थे ?

३. वाणी और लेखनी के बल के कारण जिनका अत्यन्त अद्भुत प्रभाव था, जो राजनीति में निपुण, निर्भय और प्रसिद्ध सम्पादक थे और जो आर्य जाति के हित को अपने हृदय में सदा धारण करते थे, ऐसे महाशय कृष्ण जी नामक बुद्धिमान् किसके लिए वन्दनीय न हों ?

४. जो मुसलमानों के आगे भी कभी नहीं झुके और जिन शुद्ध बुद्धिमान् महानुभाव ने शासकों की बुरी नीति को कभी सहन नहीं किया, जो निर्भयता से अपनी सच्ची सम्मति को सदा प्रकट करते रहे, ऐसे महाशय कृष्ण जी किस के लिये वन्दनीय न हों ?



निर्भय पत्रकार महाशय कृष्ण

आराधक

भारतीय सभ्यता के भक्त, आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता महाशय कृष्ण के अचानक निधन से देश की भारी क्षति हो गयी। वे अपने जीवन के ७० वर्षों से अधिक समय बहुत सी बाधाओं के आने के बाद भी अपने इस मार्ग से विचलित नहीं हुए। महाशय कृष्ण पंजाब के ही नहीं सारे देश के मूर्धन्य पत्रकारों में से एक थे, जिन्होंने अपनी लेखनी से बड़े-बड़े आन्दोलन चलाये और अपनी कलम के बल से यह दिखा दिया कि बड़ी-बड़ी शक्तियों के मुकाबले में कलम की शक्ति कितनी मजबूत और प्रभावशाली होती है।

आर्य समाज के स्तम्भ

महाशय कृष्ण ने आर्यसमाज की उन्नति के लिए बड़ा प्रयत्न किया था और जब भी आर्यसमाज पर संकट आया, तब उन्होंने उसका वीरता पूर्वक सामना किया। जिन दिनों पंजाब के सरी लाला लाजपतराय को देश निकाला दिया गया उस समय महाशय कृष्ण ने अपने पत्र में जो उस समय प्रकाश के नाम से प्रकाशित होता था, एक लेखमाला शुरू की, यह लेखमाला सरकार के विरोध में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं और देश के नागरिकों को सजग करने के लिए लिखी गयी थी। इस लेखमाला को उन्होंने "यह तुम्हारी परीक्षा का समय" इस नाम से प्रकाशित किया था। उस समय महाशय जी के शुभचिन्तकों ने यह कहा था कि सरकार आपको बहुत दण्ड इस प्रकार की लेखमाला लिखने पर देगी। वे यह सुनकर भयभीत नहीं हुए, बल्कि उन्होंने साहस के साथ कहा कि मैं इस काम

के लिये बड़ी से बड़ी सजा भुगतने को तैयार हूँ। जिन दिनों १९०६ में पटियाला सरकार ने आर्यसमाज के नेताओं पर राजद्रोह का मामला चलाया और उसमें स्वर्गीय लाला ज्वालाप्रसाद से लेकर छोटे-बड़े कार्यकर्त्ताओं पर सत्यार्थप्रकाश रखने पर भी आरोप लगाया। उस समय महाशय कृष्ण ने आर्यसमाज पर लगाये इस राजद्रोह के विरुद्ध बड़ा भारी काम किया था। एक बार नहीं अनेक बार ऐसे अवसर आये जब उन्होंने हानि-लाभ की चिन्ता किये बिना आर्यसमाज की सेवा के लिये संघर्ष के बीच काम किया। हैदराबाद सत्याग्रह में सत्याग्रही दल के नेता की हैसियत से महाशय कृष्ण को जेल भी जाना पड़ा। भारत के विभाजन के बाद आर्यसमाज के कई आन्दोलनों का नेतृत्व किया। पंजाब के हिन्दी आन्दोलनों के संचालन में भी उनका पूरा हाथ रहा। एक प्रकार से वे आर्यसमाज के साधारण कार्यकर्त्ता नहीं जबरदस्त स्तम्भ थे। पंजाब में आर्यसमाज की गहरी नींव जमाने में उनका भारी हाथ रहा। सार्व-देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख पदाधिकारियों में भी उनका स्थान रहा।

क्रियाशील पुरुष

महाशय कृष्ण बड़े क्रियाशाली पुरुष थे। अपने अन्तिम समय तक वे कभी आराम से नहीं बैठे। अपनी ८२ वर्ष की अवस्था में भी वे लगातार उसी प्रकार काम करते रहे जिस प्रकार कोई युवक कार्य करना हो। जिस दिन उनका निधन हुआ उस दिन भी उन्होंने सवेरे अपने पत्र के लिए सम्पादकीय लिखा और उसी दिन शाम को नई दिल्ली में एक समारोह में भी भाग लिया। इस तरह उनका निधन भी काम करते-करते हुआ। यद्यपि पिछले कुछ दिनों से महाशय जी का स्वास्थ्य खराब चल रहा था किन्तु स्वास्थ्य सुधरने के बाद वे इतनी जल्दी हमारे बीच से उठ जायेंगे यह आशा नहीं थी।

आलोचक

महाशय कृष्ण जबरदस्त कटु आलोचक थे। जिस विषय पर लिखते तो उसे इतना दिलचस्प बना देते जिसे पढ़ने के लिये पाठक सदैव उत्सुक रहते थे, जब किसी का विरोध करते तो उसके दोष पाताल तक खोज लाते और जब कभी

उन्हें किसी की प्रशंसा में कुछ लिखना होता तो उसमें भी उसके गुणों की सभी खूबियाँ विद्यमान होतीं। उन्होंने अपनी कलम के जोर से पंजाब एवं दूसरे स्थानों में भारी सम्मान प्राप्त किया था। सबसे पहले उन्होंने प्रकाश नाम से एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया था जिसके वे सम्पादक भी थे। एक साप्ताहिक पत्र का सम्पादक अपने प्रान्त का नेता बन जाय यह कम गौरव की बात नहीं। उन्होंने सम्पादक पद पर बैठ कर जो सम्मान प्राप्त किया, वह बहुत कम व्यक्ति प्राप्त कर पाते हैं।

‘प्रकाश’ का प्रकाशन—

महाशय कृष्ण ने सबसे पहले प्रकाश साप्ताहिक का प्रकाशन आरम्भ किया था। यह पत्र लाहौर से १९०४ में प्रकाशित किया था, उस समय उनके पास बहुत बड़े साधन नहीं थे। केवल कलम का कौशल ही उनके पास था। अपने कुछ मित्रों के सहयोग से उन्होंने इस पत्र को शुरू किया था। उस समय उनके पास न कोई दूसरा सहायक था और न लेखक ही था। वहाँ की स्थिति इतनी विचित्र थी कि किसी चपरासी को रखने के लिए भी साधन नहीं था। यह सब होने पर भी महाशय कृष्ण की प्रवाहमय कुशल लेखनी से लिखा गया प्रकाश आर्य समाज का ही नहीं पंजाब का एक प्रमुख पत्र बन गया और महाशय कृष्ण पंजाबी के प्रसिद्ध आर्य नेताओं में गिने जाने लगे। जिस समय यह पत्र प्रकाशित किया गया था उस समय के आर्य समाज में दो दल थे। उनमें युवक दल में स्वामी श्रद्धानन्द के गुरुकुल शिक्षा आन्दोलन के समर्थन में उसका विरोध करने वाले वर्ग का भारी विरोध किया गया था। महाशय कृष्ण उस युवक दल के नेता थे। उन्होंने प्रकाश साप्ताहिक नाम से एक उर्दू पत्र प्रकाशित किया जिसके द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द के गुरुकुल आन्दोलन को बल मिला। यह पत्र यद्यपि उर्दू में प्रकाशित होता था किन्तु इसकी भाषा अधिकतर हिन्दी होती थी। महाशय कृष्ण और पंजाब के अन्य प्रमुख नेताओं ने उर्दू पत्रों में अपनी हिन्दी की प्रगति की तथा उसके सम्मान दिए जाने के लिए भारी आन्दोलन किया था। इस पत्र ने आर्य समाज एवं दूसरे राजनैतिक आन्दोलनों में भी भारी सहयोग दिया था।

महाशय कृष्ण जब युवक थे तब ही से वे आर्य समाज के काम में दिलचस्पी लेने लगे थे। लगभग ६५ वर्ष पूर्व महाशय कृष्ण आर० के० वजीरा-वादी नाम से आर्य पत्रिका तथा दूसरे अन्य पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखा करते थे। उन दिनों महाशय कृष्ण का नाम राधाकृष्ण था एक दिवंगत आर्य नेता के शब्दों में उनकी युवा अवस्था का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि इकहरे वदन के युवक की आँखों में विशेष प्रकार की तीक्ष्णता देखी जो सूक्ष्म विश्लेषण करने की शक्ति प्रकट करती थी।

अजीब पहली

महाशय कृष्ण जीवन भर एक अजीब पहली रहे। बहुत से व्यक्ति उन्हें समझ भी नहीं पाये। उनके आलोचक यही कहते सुने गये कि इनका स्वभाव विचित्र है। जब भी ये किसी की आलोचना करते हैं तो उस पर पूरी तरह से प्रहार करते हैं। और जब किसी के गुणों का वर्णन करना होता है तो वे उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। तो उसमें भी अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन रहता है। इस प्रकार उनके सम्बन्ध में बहुत सी धारणा बना ली जाती है।

महाशय कृष्ण के सम्बन्ध में उनके दिवंगत मित्र स्वर्गीय आचार्य रामदेव ने महाशय कृष्ण के अनुपम व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए विशाल भारत (कलकत्ता) में अपने संस्मरण में लिखा था कि महाशय कृष्ण एक आदर्श मित्र हैं। उर्दू में कबीला-पर्वर एक शब्द है। जिसका है—परिवार को पालने वाला। यदि मेरे कथन को ठीक अर्थ में मान लिया जाय तो मैं कहूँगा कि महाशय कृष्ण “मित्र-पर्वर” हैं। वास्तव में महाशय कृष्ण में किसी को आकर्षित कर लेने की शक्तियाँ बहुत अधिक मात्रा में थीं। जो उनसे कम परिचित होते हैं वे उनसे भड़क उठते हैं। परन्तु जिनका सम्बन्ध कुछ घनिष्ठ हो जाता है वे सदा के लिए महाशय कृष्ण से बंध से जाते थे। अपनी इस शक्ति के कारण महाशय कृष्ण बहुत शीघ्र एक भारी और प्रभावशाली मित्र मंडली के केन्द्र बन गये और इस सौरग्रह के चारों ओर ग्रह अग्रहों की सृष्टि होने लगी। यह मित्र मण्डली आज पंजाब के आर्यसमाज के जीवन में बहुत अधिक महत्त्व धारण किए हुए है।

श्री स्वर्गीय आचार्य रामदेव ने उनकी मित्र मंडली के जिन सदस्यों की चर्चा की थी, उन में पंजाब के प्रसिद्ध आर्य नेता तथा राजनैतिक कार्यकर्ता भी सम्मिलित थे; जिन के नाम इस प्रकार हैं :—पं० विश्वम्भर नाथ जी, स्वर्गीय डा० सत्यपाल आदि प्रमुख थे। उनकी मित्र मंडली में बहुत सदस्य थे। जब कभी वे लाहौर जाते तो महाशय कृष्ण के अतिथि रहते और कोई ऐसा अवसर नहीं आया जब महाशय कृष्ण की अतिथ्य सेवा से उनके लिये किसी भक्त को कष्ट उठाना पड़ा हो।

पंजाब के आर्य समाज पर बहुत समय तक उनका और उनके मित्रों का ही अधिकार रहा। इस तरह से उनके मित्र उनसे जीवन भर कभी अलग नहीं हुए। बहुत बार यदि स्वर्गीय विश्वम्भरनाथ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष चुने गये तो मंत्री महाशय कृष्ण और गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य पद पर स्वर्गीय आचार्य रामदेव रहे। उस समय एक प्रकार से आर्य समाज की वागडोर प्रकाश पार्टी के हाथ में रही। प्रकाश पार्टी में बहुत मतभेद होने पर भी जब-जब मतभेद पैदा हुआ तब-तब महाशय कृष्ण ने बड़े उत्तम ढंग से आपस में मतभेद मिटा दिया।

महाशय जी ने १९१६ के आस-पास दैनिक प्रताप का प्रकाशन शुरू किया। उस से उन्होंने आर्य समाज की सेवा के साथ-साथ पंजाब में भारत की स्वाधीनता के लिए आन्दोलन किया। इसके लिए इन्हें जेल भी जाना पड़ा। बाद में विभाजन के बाद दिल्ली में जाने पर प्रताप और वीर अर्जुन दोनों का प्रकाशन किया। भारत विभाजन के कारण यह कांग्रेस की नीति से संतुष्ट नहीं थे। इस कारण कांग्रेस के और उसकी नीति के आलोचक रहे। अपने सम्पूर्ण जीवन में उन्होंने देश के विभिन्न क्षेत्रों में भारी प्रगति की है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

लौह पुरुष

श्री रामगोपाल जी (शालवाले)

महाशय जी का सबसे बड़ा गुण उनकी आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द जी के प्रति अटूट आस्था थी। वे हर समय आर्यसमाज के लिये ही सोचा करते थे, और उनके लेखों द्वारा आर्य जगत् को प्रतिदिन नई प्रेरणा मिलती थी। हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान का घोष लगाने वालों में महाशय जी सबसे अग्रिम पंक्ति में थे। स्वतन्त्रता संग्राम में जेल यात्रा की यातनाएँ, तथा प्रताप के प्रति ब्रिटिश सरकार की कठोर नीति के कारण जो क्षति व कष्ट उन्हें सहने पड़े वे अद्वितीय थे। हिन्दू जाति की पतित अवस्था पर चिन्तित रहने वालों में देवता स्वरूप भाई परमानन्द के पश्चात् म० कृष्ण जी का ही नाम लिया जा सकता है।

हैदराबाद सत्याग्रह एवं पंजाब के हिन्दी आन्दोलन के समय जो सक्रिय भाग और सफल नेतृत्व म० कृष्ण जी ने किया वह आर्य समाज में सदैव स्मृति का विषय बना रहेगा। उनके उदात्त विचारों का प्रसार एवं प्रचार करने के लिये आर्य-जनों को अमर हुतात्मा पं० लेखराम की उप वसीयत को सदा के लिये स्मरण रखना चाहिये कि आर्य समाज से लेखनी का कार्य बन्द न हो।

म० कृष्ण जी इस विषय में सौभाग्यशाली थे कि उन्होंने जीवन की हर घड़ी में आर्यसमाज की सेवा को जारी रखा, और अन्तिम श्वास तक पूर्ण श्रद्धा के साथ ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों की पूर्ति में लगे रहे।

आर्यसमाज के भीष्म पितामह

श्री सत्यदेव विद्यालंकार

आर्यसमाज के संघर्षमय आदिकाल की याद कराने वाली एक और महान् विभूति शिवरात्रि पर्व के समारोह पर उठ गई। वे आर्यसमाज तथा हिन्दू जाति के लिये जिये, अहोरात्र उन्हीं के लिये जूझते रहे और उनके महान् जीवन का शानदार अन्त भी उन्हीं के लिये चिन्तन करते-करते हुआ। शस्त्राग्राह्य पर मृत्यु से संघर्ष करने वाले भीष्म पितामह की तरह वे भी महीनों बीमारी के विस्तर पर पड़े हुए मृत्यु के साथ घोर संघर्ष करते रहे। डाक्टरों ने उनके चिन्ताजनक स्वास्थ्य के कारण उनके साथ लोगों के मिलने-जुलने पर पाबन्दी लगा दी थी और चर्चा वार्ता करने से उनको रोक दिया था। आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं के साथ मिलने-जुलने और आर्यसमाज के सम्बन्ध में चर्चा वार्ता करने के बारे में उन्होंने डाक्टरों के इस आदेश का पालन नहीं। एक बार कुछ आर्य सज्जनों से आर्यसमाज के सम्बन्ध में लम्बी बातचीत करने पर उनके डाक्टर ने उनको रोक दिया और लम्बी बात-चीत करने से सावधान किया। वे एकाएक अपने डाक्टर पर झुंझला पड़े। उससे बोले कि "मैं आर्यसमाज के ही बारे में चर्चा कर रहा हूँ। किसी अन्य विषय पर बातचीत नहीं हो रही है। मेरे अन्तिम दिनों में मेरी जीभ को आर्यसमाज के लिए तो बन्द न करो।" वे अस्वस्थ रहते हुए भी २२ फरवरी शुक्रवार को कोटला-फिरोज-शाह में शिवरात्रि पर बोधोत्सव के निमित्त हुए आर्य मेले में शामिल हुए और आर्य नेताओं से आपस के मत-भेद भुला कर आर्यसमाज को शक्ति-सम्पन्न

वनाने के लिये मार्मिक अपील की। २४ फरवरी रविवार को राष्ट्रपति की उपस्थिति में सम्पन्न हुए समारोह में भी वे सम्मिलित हुए। वहाँ से लौटते कि कुछ ही घंटे बाद उनका दुःखद देहावसान हो गया। इस प्रकार अपने महान् जीवन की अन्तिम घड़ी तक वे आर्यसमाज के लिये चिन्तित और प्रयत्नशील रहे।

आर्यसमाज को अपने जीवन की प्रारम्भिक लगभग आधी सदी घोर संघर्ष में बितानी पड़ी। उसके संस्थापक महर्षि दयानन्द का तो सारा ही जीवन एक भयानक संघर्ष की वीरोचित स्फूर्तिप्रद लम्बी कहानी है। उनको उस संघर्ष में कितनी ही बार विष दिया गया और जीवन का अन्त भी घोखे से दिये गए विष से ही हुआ। मानो आर्यसमाज को अपने संस्थापक से विरासत में संघर्ष तथा बलिदान के ही वरदान प्राप्त हुए हों। भारतीय आर्य संस्कृति को इस्लामी और ईसायत व अंग्रेजियत के भीषण आक्रमणों से सुरक्षित रखने के लिए आर्यसमाज को न केवल मुसलमानों तथा ईसाइयों के, अपितु अपने ही घर वालों सनातनीय भाइयों के भी भीषण प्रहार भेलने पड़े। २० वीं सदी की पहली दशब्दि में जब राजद्रोह ने सिर उठाया और जहाँ-तहाँ क्रान्तिकारी काण्ड होने लगे तब आर्यसमाज की तेजस्वी राष्ट्रीय विचारधारा के कारण अंग्रेज शासकों की यह धारणा सुदृढ़ बन गई कि “जहाँ कहीं आर्यसमाज प्रबल है वहाँ ही राजद्रोह की भावना जोरों पर है।” अपनी इस धारणा के अनुसार उत्तर भारत में आर्यसमाज को कुचलने का व्यापक प्रयत्न किया गया। आर्य-समाजियों पर तरह-तरह के मुकदमे चलाये गये। अनेक आर्य-समाज मन्दिरों पर ताले लगवा दिये गये और “सत्यार्थप्रकाश” ग्रन्थ को राजद्रोही ठहराने के लिये भी कानूनी कार्यवाही की गई। सिख व मुसलमान देश-भक्तों व क्रान्तिकारियों को आर्यसमाजी कह कर बदनाम किया जाने लगा। आर्यसमाज के लिये संघर्ष की दृष्टि से वह कठोर अग्नि परीक्षा का समय था। इसी समय में महाशय कृष्ण का आर्यसमाज के सार्वदेशिक क्षेत्र में पदार्पण हुआ। शासकों के उस भीषण प्रकोप के जो कठोर प्रहार आर्यसमाज को उन दिनों भेलने पड़े थे उनका वीरता पूर्वक सामना करने वालों में आर्ययुवक महाशय कृष्ण भी अन्यतम थे। इस प्रकार उनकी युवावस्था पर संघर्ष के जो

संस्कार पड़े थे वे आजीवन उभरते ही रहे तथा कभी मन्द नहीं पड़े। इसी कारण महाशय जी के जीवन को "संघर्ष का जीवन" कहा जा सकता है।

अपने इस संघर्षमय जीवन में उन्होंने किससे लोहा नहीं लिया? विदेशी शासन की आँखों का वे सदा काँटा बने रहे। पंजाब के फौजी शासन में उन्हें १९१९ में सम्भवतः पहली बार जेल जाना पड़ा।

अगस्त १९४२ की क्रान्ति तक विदेशी शासन के विरुद्ध वे निरन्तर जूझते रहे। जेलों का दण्ड भोगते रहे। अत्यन्त निर्भीक पत्रकार की हैसियत से अपने समाचार पत्रों की जमानतों की जवानी के रूप में भी उन्होंने विदेशी शासन के कितने ही कठोर प्रहार अपनी वज्रसम छाती पर झेले। १९३६ में प्रांतीय स्वायत्त शासन के लागू होने पर जब पंजाब में सर सिकन्दर हयातखाँ का यूनियनिस्ट मंत्रिमण्डल कायम हुआ तब भी उनकी लौह लेखनी की तेजस्विता वैसी ही बनी रही। यूनियनिस्ट मंत्रिमण्डल की मुस्लिम परस्त दुर्नीति के वे बड़े ही कठोर निर्मम और निर्भीक आलोचक रहे। अन्याय के साथ समझौता करना वे जानते ही न थे। उनका मूल मन्त्र यह था कि मेरी गर्दन को काटा जा सकता है किन्तु भुकाया नहीं जा सकता। निःसन्देह आजीवन वे सत्य पर डटे रहे और जिसको सत्य मानकर स्वीकार कर लिया उसको निभाने के लिए बड़े से बड़ा कष्ट उठाने में तनिक संकोच नहीं किया। उनकी कभी कोई कीमत नहीं लगा सका और उन्हें किसी भी प्रकार अपने निश्चित मार्ग से विचलित नहीं किया जा सका। निजाम हैदराबाद में आये सत्याग्रह में उनका जेल जाना भी उनके संघर्षमय जीवन का द्योतक है।

दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन के रूप में देश पर जो भयानक विपत्ति आई, उसमें उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन करने में जिस तत्परता तथा निष्ठा का परिचय दिया उसकी मिसाल कहीं और मिलनी मुश्किल है। उस घोर विपत्ति में महाशय जी हिन्दू जाति के सजग प्रहरी सिद्ध हुए। अपना कर्तव्य पालन करते हुए वे कांग्रेस और उसके शासन की कठोर से कठोर आलोचना करने में कभी पीछे नहीं रहे। १९४७ में दिल्ली आकर बस जाने के बाद भी इस प्रकार उनका जीवन निरन्तर संघर्षमय ही बना रहा। यह संघर्ष उन्होंने हिन्दुओं की

हित की रक्षा के लिए जान बूझ कर अपने कन्धों पर ओढ़ा था। उसके लिये पंजाब के मुख्य मंत्री सरदार प्रतापसिंह कैरों और प्रधान मंत्री श्री नेहरू की नीति की आलोचना करने में भी वे नहीं चूके।

वे जैसे तेजस्वी लेखक थे वैसे ही ओजस्वी वक्ता थे। हजारों श्रोताओं को लाउडस्पीकर के बिना भी मंत्रमुग्ध कर लेने की उनमें अद्भुत शक्ति थी। पंजाब में उन सरीखे सफल वक्ता बहुत ही कम थे और उन्होंने पंजाब के जितने शहरों, कस्बों तथा देहातों का दौरा किया उतना कदाचित् ही किसी अन्य नेता ने किया होगा। आर्य समाज के वे एक छत्र नेता थे और जिस आर्य समाज के उत्सव पर वे पहुँच जाते थे वह सहज ही में सफल हो जाता था। विभाजन के बाद राजधानी दिल्ली में आर्यसमाजों की संख्या दस गुना के लगभग हो गई है। आर्यसमाज के इस विस्मयजनक विस्तार का अधिकांश श्रेय उनको ही दिया जाना चाहिए। अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के अमर बलिदान के वर्षों बाद राजधानी के हिन्दू आर्य-जगत् को महाशय जी के रूप में एक और सबल, सशक्त और प्रभावशाली नेतृत्व प्राप्त हुआ था। वह पन्द्रह ही वर्षों में अपना अनोखा चमत्कार दिखा गया।

प्रभावशाली पत्रकार के रूप में उनकी सफलता को एक स्वर से स्वीकार किया गया। उनकी लेखनी में जो तेज था वह उनकी वाणी के ओज से भी कहीं अधिक उग्र, गम्भीर और आकर्षक था। उनका तर्क कट्टर से कट्टर विरोधी के हृदय पर भी छा जाता था। उन्होंने १९०६ में अंग्रेजी भाषा के लेखक के रूप में पत्रकार क्षेत्र में प्रवेश किया था। तब वे पंजाब आर्य-प्रतिनिधि सभा के अंग्रेजी पत्र "आर्य पत्रिका" के दो वर्ष तक सम्पादक रहे। १९०८ में उन्होंने उर्दू साप्ताहिक "प्रकाश" निकालना शुरू किया। "प्रकाश" ने पंजाब में हिन्दू आर्य-जगत् के लिए प्रकाश स्तम्भ का काम किया। १९१८ में दैनिक "प्रताप" का प्रकाशन शुरू किया। दैनिक "प्रताप" की तेजस्विता के कारण उर्दू पत्रकारिता में महाशय जी सहसा वैसे ही चमक उठे जैसे हिन्दो पत्रकारिता में अपने "प्रताप" द्वारा अमर शहीद श्री गणेश शंकर जी विद्यार्थी चमके थे। महाशय जी का "प्रताप" केवल आर्यसमाज तक सीमित नहीं रहा।

उसके द्वारा उन्होंने देश के राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया और अपनी बहु-मुखी प्रतिभा से जल्दी ही उसमें अपना विशिष्टस्थान बना लिया। अपने निर्भीक विचारों से देश के राजनीतिक जीवन को भी प्रभावित करना शुरू कर दिया। राजनीतिक विषयों पर “प्रताप” के दृष्टिकोण को जानने व समझने के लिए पंजाब के ऊँचे से ऊँचे शासकीय क्षेत्र भी उत्सुक रहते थे। “प्रताप” के संबन्ध में यह स्वीकार किया जाता है कि दैनिक होने पर भी सप्ताहों तक उसका महत्त्व और आकर्षण फीका नहीं पड़ता था।

प्रधानतः उर्दू पत्रकार होते हुए भी उन्होंने हिन्दी की जो सेवा की वह कभी भुलाई नहीं जा सकती। यह बिल्कुल ठीक कहा गया है कि उन्होंने उत्तरी भारत के उस प्रदेश में, जिसमें फारसी का एक छात्र राज्य कायम था, उर्दू लिपि के माध्यम से हिन्दी भाषा को जन-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। वे उर्दू लिपि में संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का प्रयोग करते थे और वेदों, उपनिषदों, स्मृति ग्रन्थों तथा गीता आदि के संस्कृत उद्धरण बहुतायत से दिया करते थे। यदि कहीं महाशय जी ने हिन्दी प्रधान इस उर्दू परम्परा को जीवित न रखा होता तो पंजाब, सिन्ध तथा सीमोत्तर प्रदेश में हिन्दी का कोई नाम लेना मुश्किल से बचा होता। उन प्रदेशों के हिन्दी आन्दोलन को सक्षम बनाने में महाशय जी का सक्रिय सहयोग निरन्तर बना रहा। पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा तथा उससे संबन्धित आर्य समाजों को अपना काम हिन्दी में करने की प्रेरणा वे सदैव देते रहे। दिल्ली में आ जाने के बाद उनका विचार हिन्दी दैनिक शुरू करने का था। अनेक कारणों से वे अपने इस विचार को मूर्तरूप नहीं दे सके। परन्तु राजधानी के पुराने हिन्दी दैनिक “वीर अर्जुन” के लड़खड़ा जाने पर उन्होंने उसको अपने हाथों में लेकर अमर बना दिया। यह उनके उत्कृष्ट हिन्दी प्रेम का ज्वलन्त उदाहरण है। पंजाब में हिन्दी सत्याग्रह को यशस्वी बनाने में जो सहयोग तन, मन, धन से उन्होंने दिया वह भी उनके हिन्दी प्रेम का परिचायक था।

महाशय जी के महान् यशस्वी जीवन का यथार्थ चित्रण इन शब्दों में किया जा सकता है कि वे महर्षि दयानन्द के अन्यतम अनुयायी थे और आर्य-समाज के नियमों के ढाँचे में अपने को ढालने का उन्होंने निरन्तर प्रयत्न किया।

उनमें सत्य परायणता, निर्भीकता, लोकोपकारिता तथा परोपकार वृत्ति आदि सद्गुण इसी कारण विशिष्ट रूप में प्रस्फुटित हो सके थे। उस दिन कान्स्टीट्यूशन हाउस में राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन के मुख से ये शब्द सुनकर सबसे अधिक प्रसन्नता उनको ही हुई होगी कि भारतीय संविधान में जिन सामाजिक तत्वों का समावेश किया गया है उनके लिए महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आदर्शों से ही प्रेरणा ली गई है। आश्चर्य नहीं कि राष्ट्रपति के इन शब्दों में उन्हें महर्षि दयानन्द के उस महात्मा मिशन की पूर्ति का कुछ आभास मिला हो, जिससे वे समस्त भारतीय जीवन को अपने देश की प्राचीनतम वैदिक संस्कृति के रंग में रंगा हुआ देखना चाहते थे। महर्षि के इस असिद्ध स्वप्न को पूरा करने में ही महाशय जी ने अपना समस्त जीवन और तन, मन, धन सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था।

सदा ध्यान दें

यत्र सुपर्णा अमृतस्य
भागमनिमेषं विदथाभि स्वरन्ति ।
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः
स मा धीरः पाकमत्राविवेश ॥

ऋ. १।१६४।२१॥

(सुपर्णाः) अनेक पक्षी अर्थात् अनेक जीवात्मा (यत्र) जहां (अमृतस्य भागं) अमृत के भाग के प्रति (अनिमेषं) खंड रहित होकर (विदथा) ज्ञान के साथ (अभिस्वरन्ति) पहुँचते हैं, वह विश्वस्य भुवनस्य) संपूर्ण जगत् का (इनः) स्वामी और (गोपाः) रक्षक है। (सः धीरः) वह धीर वीर महाज्ञानी परमात्मदेव (अत्र पाकं मा) मुझ पकने योग्य भक्त में (आविवेश) प्रविष्ट हुआ है।

जब जीवात्मा उसी ईश्वर में अमृत के भाग को प्राप्त करते हैं। वही भुवन का रक्षक ईश्वर मेरे अन्दर है, यह बात सदा ध्यान में धरने योग्य है।

महाशय जी !

श्री मुनीश्वरदेव 'सिद्धान्त-शिरोमणि'

●

खण्ड ० म० कृष्ण जी आर्य समाज की विभूति थे, आर्य समाज की प्रतिष्ठा की रक्षार्थ वह चौमुखी लड़ाई लड़ते थे, उनकी लेखनी में ओज था, वह ओजस्विनी लेखनी जिस विषय पर भी उठती या चलती थी, उसकी जानकारी के लिए उसमें सर्वांगपूर्ण सामग्री मिलती थी, लिखने की रीति ऐसी सरल थी कि पढ़ने व सुनने वाले आवाल वृद्ध को सरलता से सामयिक ज्ञान की प्राप्ति हो जाती थी, यही कारण है कि विरोधी भी उनकी लेखनी का लोहा मानते थे, सच तो यह है कि समाचार पत्रों के व्यसनी जब तक 'प्रताप' द्वारा उनका लिखित मुख्य सम्पादकीय लेख न पढ़ लेते थे; तब तक वह अपने व्यसन को अपूर्ण ही समझते थे ।

उनकी वाणी में भी ओज था, नपे-तुले शब्दों में वह बड़े महत्त्व की बात कह जाया करते थे, आप की अपीलों पर सहस्रों नहीं लाखों रुपया पानी की भाँति बरसता था, हैदराबाद के सत्याग्रह और आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्वर्ण जयन्ती तथा हिन्दी रक्षा आन्दोलन पंजाब के लिए की गई अपीलों को इस प्रसंग में आँका जा सकता है । आर्य समाज की प्रतिष्ठा को जब भी जिस ओर से धक्का लगता या लगाने की कोई कुचेष्टा करता तो उसका पूज्य महाशय जी ही एक मात्र निर्भीकता से अपने सफल पत्रों द्वारा मिटाने का प्रयत्न करते थे । आप एक प्रकार से आर्य समाज के प्राण थे, आप की दूरदर्शिता अद्भुत थी, आप ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, व परोपकारिणी सभा अजमेर की

वर्षों प्रधान व प्रमुखाधिकारी रह कर जो सेवाएँ की हैं, वह चिरस्मरणीय ही रहेंगी ।

उनका स्वभाव भी अति सरल एवं छल-छिद्र से रहित था । वह जब कभी किसी की आलोचना करते, तो इसलिए नहीं कि इसे नीचा दिखाना है अपितु इसलिए कि उसे सुपथ पर लाना है । ऐसा मैंने स्वयं एक बार जब वह आर्य-प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे, और स्व० श्री पं० भीमसेन जी विद्यालंकार सभा के मन्त्री थे—अनुभव किया था । अन्त में मैंने जब उनके सामने सप्रमाण सारी स्थिति रखी तो वह मान गये और कहने लगे कि मेरे सुनने में कमी थी, आप ने जो कहा था वही ठीक है ।

महाशय जी को इस अवस्था में भी आर्य समाज के प्रचार की ही चिन्ता रहती थी । आप में महर्षि दयानन्द के प्रति अगाध श्रद्धा थी, अस्वस्थ होते हुए भी अपने जीवन की अन्तिम घड़ियों में आप ने गत ऋषि बोधोत्सव के प्रधान पद से दिल्ली से एक भाषण द्वारा ऋषिऋण से उऋण होने के लिए सुझाव दिया था कि प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह स्वामी जी द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चले और दूसरों को चलावे । ऐसे आर्य नेता, सुलेखक, सुवक्ता एवं आदर्श ऋषि भक्त के लिए मेरा मस्तिष्क सदा भुक्ता है ।

आवश्यकता

एक आर्य युवक जिसकी आयु २४ वर्ष और मिडिल तक की शिक्षा प्राप्त किये हुये हैं और कृषक का काम करते हैं, के लिए १६ वर्षीय वधू की आवश्यकता है । योग्यता चौथी कक्षा तक और स्वस्थ हो ।

—रामकुमार सिंह आर्य
V. P. O. खेड़ी आसरा
(रोहतक)

महाशय कृष्ण

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

जन्म—फरवरी १८८०, निधन—२४ फरवरी १९६३ ।

महाशय जी का जन्म वजीराबाद (अब पश्चिमी पाकिस्तान में) के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। वे अपने माता-पिता के लाडले बेटे थे। उनकी स्कूलीय शिक्षा वजीराबाद में और कालेज की शिक्षा लाहौर के इस्लामिया कालेज में हुई थी। महाशय जी के जीवन की यह विचित्र घटना है। उनका परिवार कट्टर पौराणिक था। कट्टर परिवार में जन्म लेने और मुस्लिम कालेज में शिक्षित होने पर भी उनमें क्रान्ति की भावना उदित हुई और बाद में वे धार्मिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में क्रान्ति के उत्पादक बने और बने रहे।

जिस समय उन्होंने बी० ए० पास किया उस समय दैवदुर्विपाक से उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी, फलतः उन्हें अपना मार्ग स्वयं बनाने के लिए बाध्य होना पड़ा। अपने पैरों पर खड़ा होना भाग्य की गोद में फँके जाने के समान होता है क्योंकि तभी-मनुष्य की क्षमताओं का समुचित विकास और प्रदर्शन होता है। कार्य-क्षेत्र में अवतीर्ण होने पर महाशय जी की क्षमताएँ विकास की ओर अग्रसर हुईं और धन-वैभव, यश और सन्तान सभी दृष्टियों से उन्हें भाग्यशाली बना गईं। कहावत है कि दुर्भाग्य के निवारण के लिए अभीष्ट गुणों की अपेक्षा सौभाग्य की रक्षा के लिए अधिक गुणों की आवश्यकता होती है। अध्यवसाय, उदारता, चरित्र बल ये सभी गुण अपने सौभाग्य की रक्षार्थ महाशय जी में विद्यमान रहे।

आर्योदय

५६

६ वैशाख २०२०

सफल पत्रकार

महाशय जी पंजाब के गुजरात जिले के निवासी थे जिसे कई योग्यतम पत्रकारों को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त रहा है। इसी गुजरात जिले के इस सपूत को उत्तर भारत की पत्रकारिता का पिता कहलाए जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

महाशय जी निर्भीक पत्रकार और सिद्धहस्त लेखक थे। शत्रु मित्र सभी उनकी लेखनी का लोहा मानते थे। उनके लेख पुराने होने पर भी ताज़गी लिए रहते थे। वे जिस विषय पर लिखते थे उसका सजीव चित्र खींच देते थे। उस विषय के सम्बन्ध में ज्ञातव्य सभी बातों का समावेश अति सुन्दरता, स्पष्टता तथा युक्तिपूर्णता से कर देते थे।

कोई समय था जब महाशय जी स्वनामधन्य महात्मा मुंशीराम जी (स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी) के दाहिने हाथ थे। उन्हीं का अनुसरण करते हुए 'प्रकाश' और 'प्रताप' की भाषा में उन्होंने पर्याप्त परिवर्तन किया था। उनकी भाषा प्रायः हिन्दी और 'लिपि' उर्दू रखी गई थी। अब भी 'प्रताप' का यही रूप है।

श्रेष्ठ वक्ता

'महाशय जी अच्छे वक्ता भी थे। वे प्रायः समाजों के उत्सवों पर जाते रहते थे। जब वे आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री थे तब प्रायः शनि और रवि को बाहर ही रहते थे। उनके व्याख्यानो में उपस्थिति खूब रहती थी।

कुशल-प्रबन्धक

वे सभा चतुर भी थे। थोड़े से समय में अधिक से अधिक कार्य का भुगतान करने में सिद्धहस्त थे। विवाद के समय उग्र होते हुए भी अनुशासन में रहना जानते थे।

उनमें कार्य और प्रबन्ध शक्ति भी अद्भुत थी। वे वर्षों पर्यन्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपमंत्री, मंत्री, उपप्रधान और प्रधान रहे। जब वे पहले-पहल सभा के मंत्री बने थे उस समय सभा के वेद प्रचार विभाग का वार्षिक

बजट केवल २०००) का था। उनके पुरुषार्थ से वह ४० हजार तक जा पहुँचा। उनके यत्न से वेद-प्रचार की स्थिर निधि में कई लाख रुपा हो गया था। वे चन्दा-चयन में बड़े चतुर थे। पंजाब की सभा को जो शक्तिशाली रूप आज प्राप्त है; उसमें महाशय जी का बहुत बड़ा योग है।

सार्वदेशिक सभा के साथ भी उनका सम्बन्ध चिरकाल पर्यन्त बना रहा। वे हैदराबाद के धर्म युद्ध के छूटे अधिनायक थे। पंजाब में इस युद्ध की सफलता के लिए जो जोश देखा गया था उसका अधिकांश श्रेय श्री म० कृष्ण जी और स्व० स्वामी सत्यानन्द जी को है। इसी प्रकार सिंध-सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आन्दोलन आदि आदि आर्य समाज की सार्वदेशिक प्रगतियों को सफल बनाने में वे सदैव आगे रहते थे। मृत्यु के समय वे अखिल भारतीय श्रद्धानन्द ट्रस्ट, पाटीदी हाउस ट्रस्ट और परोपकारिणी सभा के प्रधान और अन्य अनेक संस्थाओं के सदस्य अधिकारी एवं संरक्षक थे। इस प्रकार उनके जीवन ने एक संस्था का रूप से लिया था।

वे बड़े अनुशासन-प्रिय थे। व्यवस्था और समय के बहुत पाबन्द थे। दूसरों को भी ऐसा ही देखना चाहते थे, इसलिए कभी-कभी उनका व्यवहार कुछ कठोर और अप्रिय सा दीखने लगता था परन्तु व्यवहार का स्तर ऊँचा ही रहता था।

वे योग्य थे। योग्यता से भी अधिक अलभ्य एक और वस्तु होती है और वह है योग्यता को पहचानने की योग्यता। महाशय जी में यह योग्यता थी। इसी के कारण उनको योग्य से योग्य साथी एवं कार्यकर्ता मिले और विरोध के बवंडरों में भी उन्हें अपनाए रखा।

निस्संदेह महाशय जी के निधन से एक युग का अवसान हो गया है और उनका अभाव पग-पग पर खटकेगा।

सिद्धान्त के धनी

पं० रामस्वरूप (पाराशर)

उन्नीसरा महाशय जी से प्रथम परिचय सन् १९२३ में हुआ। महाशय जी उन दिनों आ० प्र० सभा पंजाब के मंत्री थे। उन्हीं की प्रेरणा पर ही मैंने आ० प्र० सभा पंजाब में इस विचार से काम करना स्वीकार कर लिया कि उस संस्था के साथ संबद्ध रह कर भाषणों द्वारा मैं अपनी देश-भक्ति और ऋषि दयानन्द की विचार धारा को सर्व साधारण तक पहुँचा सकता हूँ। इस प्रकार सन् १९२३ में आ० प्र० सभा पंजाब के साथ मेरा सम्बन्ध हुआ जो सन् १९५६ तक अनवरत रूपेण चलता रहा।

लगभग ३६ वर्ष महाशय जी के संपर्क में रह कर मैं जो कुछ उन्हें पढ़ सका वही आज पाठकों के समक्ष रख रहा हूँ। किसी कवि का कथन है कि “खींचो न कमानों को न तलवार संभालो—जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।” महाशय जी के दैनिक ‘प्रताप’ ने जिसका जन्म सन् १९१६ में डायर शाही जैसे संकट काल में हुआ था, उस समय की राजनीति में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। यों तो ‘प्रताप’ की खबरें ही उत्साहवर्धक होती थीं किन्तु महाशय जी का अपना अग्र लेख तो मुद्दों में जान डालने वाला होता था। एक सर्वप्रिय दैनिकपत्र के संपादक होने के नाते महाशय जी देश की तत्कालीन राजनीति से अलग-थलग किस प्रकार रह सकते थे, हजारों युवकों के हृदयों में अपने लेखों से उन्होंने देश-भक्ति की अग्नि प्रज्वलित की। किन्तु यह सब होते हुये भी उन्होंने आर्य समाज को कभी अपनी आँखों से ओझल नहीं किया। अपने ‘प्रताप’ द्वारा जहाँ वह

महात्मा गांधी जी की तत्कालीन विचार धारा का समर्थन करते थे, वहां आर्य समाज का भी निरन्तर प्रचार करते रहे जो उनके जीवन का चरम लक्ष्य था।

महाशय जी के हाथ में एक शक्तिशाली पत्र था यदि वह चाहते तो कांग्रेस में सम्मिलित हो कर देश के राजनीतिक क्षितिज पर अत्यन्त सु।मता से चमक सकते थे। किन्तु आर्य समाज से बाहर उनके लिये कोई आकर्षण न था। यद्यपि कांग्रेस आन्दोलन में उन्होंने अंग्रेज सरकार के विरुद्ध सदा कांग्रेस का समर्थन किया, जिस कारण उनके 'प्रताप' को एक नहीं, अनेकों बार सरकार का कोप-भाजन बनना पड़ा किन्तु अपने अदम्य उत्साह के साथ सब आपत्तियाँ भेल कर भी वह अपने सिद्धान्त पर डटे रहे। अन्याय के आगे उन्होंने कभी घुटने नहीं टेके, और न अपने सिद्धान्तों और अन्तरात्मा के विपरीत उन्होंने कभी किसी से समझौता किया। देश के स्वतंत्र हो जाने पर भी जब कि बहुत से व्यक्तियों ने अपने को समय के अनुकूल बना कर अवसरवादिता का परिचय दिया—महाशय जी कांग्रेस सरकार के उन कामों का जिन्हें वह देश और जाति के हित में घातक और बाधक समझते थे, निर्भीकता पूर्वक उसी प्रकार आलोचना करते रहे जिस प्रकार अंग्रेज सरकार की करते थे। किन्तु दोनों आलोचनाओं में बड़ा अन्तर यह था कि अंग्रेजी सरकार की आलोचना जहाँ एक विदेशी सरकार के प्रति जनता में घृणा की भावना उत्पन्न कराने के लिये होती थी वहाँ कांग्रेस की आलोचना में आत्मीयता होती थी। अपनी सरकार की भ्रामक नीतियों को देख कर उनका भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत हृदय अत्यन्त व्यथित होता था एवं जनहित की भावना से प्रेरित होकर वह अपने लेखों और भाषणों द्वारा व्यक्त करने में कभी हिचकते नहीं थे। परिणामतः अपनी ही सरकार ने भी विदेशी सरकार के चरण चिन्हों पर चल कर 'दैनिक प्रताप' का जीवन समाप्त करने के लिये अनेकों प्रहार किये। महाशय जी का किसी राजनीतिक दल से संबंध अथवा गठबन्धन न था। वह तो विशुद्ध आर्य समाजी थे। अतः उनकी आलोचना का उद्देश्य सर्व साधारण की दृष्टि में किसी को बदनाम करने का नहीं, अपितु सन्मार्ग दिखाने का रहता था। अपने विद्यार्थी जीवन काल में ही महाशय जी आर्य समाज के संपर्क में आ गये थे। उन पर आर्य समाज का ऐसा गूढ़ रंग चढ़ा कि जिसमें सारे जीवन फीकापन नहीं आसका। सन् १९०२ में इस्लामियाँ

कालिज से स्नातक बन कर फरवरी सन् १९६३ तक का सारा जीवन उन्होंने आर्य समाज की सेवा में बिताया। आर्य समाज की स्थापना सन् १८७५ में हुई और महाशय जी ने सन् १९०२ से भी पूर्व इसमें भाग लेना आरम्भ कर दिया था सन् १९०७ में वह आ० स० वच्छोवाली लाहौर के मंत्री बने और ७ ही वर्ष पीछे अर्थात् सन् १९१४ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री निर्वाचित हो गये। सन् १९१४ से लेकर सन् १९५६ तक बीच में सन ३५-३६ के दो एक वर्ष को छोड़कर लगभग ४०-४२ वर्ष तक वह निरन्तर आ० प्र० सभा पंजाब के मंत्री अथवा प्रधान पद पर रह कर समाज की सेवा करते रहे। अतः यदि यह कहा जाय कि वह आर्य समाज और विशेषतया आ० प्र० सभा पंजाब के जीवित जागृत-मूर्तिमान इतिहास थे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

वह सहृदय भी बड़े थे। सभा के देहली स्थित वेद प्रचार-उपकार्यालय का उन दिनों मैं अध्यक्ष था। दैवात् रोगी हो गया। इरविन हस्पताल में प्रविष्ट कराया गया। किन्तु अवस्था दिन प्रति दिन बिगड़ती गई। उपदेशक के पास बैंक बैलेंस तो होना ही क्या था। महाशय जी लगभग प्रतिसप्ताह हस्पताल में मुझे मिलने आते रहे और न केवल स्वयं अपितु आर्य जगत के किसी विशिष्ट व्यक्ति को भी साथ लाते रहे। मेरी ऐसी अवस्था देखकर उदार मना महाशय जी ने मुझे कहा कि मैं बीमारी के व्यय की चिन्ता न करूँ। उन्होंने कहा कि 'मैं सभा से आपकी आर्थिक सहायता कराऊँगा। यदि सभा ने मेरी बात न मानी तो मैं ५००) अपनी जेब से ही आप की सहायतार्थ दूँगा।' रुग्ण शैया पर पड़े व्यक्ति के लिये यह कितना आशाजनक आश्वासन था। उन दिनों महाशय जी सभा के प्रधान थे। उनकी प्रेरणा पर सभा ने मुझे ५००) की सहायता प्रदान की। वह दीन दुखियों की भी सहायता यदा कदा कराते अथवा स्वयं करते रहते थे।

आज वह कर्मठ आर्य, यशस्वी लेखक, स्वाभिमानी व्यक्ति, जाति को संकट से पार करने वाला प्रत्युत्पन्नमति नेता हमारे मध्य से उठ गया। प्रभु हम आर्यों को शक्ति प्रदान करे कि हम उनके चरण चिन्हों पर चल सकें।



प्रकाशस्तम्भ

श्री धर्मदेव वेदवाचस्पति, गुरुकुलकांगड़ी

हृकहरा वदन, पेनी आँखें, दृढ़ हनु, सिर पर शुभ्र पगड़ी, वन्द गले का कोट—यह थी उनकी सादे लिवास में आकर्षण मूर्ति, जो अपने सहयोगी कार्य-कर्त्ताओं के साथ सभा मण्डप में पहुँचते ही सबकी दृष्टि को बलात् अपनी ओर आकृष्ट कर लेती थी। यद्यपि आपकी उच्च शिक्षा लाहौर में इसलामिया कालिज व एफ० सी० कालिज में हुई, तो भी जीवन का कार्य क्षेत्र चुना महात्मा मुंशीराम के नेतृत्व में आर्यसमाज को। समाज सेवा की स्वाभाविक लगन ने वकालत की अपेक्षा पत्रकारिता द्वारा जनता की सेवा व शिक्षा के कार्य को अधिक ऊँचा तथा पवित्र समझा। केवल उदरपूर्ति के लिए धनोपाजन करना उन्हें रुचिकर नहीं हुआ। जब महात्मा मुंशीराम जी ने हरिद्वार में गुरुकुल की स्थापना की। तब उनको पूर्ण सहयोग देने तथा आर्यसमाज व गुरुकुल के कार्य को गति देने का बीड़ा महाशय कृष्ण जी ने उठाया। तभी से आप के नाम के साथ जनता का आदर व प्रेम सूचक 'महाशय' शब्द जुड़ गया और मृत्यु पर्यन्त वे इसी नाम से पुकारे जाते रहे। वस्तुतः सम्पूर्ण भारतवर्ष में आर्यसमाज के कार्य क्षेत्र के सर्वाधिक विस्तार का पंजाब को जो श्रेय प्राप्त हुआ है, उसमें आपका भी एक बहुत बड़ा हाथ था। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को एक दृढ़ तथा विस्तृत संगठन का रूप देने में लाहौर की 'त्रिमूर्ति' को सदा स्मरण किया जाएगा महाशय कृष्ण जी, श्री पं० विश्वम्भर नाथ जी तथा श्री प्रो० रामदेव जी। प्रेस, कार्यालय तथा प्लेटफार्म द्वारा इस त्रिमूर्ति ने सभा के कार्य का विस्तार किया और अपना सम्पूर्ण जीवन इसको अर्पण कर दिया।

आपके सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ १९०६ में 'प्रकाश' (उर्दू) द्वारा आर्यसमाज को संगठित तथा उसके विचारों को प्रसारित करने से हुआ। जिस प्रकार सभा मञ्च पर उनके मुख से निकली तीक्ष्ण वाणी स्थान की दूरी को पार करती हुई श्रोता के हृदय को चीर कर उसके अन्तस्तल में पैठ जाती थी, उसी प्रकार उनकी लेखनी में भी एक विशेष जादू था जिसके कारण उनके लेख उनके प्रशंसक तथा विरोधी सभी पढ़े बिना रह नहीं पाते थे। अपने पत्र द्वारा आपने स्वराज्य प्राप्ति के मार्ग को प्रशस्त किया, ब्रिटिश सरकार तथा मुसलमानों व सिखों की दुरभिसंधि से हिन्दू जनता को सदा सचेत किया। प्रतिफल में पाया अतुल यश तथा अभूत धनराशि, परन्तु ये दोनों उन्हें अपने लक्ष्य से डिगाने में समर्थ नहीं हो सके। दोनों का विनियोग किया उन्होंने भारत माता, हिन्दू जाति तथा आर्यसमाज के हितकारी कार्यों में। पंजाब के राजनैतिक तथा आर्य सामाजिक जीवन में उनका एक विशिष्ट स्थान था। स्वतन्त्रता प्रेमी सभी दल—कांग्रेस, क्रान्तिकारी, हिन्दू महासभा आदि उनसे निकट सम्पर्क बनाये रखने के लिये प्रयत्नशील रहते थे। पंजाब की राजनीति के तो वह विशेषज्ञ थे और निर्भीक भाव से देश की राजनीतिक समस्याओं को जनत के सामने प्रस्तुत करते रहते थे। जो ठीक समझा उसे बिना लाग लपेट के कह दिया, किसी की प्रसन्नता या अप्रसन्नता की परवाह नहीं की। राज-क्रोध से भी कभी भयभीत नहीं हुए। 'न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः' यह वचन उन पर पूरी तरह लागू होता था। सरकारी दबाव से या पैसे के प्रलोभन से अभिभूत होकर उन्होंने अपनी ओजस्विनी लेखनी को कभी कलंकित नहीं किया। 'मेरी गर्दन कट सकती है परन्तु झुक कभी नहीं सकती'—उनका यह वचन सदा सत्य सिद्ध हुआ। "मैं सचाई की आवाज सदा उठाता रहूँगा। सत्य को प्रकट करने में मेरी लेखनी पहले कभी नहीं रुकी और भविष्य में भी कभी नहीं रुकेगी"—१९४२ में सर सिकन्दर ख्याल को लिखे गए ये वचन अन्त तक सच्चे सिद्ध हुए।

आप आर्यसमाज के उन उज्ज्वल रत्नों में से थे जिन्होंने आर्यसमाज को कभी नहीं भुलाया। प्रत्येक क्षेत्र में आर्यसमाज के सन्देश को लेकर गये। राजनीतिक क्षेत्र में कार्य करते हुए भी आर्यसमाज के नेतृत्व में पूर्ववत् अक्षुण्ण स्थिति बनाये रखी। पंजाब के विभाजन के बाद विशृङ्खलित आर्य भाइयों को एक सूत्र

में पिरोने, उन्हें संगठित करने तथा आर्य प्रतिनिधि सभा को अपने पुराने गौरव पर लाने का उन्होंने महान् प्रशंसनीय कार्य किया। जिस प्रकार १९३८ में आपने हैदराबाद सत्याग्रह का सफल नेतृत्व किया उसी प्रकार विभाजन के बाद हिन्दी रक्षा आन्दोलन के जन्मदाता बने। हिन्दू जाति के अधिकारों की रक्षा के लिए उन्होंने सदा सरकारी शक्ति से लोहा लिया।

इस अर्थप्रधान धर्म निरपेक्ष शासन व्यवस्था में आर्यसमाज का कार्य समाप्त न हो जाये, इस बात की उन्हें सदा चिन्ता रहती थी। इस ८२ वर्ष की वृद्धावस्था में ४-५ मास की लम्बी बीमारी भोगने के बाद भी वे पंजाब के हिन्दुओं तथा आर्यसमाज को नहीं भूले। 'चलो टंकारा' का नारा लगाते रहे। मृत्यु से एक दिन पूर्व भी देहली के ऋषि बोधोत्सव के सभापति पद को आपने सुशोभित किया। उन्हें आर्यसमाज के कार्यों में रस आता था। आर्यसमाज से उनका एकीकरण सा हो गया था। अतः रोगग्रस्त होने पर भी वह उसे छोड़ न सकते थे।

आज वह मशाल बुझ गई। वह प्रकाश स्तम्भ, जिसने सार्वजनिक कार्य क्षेत्र के यात्रियों के लिए सदा पथ-प्रदर्शन का महान् कार्य किया—सदा के लिये अस्त हो गया। छोड़ गया केवल अपने कार्यों तथा विचारों की एक अमृत किरण। वह किरण सदा हमारे हृदयों को प्रकाशित करती रहे—यह भगवान् से प्रार्थना है, आवश्यकता है उनकी स्मृति को जागृत रखने के लिये किसी भौतिक स्मारक तथा अमूर्त सच्ची भावना की जो हमें उन जैसा कर्मयोगी तथा समाज सेवी बनने की प्रेरणा देती रही।

क्या इस रिक्त स्थान की पूर्ति आर्यसमाज किसी प्रकार कर सकेगा, यह प्रश्नवाचक चिह्न मन को उद्दिग्ग्न कर देता है।

प्रहरी

श्री पं० भक्त राम जालन्धर

जिस लोह पुरुष की दृढ़ लेखनी ने देश भर में हलचल मचा दी, जिस दुर्बल काय पर बलवान् आत्मा ने अपने साफ और सालम दिमाग द्वारा अंग्रेजी शासन के पाँव उखाड़ दिये और उसके फलस्वरूप उसे विस्तरा बोरिया बांधने पर विवश होना पड़ा, जिस (कृष्ण) ने सुदर्शन चक्र सम्भाल कर पंजाब रूपी महाभारत का सारथि बनने के लिए कमर कस रखी थी, जिसकी वाणी सुपुष्ट थी, जिस की दधीचि की सी हड्डियाँ तलवार का काम देती थीं जो आर्य (हिन्दू) जाति का प्रहरी था, जो आर्यसमाज पर मर मिटने को सदा तैयार था और जिसने जो सत्य समझा उसके कहने और लिखने में निर्भयता दिखायी उस महान्-आशय=महान् विचारों वाले महाशय कृष्ण को लाखों प्रणाम ।

स्व० महाशय जी कट्टर देश भक्त, आर्य (हिन्दू) जाति के हित चिन्तक और आर्यसमाज के पथ-प्रदर्शक थे । पर वह पहिले आर्यसमाजी पीछे कुछ और थे । 'महाशय' शब्द ने यदि मान पाया तो म० कृष्ण के नाम से पूर्व प्रयुक्त हो कर । वह पहिली पीढ़ी के आर्यसमाजी तो न थे पर ईश्वर प्रदत्त अपने गुणों द्वारा उन आर्य नेताओं की श्रेणी में समझे जाते थे । 'प्रकाश' द्वारा तो आर्य विचारों का प्रचार होता ही था परन्तु 'प्रताप' 'वीर प्रताप' और 'वीर अर्जुन' में भी उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा का कोई अवसर नहीं खोया था । आर्यसमाज ही उनका सर्वस्व था ।

पूज्य महाशय जी सैद्धान्तिक मतभेद होने पर वैयक्तिक सम्बन्ध नहीं बिगाड़ते थे। सभा के निर्वाचनों में संघर्ष होता रहा पर वह विपक्ष के आर्यों से मित्रता ही रखते थे। सन् १९४२ के निर्वाचन के पश्चात् उन के आचरण का एक उदाहरण पर्याप्त है कि उन्होंने विपक्ष के चार मुख्य सज्जनों को निर्वाचन के दूसरे दिन भोजन पर बुलाया और उनसे कहा था—‘चुनाव के साथ हमारा मतभेद समाप्त हुआ। अब हम मिल कर आर्यसमाज की सेवा करेंगे।’ है न यह संघर्ष दूर करने का अत्युत्तम उपाय? महाशय जी की यह मनोवृत्ति सराहनीय और आर्यों के लिए अनुकरणीय है।

एक समय महात्मा मुन्शीरामजी के साथ उनका मतभेद हो गया था परन्तु उनके संन्यास ग्रहण के समय महाशय जी का रोना न थमता था। वह फूट-फूट कर रो रहे थे जब कि सूचना मिलने पर महात्मा जी ने उन्हें ढाढ़स देकर चुप कराया। प्रो० राम देव जी से भी बिगड़ जाते थे पर भ्रातृ प्रेम में अन्तर नहीं आता था। आचार्य जी जब सन् १९३२ में रावल पिण्डी जेल में थे तो महाशय जी ने, जेल सुपरिण्टेण्डेंट के पूछने पर कि ‘Is he brother of yours? (क्या यह आप के भाई हैं?)’ उत्तर दिया था ‘He is more than a brother to me’ (यह मुझे भाई से अधिक प्रिय हैं।) सुपरिण्टेण्डेंट ने कहा था—“ब्रदर तो मिल सकता है पर मोर देन ए वन्दर नहीं” मरते समय वेसुध होने पर भी आचार्य जी ने कुछ सैकण्ड महाशय जी की ओर देखा और पहिचान कर कहा था ‘भाई।’ दोनों भाई आर्य भ्रातृ प्रेम के आदर्श रूप थे।

स्व० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जब सन् १९५० में अफ्रीका गये तो प्रसङ्ग वश उन्होंने मुझे बताया था कि “(१) वह समय पर काम करते हैं। (२) जिसे कोई वचन देते हैं पूरा करते हैं। (३) अतिथि किसी समय भी आ जाये माथे पर बल नहीं पड़ता। (४) निरभिमानी हैं पर कुछ लोग उन्हें कम बोलने के कारण शुष्क स्वभाव समझ बैठते हैं। (५) सरल इतने कि महात्मा आनन्द स्वामी जी से कहने लगे—खुशहाल—चन्द! तू मुझ से नम्बर ले-गया। मैं तो सदा रोगी रहने के कारण पीछे रह गया। इन्हीं गुणों को सुन कर मैं महाशय जी का भक्त हो गया और यहाँ लौटने पर सन् १९५६ में उनके दर्शनों की अभिलाषा पूरी हुई।”

मान्यवर महाशय जी विद्यार्थी जीवन से आलोचक थे। उनके जन्म स्थान वजीराबाद में स्व० आचार्य रामदेव जी ने व्याख्यान दिया तो महाशय जी ने उनके मञ्च से उतरते ही उन पर प्रश्नों की बौछार कर दी थी उससे आचार्य जी इस परिणाम पर पहुँचे थे कि महाशय जी एक कड़े आलोचक होंगे। उनकी आलोचना यथार्थता पर अवलम्बित होती थी। इसके साक्षी उनकी आलोचनाओं के आलोचक भी हैं। उन्हें पत्रकार शिरोमणि कहना उनके साथ पूरा न्याय है। मैं उनकी ओजस्विनी लेखनी का प्रशंसक सन् १९१३ से हूँ। उस समय मैं एक आर्य मिडिल स्कूल की सातवीं श्रेणी में शिक्षा पाता था और पोस्ट कार्ड लिख कर 'प्रकाश' का नमूना मंगवाया था।

आर्य समाज के लिए अगाध प्रेम, वैदिक धर्म के सिद्धान्तों पर अटल श्रद्धा और महर्षि दयानन्द के प्रति गहरी भक्ति के कारण ही स्व० म० राजपाल जी ने अपनी रचना 'प्राचीन सभ्यता और वैदिक धर्म' उन्हें समर्पण की थी। बहुत कम भाइयों को पता है कि महाशय जी ने ही सब से पहिले भजनों का संग्रह करके 'आर्य गायन' पुस्तक छपवायी थी। यह मुझे स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी ने बताया था। उन्होंने आर्यसमाज के कई उतार-चढ़ाव देखे थे। इसके सम्बन्ध में जितना वह जानते थे उतना कोई नहीं जानता। आर्य समाजियों को खतरे की घण्टी बजा-बजा कर जगाते रहते थे। वह पहरदार चल बसा। अस्तु ! 'कीर्त्तिर्यस्य स जीवति' अर्थात् जिस की कीर्त्ति हो वह मरता नहीं। वह शारीरिक मौत मर कर भी जीता है।

पंजाब के मुख्य मंत्री स० प्रतापसिंह कैरों का सन्देश

मुझे यह जान कर हर्ष हुआ कि "आर्योदय" का महाशय कृष्ण की स्मृति में विशेषांक प्रकाशित हो रहा है।

महाशय जी एक कर्मठ पत्रकार, समाज सुधारक और सिद्धांत-निष्ठ व्यक्ति थे। इनका ओजस्वी जीवन प्रत्येक देशवासी विशेषतः पंजाब निवासियों के लिए अपने विश्वास पर टढ़ रहने की प्रेरणा देता रहेगा।

अनुकरणीय पहलू

श्री महात्मा ज्ञानेश्वरानन्द

द्वैती नियम अटल सिद्धान्त के रूप में ही होते हैं, कि एक जीव जो मानव के रूप में एक दिन जन्म प्राप्त करता है, समय आने पर उसे संसार से विदा होना और सबको वियोग देना भी अवश्यम्भावी ही है, उसी नियम के ही अनुसार देश, जाति और धर्मों को भी अपने महापुरुषों के संयोग-वियोग दोनों को सहन करना ही पड़ता है। श्री महाशय कृष्ण जी जैसे अनोखी शैली के प्रबल शक्तिशाली लेखक, योग्य वक्ता, वैदिक धर्म के लिये गौरव स्वरूप देश, धर्म और आर्यसमाज के सच्चे सेवक का संयोग पाकर आनन्द तथा हर्ष मनाया और अब वियोग पाकर कष्ट एवं दुःख प्राप्त हो रहा है जिसे सहना ही पड़ेगा, क्योंकि यह तो अकाट्य नियम है।

संसार से विदा होने के पश्चात् प्रायः सभी लोगों के गुण गाये जाते हैं, परन्तु जीवन काल में कुछ विरले ही लोगों के गुण-गान होते हैं, उन्हीं में से एक श्री महाशय कृष्ण जी भी आर्यसमाज के एक सच्चे वीर योद्धा, आदर्श एवं निर्भीक सेवक और महान् कार्य-कर्त्ता व्यक्ति थे, कि जिनके जीवन काल में अपने और वेगाने दोनों गुण-गान किया करते थे। उन्होंने अपने सन्मुख श्री पं० लेखराम जी की अन्तिम इच्छा को (कि आर्यसमाज से लेखन कार्य कभी बन्द न होने पाये) सदैव सामने रखा, और आर्यसमाज के सन्मुख उपस्थित किसी भी समस्या के समय उनकी लेखनी ने कार्य करने में संकोच नहीं किया, अपितु बड़ी ही निर्भीकता से किया।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि आर्यसमाज के सामने पटियाला में एक बड़ा ही संकटमय समय उपस्थित हुआ, उस समय श्री महात्मा मुंशीराम जी ने

अपनी वकालत के कार्य को पुनः जारी किया था और आर्यसमाज के कार्य-कर्त्ताओं और समाज मन्दिर की रक्षा का कार्य पूर्ण किया था, परन्तु श्री महाशय जी की लेखनी ने जो अद्वितीय कार्य करके उस केस को जो सहयोग प्रदान किया था, उसकी सारे आर्यजगत ने प्रशंसा की थी। एक बार फिर खालसा पंथ की हकीकत नामक पुस्तक का अभियोग भदोड़ रियासत पटियाला में ही मास्टर रीनकराम विश्वम्भर नाथ जी पर चला तो उस समय भी महाशय जी की लेखनी द्वारा पचासों लेख लिखे गए जिनमें उस पुस्तक में लिखी बातों को सत्य सिद्ध किया गया था।

ठीक उसी प्रकार का एक अभियोग अमृतसर के मासिक पत्र 'वर्तमान' पर अंग्रेज सरकार द्वारा लाहौर हाई कोर्ट में चलाये जाने पर उसकी पुष्टि में भी श्री महाशय जी की लेखनी ने लगभग चालीस लेख लिखे थे। जो आर्यसमाज के लिये बड़े उपयोगी सिद्ध हुए।

अंग्रेज सरकार तो हर समय ही इस खोज में रहती थी कि महाशय जी की लेखनी पर किसी प्रकार प्रतिबन्ध लगा दिया जाय क्योंकि पंजाब के उर्दू पत्रों में उनकी तुलना का निडर कोई लेखक न था। इस प्रकार सदैव यत्न होते रहते कि किसी प्रकार इस कलम का लिखना रुक जाए, परन्तु सरकार को सदैव मुँह की ही खानी पड़ी थी।

श्री महाशय जी आर्य समाज में शिरोमणि नेता के रूप में रहे, पंजाब की आर्य प्रतिनिधि सभा के आप एक लम्बे समय तक मंत्री और वर्षों प्रधान भी रहे, महर्षि जी की स्थापित की हुई परोपकारिणी सभा के आप वर्षों से ही प्रधान चले आ रहे थे, बड़े योग्य महात्मा और संन्यासी तथा आर्य समाज के कार्य-कर्त्ता लोग आप से सदा विचार विनिमय करके ही कार्य किया करते थे, श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्री स्वामी सत्यानन्द जी, श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी सब ही आपसे विचार विमर्श करते रहते थे, श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी को कलकत्ता आर्य महासम्मेलनों में गोरक्षा आन्दोलन का जब सारा भार सौंप दिया गया तो आपका उसके लिए भारत भ्रमण करने का निश्चय करके यात्रा को चलने से पूर्व महाशय जी से विचार हुआ तो महाशय जी ने कहा स्वामी जी इसमें तो कोई तत्त्व दिखाई नहीं देता, पर आप वचन दे चुके हैं तो जाना ही चाहिये, ऐसे थे आदर्श वीर महाशय जी।

सुधन्य नेता

श्री पं० आनन्दप्रिय

आर्यसमाज का प्रारम्भ संघर्षों में ही हुआ और उसकी जीवन शक्ति का मापदण्ड संघर्षों में विजय होने से ही हमें मिलता है। समाज के समालोचकों ने आर्यसमाज को *Millitant church* के रूप में ही देखा, कारण आर्य-समाज स्वर्गीय महाशय कृष्ण जी के वम्बई में दिये हुए एक भाषण के अनुसार इस देश में तीन क्रान्तियों का प्रवर्तक बनके जन्मा।

आर्यसमाज तीन दासताओं का उन्मूलन करने के लिये मैदान में उतरा था। धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक तीनों प्रकार की दासताओं में यह देश ग्रसित था और उसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द तथा उसके अनुयायियों ने इन्हीं तीनों के सामने अपना मोर्चा खड़ा किया।

आर्यसमाज के सिपाही और नेता इन्हीं क्षेत्रों में चमके और उनकी संगठित शक्ति इसी में लगती रही।

महाशय कृष्ण जी आर्यसमाज के उस युग के नेता थे, जब आर्यसमाज को धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य करना पड़ा। महाशय जी ने पंजाब आर्यसमाज का नेतृत्व ग्रहण कर तीनों क्षेत्रों में स्वर्णाक्षरों में अंकित होने योग्य महत्वपूर्ण काम किया।

महाशय जी एक केस के कारण बड़ीदा पधारे। प्रथमवार उन्होंने आर्य कन्या महाविद्यालय को देखा। संस्था के एक बार देखने के पश्चात् वह एक नेता के रूप में उसकी प्रगति तथा भविष्य के लिये चिन्तित रहते।

टंकारा ट्रस्ट के वह एक सक्रिय ट्रस्टी थे। टंकारा में एक प्राणवान कार्य हो इसकी चिन्ता उन्हें अर्हनिश रहती थी। उद्घाटन के समय उनके

लेखों ने आर्य जगत् को टंकारा के प्रति जागृत कर दिया। उनके प्रताप दफ्तर में टंकारा की सहायता के लिये पैसा बढ़ाधड़ आने लगा। उन्होंने उसके लिए दफ्तर में एक विभाग खोल दिया। स्वास्थ्य के ठीक न होने कारण वे टंकारा की यात्रा न कर सके। परन्तु टंकारा के कार्य की चिन्ता उनके दिमाग में बनी रहती।

जब कभी मैं मिलता हमेशा पूछते कि विद्यालय तथा ट्रस्ट में क्या हो रहा है। परोपकारिणी सभा, ट्रस्ट की सभा पर बातचीत में वह अपना मत जोरदार शब्दों में रखते और प्रायः सदस्य उनके विरुद्ध मत रखने पर भी उनकी झलीलों तथा मत का समर्थन करने को तैयार हो जाते।

महाशय कृष्ण जी मूर्त रूप में आर्यसमाज की संस्था थे। उनका एक-एक पल आर्यसमाज एवं राष्ट्र के कल्याण के कार्यों में ही व्यतीत हुआ। उन्हें अपनी बीमारी की अपेक्षा आर्यसमाज की तथा राष्ट्र के कर्णधारों की आर्य-संस्कृति की उपेक्षा करने की विघातक नीति के लिए अधिक चिन्ता थी।

उनके कटाक्ष तथा समालोचना प्रतिपक्षियों को विचलित करने का सामर्थ्य रखती पर उनका हृदय अमृत से भरा था। उनका मतभेद व्यक्तिवाद पर नहीं सिद्धान्तवाद पर आधारित था। मुझ से पुत्रवत् प्रेम करते हुए भी जब कभी किसी बात की समालोचना करते तो मुझे मेरे स्वर्गीय पिता मास्टर आत्माराम जी याद आ जाते और मैं अनुभव करता कि महाशय कृष्ण जी के युग के आर्य अगाध प्रेम रखते हुए भी सिद्धान्तों के क्षेत्र में वह किसी भी अवस्था में अपने पुत्र पर भी दया नहीं करेंगे।

महाशय कृष्ण जी के निधन से आर्यसमाज का वह युग समाप्त हो गया, जिस युग के आर्यों ने आर्यसमाज को वर्तमान स्वरूप दिया।

दूरदर्शी

श्री मदनजित् आर्य

१९२१ की बात है कि पूज्य महाशय जी के सहपाठी गुरुवर श्रद्धेय पूज्य पं० विष्णुदत्त जी वकील के साथ मैंने लाहौर में प्रकाश के दफ्तर में इनके दर्शन किये। पं० जी ने मेरा परिचय उनसे कराया तो उन्होंने आशीर्वाद दिया कि आर्यसमाज की सेवा करते रहना और स्वाध्याय भी जारी रखना। मैं उन दिनों स्थानिक किले के अन्दर जहाँ मुसलमानों के मिर्जई फिरके की अति संख्या थी क्लर्क था और वहाँ यह “नूर” मुझे प्रायः पढ़ाते थे जिसमें आर्यसमाज के विरुद्ध बहुत कुछ लिखा होता था। मैंने पूज्य महाशय जी से प्रार्थना की कि आप इनका उत्तर दिया करें। उन्होंने संक्षेप से उत्तर दिया कि मैं तो आजकल अधिकतर प्रताप अखबार दैनिक के लिये ही लिखता हूँ। अवकाश कम होने के कारण इधर ध्यान तनिक कम ही है हाँ यदि तुम उत्तर दो तो मैं अपने पत्र में प्रकाशित कर दूँगा।

उनके इन उत्साह भरे शब्दों ने मुझे प्रेरणा दी कि मैं इनके लेखों का प्रत्युत्तर लिखूँ। अतः कुलियात आर्य मुसाफिर तथा सत्यार्थ प्रकाश को सामने रखकर उत्तर लिखने प्रारम्भ किये। पहला ही यह लिखने का अवसर था उद्दो भी कम ही आती थी। परन्तु महाशय जी के पास जब यह मेरे उत्तर पहुँचे तो उन्होंने अति कृपा करके उनका संशोधन करके प्रकाशित कर दिया, जिससे मेरा उत्साह भी बढ़ा और मुसलमान मिरजइयों को सहसा यह लिखना पड़ा कि “यह मदनजित् आर्य कौन”।

हमने यहाँ पर अछूतोद्धार का कार्य जब १९२७ में प्रारम्भ किया तो एक दलितोद्धार सम्मेलन रखा। पूज्य महाशय जी ने सभापति होना स्वीकार किया, फिरोजपुर के इतिहास में इतनी भारी संख्या में उनकी शोभा यात्रा निकली कि उन पौराणिकों पर बहुत ही प्रभाव पड़ा जो छूआछूत के पक्ष में थे। पूज्य महाशय जी ने अति मार्मिक शब्दों में हिन्दुओं को उनके कर्त्तव्यों का ज्ञान कराया।

इसी भाँति यदा कदा महाशय जी फिरोजपुर में आते ही रहे। एकदा पूज्य महाशय जी को रात की ९ बजे की मेलगाड़ी से देहली जाना था और रात को उनका व्याख्यान भी था। उन्होंने कह दिया कि मैं व्याख्यान ८ से ८।॥ बजे तक दे दूँगा जब ८ बजे तो उपस्थिति केवल ५ व्यक्ति ही थे मैंने प्रार्थना की कि तनिक और भजनों का कार्य-क्रम कर लें तो उन्होंने कहा कि जब ८ बजे की घोषणा हो चुकी है तो अब चाहे थोड़ी संख्या हो अथवा अधिक मैं व्याख्यान बोल ही दूँगा, ठीक ८ बजे इतनी उपस्थिति हो गई कि पंडाल सब भर गया।

दूरदर्शी इतने थे कि जो बात एक वर्ष में होनी होगी वह पहले ही जिता देते। मैंने सभा के अधिवेशनों में तथा परोपकारिणी के अधिवेशनों में उनकी इस तार्किक बुद्धि का दृश्य भली-भाँति देखा।

मित्रता उनके भीतर कूट कूट कर भरी हुई थी। जिस किसी को अपना मित्र या भाई कहा वस सारी आयु ही उसके साथ रहे।

पूज्य महाशय जी कई संस्थाओं के रक्षक तथा संस्थापक थे। अन्त में सभी से अनुरोध करूँगा कि उनकी पुण्य स्मृति को अपने जीवन में धारण करते हुए यह प्रण करें कि वह भी महाशय जी की भाँति सोते जागते, काम करते या आराम करते हुए अर्हनिश आर्यसमाज के कार्यों को ही मुख्यता दिया करेंगे और स्वजीवनी में उनके शतशः गुणों में से अवश्य कुछ न कुछ धारण करके अपने को शोभायमान करेंगे।

हम ऋणी हैं !

कविराज रामसिंह वैद्य

इस नश्वर संसार में प्रतिदिन अनेकों प्राणी शरीर धारण करते और छोड़ते रहते हैं। उनके सीमित क्षेत्र के कुछ व्यक्तियों को छोड़ कर इसका और किसी को पता भी नहीं लगता। किन्तु जिन महानुभावों ने अपनी उदारता, सद्भावना, सद्गुणों, सेवा भाव और कर्त्तव्य परायणता से जितना अधिक अपने क्षेत्र को विस्तार दिया हो उतने ही अधिक क्षेत्र के व्यक्ति उनके जीवन से प्रभावित हुआ करते हैं और उनके लिये उनके वियोग की अनुभूति एक स्वाभाविक बात बन जाया करती है। इसी प्रकार के श्रेष्ठ महानुभावों में से हमारे स्वर्गीय महाशय कृष्ण जी हैं। एक साधारण से परिवार में जन्म लेकर मिशनरी स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करके उन्होंने आर्य-जाति और सारे राष्ट्र की जो सेवा की है उसके कारण उनकी केवल भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी ख्याति है। उनके साथ मेरा सम्बन्ध इस प्रकार पड़ा :—

मैं १९३९ से ४४ तक लाहौर डी० ए० बी० कालेज में जव पढ़ा करता था तो परम पिता की कृपा तथा गुरु जनों के आशीर्वाद से वैदिक आश्रम संत नगर लाहौर में रहा करता था और रविवार को प्रायः अनार कली समाज के सत्संग में सब विद्यार्थियों के साथ जाया करता था। कभी वच्छो वाली (लाहौर) समाज में कोई विशेष व्याख्यान हुआ करता था तो हम कुछ विद्यार्थी वहाँ जाया करते थे और स्वर्गीय महाशय कृष्ण जी के दर्शन वहाँ हुआ करते थे और उनके सद्बिचार वहाँ सुनने का अवसर मिला करता था।

उसके पश्चात् १९५६ में पूज्य स्वर्गीय गुरुवर स्वामी आत्मानन्द जी

महाराज के वैदिक आश्रम यमुनानगर के उत्सव के अवसर पर उनके दर्शन करने का सौभाग्य मिला। बन्द गले का कोट, सफेद पगड़ी पहने भारतीय वेश-भूषा में उनकी प्रभावशाली आकृति आज भी मेरी आँखों के सामने है।

अपनी लेखनी द्वारा संग्राम प्रोग्राम प्रताप समाचार द्वारा करते रहे। १९४७ में भारत के स्वतन्त्र होने पर अपनी सरकार की जहाँ तक उनको जो त्रुटि प्रतीत हुई उसका प्रतीकार उसी प्रकार पूर्ण निर्भीकता के साथ व निडरता के साथ वे करते रहे। सम्भवतः महाराणा प्रताप के नाम पर ही उन्होंने अपने समाचार पत्र का नाम प्रताप रखा हो और जिस प्रकार आर्य जाति के रत्न महाराणा प्रताप ने लाखों कष्ट सहे, जंगलों की खाक छानी, घास की रोटियाँ खाई, फाके भी सहे किन्तु उन्होंने कभी यवनों के सामने झुकने का नाम नहीं लिया, इसी प्रकार उसी भावना से प्रेरित होकर स्वर्गीय महाशय कृष्ण जी ने भी जब जिस बात को गलत समझा वहीं उसका प्रतीकार सदा निडरता और निर्भीकता से किया। इस विषय में उन्होंने कभी डर की तनिक भी भावना नहीं दिखाई। उनके पत्र प्रताप में मैंने उनके यह सदा याद रखने योग्य शब्द “यह गर्दन कट सकती है परन्तु झुक नहीं सकती” कई बार पढ़े और पाठकों ने भी पढ़े होंगे।

उनके जीवन में अनेकों गुण थे। किन्-किन का वर्णन किया जावे। उन की उदारता और सद्भावना का एक उदाहरण देकर मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि उपस्थित करता हूँ।

पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने जब संन्यास की दीक्षा वैदिक साधनाश्रम में स्वर्गीय गुरुवर स्वामी आत्मानन्द जी महाराज से ग्रहण कर ली तो स्वर्गीय महाशय कृष्ण जी ने जो विचार अपने पत्र प्रताप में इस विषय में लिखे थे वे उनकी महानता, उदारता और उच्च भावना को दर्शाने वाले हैं। वे शब्द मैंने प्रताप में पढ़े थे और आज तक मुझे याद हैं। जो लगभग इस प्रकार थे—

“श्री महाशय खुशहालचन्द जी यद्यपि आयु में मेरे से छोटे हैं किन्तु अपने तप और त्याग, वैराग्य और बलिदान की भावना के कारण संन्यास ग्रहण करके मेरे से आगे बढ़ गए हैं। इसके लिए मैं उनको हार्दिक बधाई देता हूँ।”

अनेकों गुण थे उस महापुरुष के जीवन में, बड़ी सेवा की आर्य जाति की, आखिरी श्वास तक भी लगे ही रहे। लगभग ६० वर्ष तक उनका जीवन देश और जाति की सेवा में बीता। हम सब उनके बहुत ऋणी हैं। ●

मेरे बड़े भाई

डाक्टर लालचन्द जी अम्बाला छावनी

स्वर्गीय महाशय कृष्ण जी के साथ गत ५० वर्षों से मेरा छोटे-बड़े भाई का सम्बन्ध चलता आ रहा था, जो कि खेद है कि गत २४ फरवरी को दूद गया, और मैं अपने आपको 'भ्रातृविहीन' अनुभव करने लगा।

लाहौर में रहते हुए आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में आने-जाने से मेरा उनसे परिचय हुआ और भाईपने का सम्बन्ध स्थापित हुआ जो कि अन्त तक बराबर निभता रहा। विभाजन से पूर्व वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अनेक वर्षों मंत्री और प्रधान रहे, उनके मंत्रित्व व प्रधानत्व के समय में मैं अंतरंग सदस्य के रूप में उन्हें निकट से देखता रहा। उनकी कार्य कुशलता और दूरदर्शिता का मुझ पर अद्भुत प्रभाव पड़ा। अपने घरेलू धन्धों को करते हुए भी आर्य समाज की सेवा का ढंग मैंने उनसे ही सीखा था।

विभाजन के बाद वह दिल्ली आ गए, अब जब वह दिल्ली से जालन्धर और जालन्धर से दिल्ली जाते-आते थे, मुझे पत्र द्वारा मिलने के लिए स्टेशन पर बुला लिया करते थे, ऐसे अवसरों पर मुझे अपने बड़े भाई की सेवा और दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हो जाता था, चित्त को विशेष शान्ति मिलती थी। जब कभी उन्हें मेरी अस्वस्थता का समाचार मिलता, तो वह भागे-भागे मुझे देखने आते और घण्टों बैठे रहते। उनके चिरंजीव सुपुत्र वीरेन्द्र जी भी उनके साथ प्रायः मिलते रहे।

श्री महाशय जी के 'प्रकाश' पत्र का मैं बहुत प्रेमी था, और दीवाली व शिवरात्रि के अवसरों पर इस पत्र के विशेषांकों की सैकड़ों प्रतियां सर्वसाधारण

में बिना मूल्य बांटा करता था, 'प्रकाश' पत्र को पढ़कर अनेक अन्धकार मय आत्माओं को प्रकाश मिला, और वह आर्य समाज की ओर झुकीं। 'प्रकाश' पत्र द्वारा महाशय जी ने आर्य समाज के सिद्धान्तों का खूब प्रचार किया और आर्य समाज की प्रतिष्ठा को जन साधारण में बढ़ाया। वह लेखनी के धनी थे, इसीलिए उनके विरोधी भी जब तक उनके पत्रों 'प्रकाश' व 'प्रताप' में मुख्य सम्पादकीय लेखों को न पढ़ लें तब तक उन्हें सन्तोष नहीं आता था। प्रकाश पत्र के बाद 'प्रताप' द्वारा जो उन्होंने राष्ट्रीय व सामाजिक सेवाएँ की हैं वह भी चिरस्मरणीय रहेंगी। जहाँ वह अच्छे लेखक थे, वहाँ वह अच्छे वक्ता भी थे। मंत्री व प्रधान होने के नाते वह आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सवों पर प्रायः प्रति सप्ताह जाते थे। वेद प्रचार के लिए उनकी अपील पर हजारों रुपया आ जाता था। उनकी प्रलोक अपील सार्थक होती थी, जनता की उन पर अगाध श्रद्धा थी।

दिल्ली में रहते हुए भी उनको पंजाब का विशेष ध्यान रहता था, जब भी पंजाब पर कोई संकट आया, महाशय जी ने बल पूर्वक उसके निवारण का प्रयत्न किया। हिन्दी आन्दोलन को भारत व्यापी रूप देने वाले भी मेरे बड़े भाई ही थे। स्वयं रोगी होते हुए भी उसमें सक्रिय भाग लिया, जेल में गए। राजनीतिक आन्दोलनों में भी अनेक बार जेल यात्रा की। देश भक्ति उनमें फूट फूट कर भरी हुई थी, आर्य नेता होने के कारण वह आरम्भ से ही खादीधारी रहे। उनमें अनेक गुण थे, वह पहिले आर्य समाजी थे और बाद में और कुछ। मेरे विचार में उनके वियोग से जो क्षति आर्य जगत् को पहुँची है। वह सर्वथा अपूरणीय है। मैं इन पंक्तियों द्वारा अपने बड़े भाई के चरणों में श्रद्धांजलि भेंट करता हूँ।

अविचल नेता

पं० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

आर्य समाज जैसी विशाल एवं सार्वभौमिक संस्था को इस बात पर गुरु गर्व है कि उसका महान् संस्थापक देव दयानन्द अपने निर्धारित लक्ष्य और निश्चित पथ पर चलते हुए किसी प्रलोभन, आतंक व अन्य विचारों के भ्रम-वात से कभी विचलित नहीं हुए। उनके संस्थापित आर्य समाज को लेकर आगे चलने वाले बाद में जितने महानुभाव इस मैदान उतरे, उनके जीवन में अपने गुरु का यह गुण विद्यमान था। पुरातन पीढ़ी के जिन आदर्श व्यक्तियों में यह निर्भीकता, निष्ठा और किसी मूल्य पर भी असत्य एवं अन्याय के सामने न न झुकने-दबने की भावना रोम-रोम में भरी हुई थी, उनमें ही स्वर्गीय महाशय कृष्ण जी की गणना होती है।

स्वर्गीय महाशय कृष्ण जी जन्मसिद्ध नेता थे। उनको ऐसे विचार तथा संस्कारों का भण्डार जन्म घुट्टी में ही मिला था। अपनी बाल्यावस्था में ही उनकी बात निश्चित हुआ करती थी। अपने कथन पर डट जाते थे। अपने साथियों के साथ न बह कर उनको अपने विचारों का बना देते थे।

महाशय जी का जीवन केवल पारिवारिक ही नहीं था प्रत्युत् सामाजिक था। परिवार में बैठकर भी सारे समाज के थे। सारे समाज के नेता थे। प्रताप के द्वारा अपनी दैनिक वाणी द्वारा समाज के हजारों नर नारियों के साथ अपनी बातचीत किया करते। भगवान् ने उनकी कलम पर जादू का प्रभाव करने का वरदान-सा दे रखा था। जब लिखते थे, सरल तो होता था पर उस

सरलता में प्रभाव का सागर हिलोरें लेता प्रतीत होता था, कलम के जादूगर थे। उनकी कलम का लोहा अपने पराये सारे मानते थे। लिखते हुए मन की आवाज सुनाने में तनिक भी भयभीत नहीं होते थे। कोई अपना नाराज होगा, राष्ट्र का बड़ा व्यक्ति रुष्ट हो जायगा, प्रताप बन्द हो जायगा या जमानत माँग ली जायगी, या जेल जाना पड़ेगा अथवा सेंसर बिठा दिया जायगा, इन सारे भय के कारणों पर उनका तनिक ध्यान भी नहीं था। उनके साथ ये सारे काण्ड हुए। जेल भी गये, प्रताप पर सेंसर भी बैठा, प्रतिबन्ध भी लगा, जमानतें भी जव्त हुईं। सर सिकन्दर जैसे मुख्यमंत्रियों ने धमकी भी दी, पर क्या मजाल कि महाशय जी तनिक भी विचलित हुए हों। उनका राष्ट्रविभाजन से पूर्व भी और बाद भी एक ही वीरता भरा सबको उत्तर था कि मेरी गर्दन कंट तो सकती है पर झुक नहीं सकती। कोई एक मोर्चे पर लड़ता है तो कोई दो पर किन्तु स्वर्गीय महाशय जी एक साथ कई मोर्चों पर अकेले लड़ना जानते थे और विजयी होते थे। राष्ट्र के प्रधान मंत्री श्री नेहरू जी तथा राष्ट्रपति जी को स्पष्ट दो बातें कहना उनका ही कार्य था। उनके बाद अब ऐसा साहस किस को होगा? सत्य पर समझौता करना जानते थे।

श्रामान् मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी राज्यरत्न

राजमित्र की सचित्र जीवनी आदर्श दम्पति पुस्तक में पढ़ें।

पृ० सं० १६० से ऊपर	मू० २.५० डाक व्यय
नैसर्गिक नारी सौन्दर्य पृ० सं० १५६ से ऊपर	
आर्ट पेपर पर ३७ चित्र डारुव्यय पृथक् । सजिल्द	मू० ३.५०
वैदिक ज्योति पृ० सं० २५०	मू० ७.००
कर्म मोमांसा पृ० सं० २२५	मू० २.५०
शिक्षण तरंगिणी पृ० सं० २२०	मू० ५.००
विश्व धर्म परिचय पृ० सं० ५५० डाक व्यय पृथक्	मू० ६.२५

प्राप्ति स्थान :—

जयदेव ब्रादर्स बड़ौदा-१

विशेष गुण

आचार्य भद्रसेन अजमेर

यूँ तो महाशय जी का जीवन अनेक महान् गुणों का भण्डार था । किन्तु उनके अन्दर जो एक विशेष गुण था, वह था आर्य समाज तथा वैदिकधर्म के प्रति अनन्य प्रेम तथा अगाध उत्साह । उन्हें रात-दिन उठते-बैठते आर्य समाज की ही धुन लगी रहती थी । उनके व्याख्यान तथा लेख लोगों के दिलों में आर्य समाज के प्रति एक नया जोश और उत्साह उत्पन्न कर देते थे ।

प्रायः आर्य समाज के नेताओं तथा कार्यकर्त्ताओं के अन्दर एक भारी त्रुटि देखी गई है । वे जब तक आर्य समाज का कार्य करते रहते हैं, तबतक तो वे आर्य समाज के बने रहते हैं, आर्य समाज के गुण भी गाते हैं, किन्तु आर्य समाज से थोड़ा सा हटते ही वा अन्य किसी राजनैतिक आदि क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ करते ही, प्रकाशवीर, सिद्धान्ती जी, अलगूराय जी आदि अपवादों को छोड़कर वे आर्य समाज को बिल्कुल भूल जाते हैं । उस समय वे आर्य समाज का कार्य करना या उसके गुणों का बखान करना तो जुदा, आर्य समाज का नाम लेना भी मानो पाप समझते हैं । परन्तु महाशय जी के अन्दर यह बात नहीं थी । वे जिसे किसी क्षेत्र में कार्य करते, आर्य समाज को कभी नहीं भूलते । वे राजनीति आदि किसी भी विषय पर बोलते या लिखते, उसमें आर्य समाज की पुट अवश्य लगी रहती थी । यही कारण है कि उनके लेखों तथा व्याख्यानों को पढ़ तथा सुनकर लोग आर्य समाज के भक्त बन जाते थे । वे बोलते या लिखते हुए लोगों के दिलों में वैदिक धर्म के प्रति एक नई राह फूंक देते थे ।

उनके 'प्रकाश' अखबार के कड़कते हुए जोशीले लेखों ने सैंकड़ों युवकों को आर्य समाज का भक्त बनाया था। मेरे अन्दर भी वैदिक धर्म तथा आर्य समाज के प्रति उत्साह तथा लगन पैदा करने में 'प्रकाश' का भारी हिस्सा है। मैं विद्यार्थी काल में लाहौर, अमृतसर आदि स्थानों में शिक्षा ग्रहण करते हुए महाशय जी के प्रकाश को अवश्य पढ़ा करता था। प्रकाश का पढ़ना मानो मेरे विद्यार्थी जीवन का एक अङ्ग ही बन गया था। उससे मुझे प्रेरणा तथा उत्साह मिलता। मैं विद्यार्थी काल में यदा कदा प्रकाश में लेख भी लिखा करता था। प्रकाश के ऋष्यङ्क तो मानो अपनी मिसाल आप ही होते थे। प्रकाश के ऋष्यङ्कों के ऋषि की महिमा तथा उनके गुणानुवाद परक लेख तो ऋषि दयानन्द के प्रति लोगों में अनन्य श्रद्धा तथा अगाध भक्ति उत्पन्न कर देते थे। यह सब महाशय जी की आर्य समाज तथा वैदिक धर्म के प्रति लगन तथा ऋषि दयानन्द के प्रति अनन्य भक्ति का ही परिणाम था। खेद है कि आज वे आर्य समाज के दीवाने तथा ऋषि के अनन्य भक्त या कृष्ण जी हमारे बीच में नहीं रहे। उनके जाने से आर्य समाज की जो भारी क्षति हुई है। उसकी पूर्ति शायद ही हो सके।



शीघ्र मंगाएँ !

धर्मवीर पं० लेखराम का जीवन चरित्र

अमर शहीद स्वा० श्रद्धानन्द की लौह
लेखनी से लिखित

अधिष्ठाता,

[पृष्ठ लगभग १२५ : १२५]

प्रकाशन विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

गुरुदत्त भवन, जालन्धर।

प्रेरणा के स्रोत

श्री ओम्प्रकाश, एम० ए०, बी० टी०

कोई २० वर्ष की बात है, मैं डी०ए०वी० कालेज लाहौर में पढ़ता था एवं उसके होस्टल में रहता था। वहाँ की आर्य युवक समाज प्रतिवर्ष आर्य नेताओं की एक भाषण-माला का आयोजन किया करती थी। एक दिन पूज्य महाशय जी का भाषण था। मैंने उनका 'प्रताप' कभी-कभी देखा था, पर उन के दर्शन अभी नहीं किये थे। अतः उत्सुकता-पूर्वक उनके भाषण को सुनने गया।

वे बोलने लगे। आरम्भ में ही उन्होंने कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि प्रिंसिपल महोदय श्री मेहरचन्द जी ने मुझे यहाँ बोलने की आज्ञा दे दी है। आर्य समाज के दुर्भाग्य से पंजाब में गुरुकुल व कालेज सैक्शन का भेद चल पड़ा। मुझे यहाँ बुला कर उन्होंने इस भेद को कम करने का सराहनीय कार्य किया है। तत्पश्चात् उनकी युक्ति-प्रबलता में जो जादू मुझे दीखा, उसने मुझे मोहित कर लिया। अपने आचार्य महर्षि दयानन्द के मिशन की तड़प उनके एक-एक शब्द में दीखती थी और नवयुवकों को उसके लिए कार्य करने का आह्वान उन्होंने प्रबल शब्दों में किया।

मुझे संस्कारवश आर्य समाज के प्रति अटूट श्रद्धा तो थी, पर इस के लिये कार्य करने का प्रोत्साहन अभी जाग्रत नहीं हुआ था। वह मुझे महाशयजी के भाषण से प्राप्त हो गया। मुझे एक अद्भुत प्रेरणा मिली और मैं नित्य 'प्रताप' में उनके सम्पादकीय लेख पढ़ने लगा। जादू की लेखनी ने अन्य बातों के साथ मुझे निरन्तर आर्य समाज की तन-मन-धन से सेवा करने की प्रेरणा दी। पाकिस्तान

वनने से कुछ समय पूर्व उन्होंने तुलसी रामायण की बात लिख कर कहा कि जैसे हनुमान जी ने सीता माता द्वारा दिए गए हार के मनकों में श्री राम की मूर्ति देखनी चाही थी, उसी प्रकार मैं देश, प्रान्त तथा धर्म आदि के प्रत्येक मामले में कसीटी, 'आर्य रत्न तथा आर्यावर्त' को बनाता हूँ। जिस शान से उन्होंने सारी आयु इस बात को निभाया और उसकी रक्षा के लिए वे बेगानों और अपनों से लड़ते रहे तथा आर्थिक हानि भी उठाते रहे, वह उनका अपना ही भाग है और आर्य समाज के सेवकों तथा भारत-माता के सच्चे सपूतों के लिए प्रेरणा का स्रोत !

अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक वे ऐसी प्रेरणा देते रहे। अपने जीवनान्त के दो दिन पूर्व २२ फरवरी, १९६३ ई० को हुए ऋषि बोधोत्सव में अपने लिखित अध्यक्षीय भाषण में, जिसको पढ़ने का सौभाग्य इन पंक्तियों के लेखक को प्राप्त हुआ, उन्होंने अद्भुत प्रेरणा आर्य कार्यकर्त्ताओं तथा नेताओं को दी। और अपनी जीवन-यात्रा की अन्तिम सायं को कांस्टीच्यूशन क्लब में दिल्ली के नागरिकों द्वारा आयोजित ऋषि बोधोत्सव में जहाँ भारत के महामान्य राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् जी भी उपस्थित थे, उन्होंने श्री ला० रामगोपाल जी को कहा कि "आर्य समाज को राष्ट्र-भाषा हिन्दी का मामला पूरे बल के साथ अपने हाथ में ले लेना चाहिए।"

उस प्रेरणा के स्रोत की धारा घर के भीतर और बाहर दोनों स्थानों पर प्रवाहित होती रही। वे वस्तुतः एक जीती जागती संस्था थे। उन्होंने कईयों को लिखना सिखाया और कईयों को वक्ता बनने की प्रेरणा दी। कईयों को देश तथा जाति की सेवा के लिए उत्साहित किया और कईयों को उसके निमित्त संघर्ष के लिए तैयार किया। कुछ को कहा कि उपदेशक बन जाओ और कुछ को एम० पी० बनने का प्रोत्साहन दिया।

भगवान् करे कि हम प्रेरणा के उस स्रोत से सदैव प्रेरणा लेते रहें। और महर्षि दयानन्द के धार्मिक व राष्ट्रीय क्रान्ति के महान् मिशन की पूर्ति करने में निरन्तर अग्रसर होते रहें।



प्रकाश स्तम्भ

श्री राजा राधासिंह आर्य

मैंने स्वर्गीय महाशय कृष्ण जी को दूर से तथा निकट से भी देखा है। उनका जीवन बहुत पवित्र तथा उत्साह-पूर्ण था। उनके पृथक् होने से एक उच्च कोटि का पथ-प्रदर्शक, देश का प्रकाश-स्तम्भ, आर्य-समाज का प्राण, ऋषि दयानन्द का अनन्त भक्त तथा उच्चकोटि का लेखक हमसे सदा के लिए पृथक् हो गया।

सबसे प्रथम मैंने इस महान् नेता के दर्शन १९२६ में किए। जब मैं आर्य समाज पसखर (जिला स्यालकोट) का मंत्री था। श्री चिरंजीलाल जी एडवोकेट उस समय आर्य समाज के प्रधान थे जिनके साथ पूज्य महाशय जी का घनिष्ठ सम्बंध था। जो ओजस्वी भाषण उन्होंने उस समय दिया, वह आज तक मुझे नवीन उत्साह और उत्तम प्रेरणा देता है। और उसी व्याख्यान से प्रभावित होकर मैंने अपने आपको एक सिख परिवार से होते हुए भी आर्य समाज के क्षेत्र में डाल दिया। इसके पश्चात् लगातार २०-२२ वर्ष तक मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा का सदस्य रहा। और इस समय मैंने स्वर्गीय महाशय जी को निकट से देखा। मैं सर्वदा उनके उच्च जीवन से नवीन उत्साह प्राप्त करता रहा। जिसका यह फल मुझे प्राप्त हुआ कि मेरे हृदय में आर्य-समाज के लिए प्रेम तथा ऋषि दयानन्द के लिए श्रद्धा पैदा हुई है। और आर्य समाज की सेवा में मैंने जो पग आगे बढ़ाया था, वह सर्वदा उन्नत होता

गया। पूज्य महाशय जी ने आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब की जो सेवा महा मन्त्री तथा प्रधान के रूप में की है। वह आर्य समाज के इतिहास में सर्वदा स्वरणिम अक्षरों में लिखी रहेगी।

एक बार सभा के वार्षिक अधिवेशन में जो कि देश के विभाजन के पश्चात् गुरुकुल-काँगड़ी में हुआ था, स्वर्गीय महाशय जी के विरुद्ध कुछ आलोचना करने की घृष्टता की थी। उस अधिवेशन में वह सर्व-सम्मति से प्रधान चुने गए थे और उन्हें सभा के अधिकारी तथा अन्तरंग सभा के सदस्य नियत करने का पूर्ण अधिकार दिया गया था। स्वर्गीय महाशय जी की उदारता देखिये कि मैंने जो उनकी आलोचना की थी उन्होंने उस ओर ध्यान न देकर मुझे अन्तरङ्ग सभा का सदस्य फिर नियत कर दिया। इससे पता चलता है कि वह कितने उदार हृदय थे।

देश के विभाजन के पश्चात् जब मैंने अम्बाला-छावनी में आकर आर्य-समाज-कच्चा बाजार की सेवा का कार्य आरम्भ किया तो पूज्य महाशय जी ने पहले से भी अधिक स्नेह तथा कृपा का हाथ मेरी ओर बढ़ाया। मुझे याद नहीं कि उन्होंने कभी मेरी प्रार्थना पर इस छोटी सी समाज में पधार कर हमारा उत्साह न बढ़ाया हो।

महाशय जी का जीवन जहाँ सारा का सारा आर्य-समाज की सेवा तथा वैदिक धर्म के प्रचार में लगा, वहाँ वह सर्वदा देश की राजनीति पर भी अपने उच्च लेखों तथा अपने प्रभावशाली भाषण द्वारा अपना प्रभाव डालते रहे।

देश की कोई ऐसी समस्या न होगी जिसके समाधान के लिये उन्होंने हर प्रकार के व्यक्तियों का पथ-प्रदर्शन न किया हो। उनके पृथक् हो जाने से निस्संदेह आर्य जगत तो अनाथ हुआ ही है किन्तु इसके साथ-साथ सारे देश का महान नेता इस संकट काल में जबकि उनके पथ-प्रदर्शन की अत्यन्त आवश्यकता थी, हम से विदा हुए हैं। वह हम सबके लिए प्रकाश-स्तम्भ थे।



अपूरणीय क्षति

श्री पं० रघुवीरसिंह शास्त्री

महाशय कृष्ण जी के देहावसान से आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी का एक नेता, प्रतिनिधि तथा विचारक हमसे छिन गया। महाशय जी उन गिने-चुने व्यक्तियों में से एक थे, जिनका आर्यसमाज के प्रचार तथा संगठन को व्यापक बनाने में प्रमुख हाथ रहा या जो आर्य समाज की उच्चस्तरीय नीति-रीतियों का निर्माण करते रहे हैं। उनकी अपनी योग्यता, सेवा तथा व्यक्तित्व का ही यह प्रभाव था कि वे बहुत लम्बे समय तक आर्य समाज के प्रवक्ता माने जाते रहे। विशेष रूप से पंजाब की राजनीति में तो वह सदा ही हिन्दू पक्ष और आर्य समाज के विचारों के प्रतिपादक रहे। यद्यपि राजनैतिक क्षेत्र में वह कभी किसी महत्वपूर्ण पद पर आरूढ़ नहीं रहे, परन्तु उनके शब्द बाणों से अच्छे-अच्छों के आसन डोलते थे। पंजाब में स्वराज्य से पहले या पीछे जितने भी व्यक्ति या दल शासनारूढ़ हुये, महाशय जी ने किसी को कभी चैन से साँस नहीं लेने दी। आज का उनका मनोनुकूल व्यक्ति भी यदि मन्त्रिमण्डल में पहुँच गया तो बस कल से ही खबर लेना शुरू कर देते थे। हिन्दू हितों पर आघात वह क्षण भर भी सहन न कर सकते थे। इसी कारण पंजाब की जनता तो उनके विचारों की मुँह बाये बाट देखती ही रहती थी, शासक दल के सदस्य तथा अन्य नेता भी प्रायः प्रतिदिन उठते ही सशंक आँखों से प्रताप अखबार उठाकर देखते थे कि कहीं उनके विषय में तो महाशय जी ने कुछ टीका

टिप्पणी नहीं की है। आर्य समाज के कार्यकर्त्ता भी उस भय के अपवाद न थे। इस प्रकार पंजाब की राजनीति में महाशय जी का आतंक निर्विवाद था।

प्रायः यह देखा जाता है कि लोगों की शक्ति एकांगी होती है, कोई व्यक्ति वक्ता तो ओजस्वी होते हैं, परन्तु लेखनी उनकी इतनी प्रबल नहीं होती। कोई लेखनी के धनी होते हैं तो वक्तृता प्रभावपूर्ण नहीं होती। परन्तु विधाता ने महाशय जी को दोनों ही शक्तियों का भरपूर वरदान दिया था। वे वाणी तथा लेखनी दोनों के धनी थे। उनकी तीव्र बुद्धि की विश्लेषण शक्ति अद्भुत थी। स्मरण शक्ति भी असाधारण थी। ८० वर्ष से ऊपर की आयु में भी उनकी इन शक्तियों में वृद्धि ही प्रखरता बनी हुई थी। मस्तिष्क तथा चिन्तन शैली की स्वच्छता पर लम्बी शारीरिक व्याधि कुछ भी विपरीत प्रभाव पड़ा न कर सकी थी।

खेद है कि उनके निधन से हमारा एक वयोवृद्ध तथा सिद्धहस्त महारथी उठ गया, जिसके माध्यम से हमारा सब ओर रोव था। हमारी पूछताछ थी, प्रत्येक अवसर पर हमारा मुँह ताका जाता था। आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी की एक मजबूत कड़ी टूट गई।

आर्य समाज तथा पंजाब की यह क्षति कैसे पूरी हो, यही प्रश्न आज सब-के दिमागों में चक्कर काट रहा है।

सार्वदेशिक सभा अनुसार साप्ताहिक 'सत्संग पद्धति'

जिसमें क्रमानुसार अर्थ सहित संध्या, स्तुति प्रार्थनोपासना और स्वस्तिवाचन शांति प्रकरण, सामान्य प्रकरण और महर्षि दयानन्द जी लिखित प्रार्थनायें और १५ सुन्दर मिलकर गाने योग्य भजन हैं।

पृष्ठ ५, सुन्दर कागज, बड़ा टाइट, प्रथम पृष्ठ पर महर्षि का सुन्दर चित्र है। इस पर भी मूल्य केवल ४० नये पैसे रखा गया है। आर्य समाजों और आर्य महानुभावों को शीघ्र मंगवा लेना चाहिये। आर्य समाजों को १०) या दस रुपये से अधिक मंगवाने पर रियायत दी जायेगी।
मन्त्री आर्यसमाज चम्बा

श्रद्धांजलि

श्री नरेन्द्र जी मंत्री आ० प्र० सभा हैवराबाद

महाशय कृष्ण जी, आर्य समाज की पहली पीढ़ी के उन नेताओं में से एक थे कि जो महर्षि दयानन्द के महात् मिशन की पूर्ति के लिये अपना समस्त जीवन समर्पण कर वैदिक धर्म के सिद्धान्तों सम्बन्धी प्रचारार्थ तन-मन-धन से लगे हुए रहे। और मृत्यु पर्यन्त वे इसके लिये बड़ी ही तत्परता से शारीरिक, बौद्धिक व आर्थिक रूप से प्रयत्नशील रहे। जीवन भर आर्य समाज की सेवा में निरत रहे।

आर्य समाज के प्रत्येक शैक्षणिक, सामाजिक, और राजनैतिक क्षेत्र में आप अग्रणी रहे हैं। आपका जीवन जिस शानदार तरीके से आर्य समाज में आरम्भ हुआ था उसी प्रकार आपने ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हुये अपने पार्थिव शरीर को चढ़ा दिया। आपका जीवन एक ऐसा दीप स्तम्भ था जो आर्य जगत् के लिये दीर्घकाल तक पथ-प्रदर्शन कर सकेगा। मैं श्री स्वर्गीय महाशय कृष्ण जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

अमर स्मृति शेष है अब ।

श्री रामाकान्त

छुप गया
 जाज्वल्यमान नक्षत्र एक
 पूरब से पश्चिम तक,
 उत्तर से दक्षिण तक,
 महानाश के,
 फैले नीरव अधंकार में!
 हो गया प्रकाश लुप्त,
 सब मार्ग सूने हो गये,
 विवशता के दायरे,
 और हो गये घने !
 हत भाग्य हो
 निर्भीकता ने
 ढक लिया आनन
 सरगम के स्वर में
 सत्यता ने
 छोड़ दिया लय ताल मिलाना !
 लौह लेखनी
 भूल गई अंगार उगलना !
 निर्झर से भरते अमृत कण
 शुष्क हुए

समय-मरुथल में,
 वैदिक धर्म का पथगामी,
 भारत माँ का सपूत
 हिन्दी का हिमायती,
 जकड़ गया
 यम-पाश में सहसा !
 अब यह सवाल उठता है-
 सूने पथ का क्या होगा ?
 निर्भीकता में प्राण कहाँ से आयेंगे !
 सत्यता को
 कौन करेगा मुखरित ?
 कौन लेखनी दौड़ाकर,
 माया का परदा फाश करेगा ?
 कौन बनेगा नीलकण्ठ
 कौन विषपान करेगा ?
 वह कौन कि जिससे वेदों को
 सादर सम्मान मिलेगा,
 हिन्दी की हिमायत कौन करेगा ?
 अब इसीलिए
 दसों दिशायें गूँज रहीं,
 'कृष्ण' को याद किया है ?
 अमर स्मृति शेष है अब !!

कृष्ण !

मित्रसेन आर्य शास्त्री

सुज्ञानवान बलवान देव गुणों के पालक,
शान्ति रथी घनश्याम 'वीर हिन्दी' संचालक ।

जीवन भर पर-सेवा का ही नियम निभाया,
राष्ट्र-हित भला आपने कौन नहीं दुख पाया ।
धीर वीर गम्भीर अति देव महिमावान थे ।
परमपूज्य सम्माननीय 'वीर कृष्ण' महान थे ॥

हे भारत के रक्षक सुकर्म मर्म के हामी,
हिन्दी माता के वरद-पुत्र विश्व में नामी ।
संकट में माँ को छोड़कर हो तुम स्वर्ग सिधारे,
कौन नात्र को खे सकता है बिना तुम्हारे

विश्वोपवन में कीर्ति की फैली गन्ध ललाम है ।
शोकाकुल भारत का तुम्हें श्रद्धायुक्त प्रणाम है ॥

महाशय जी के निधन पर श्रद्धाँजलि

आर्य जाति के नील गगन का, टूट गया ध्रुव तारा

आर्य जाति के नील गगन का टूट गया ध्रुव तारा
आज शोक सन्तप्त हो गया आर्य जगत ही सारा
अन्यायों के आगे बढ़ बढ़ जिसने छाती तानो
त्याग और बलिदान अनोखा जिसको भरी जवानी
अंग्रेजों की संगीनों का था, जिसने मुख मोड़ा
और निजाम के लोहदुर्ग का, दर था जिसने फोड़ा
हिन्दू-हिन्दी-हिंद वंश का था जो सजग सहारा ॥१॥

धनी लेखनी के तुम ही थे ओजमयी थी वाणी
जन्-जन को नवजीवन देती थी वाणी कल्याणी
दयानन्द के स्वप्न अधूरे, पाकर जिसे निहाल हुए थे
श्रद्धानन्द की भावना के सपने साकार हुए थे—
देश-धर्म और जाति हित जीवन अपना वारा ॥२॥

कौन पुनः रोकेगा बढ़ अब, अन्यायों की आंधी
राष्ट्र संकट की वेला में, ले ली मौन समाधि
उमड़ पड़ी जन जन श्रद्धा गिरा नन से पानी
कहाँ सुनेंगे कैसे अब हम सजग तुम्हारा वाणी
शोकाकुल दिल्ली ही क्या है, है यह भारत सारा ॥३॥

‘कृष्ण’ तुम्हीं ने फिर ‘अर्जुन’ को देकर नव संदेश
अन्यायों में अडिग रहो, यह दिया अमर उपदेश
जब अधिकारों की रक्षा का पथ न कभी रुकेगा
सत्य न्याय का ध्वज जो तेरा, वह न कभी झुकेगा
अमर रहेगा युग-युग तक, पावन आदेश तुम्हारा ॥४॥

—बनारसीसिंह

संस्मरण

प्रो० भवानीलाल भारतीय एम० ए०

महाशय जी उस पुरानी पीढ़ी के आर्य-नेताओं के एक मात्र अवशिष्ट प्रतिनिधि थे जिन पर आर्यसमाज वस्तुतः गर्व कर सकता है। जिस प्रकार महात्मा हंसराज की परम्पराओं को महात्मा आनन्द स्वामी जी ने निभाया उसी प्रकार महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के वास्तविक उत्तराधिकारी महाशय जी ही थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वे लगभग आधी शताब्दी तक निर्विरोध नेता और पथ प्रदर्शक रहे। हैदराबाद के हिन्दी सत्याग्रह में वे सर्वाधिकारी (Dictator) की हैसियत से सम्मिलित हुये और आर्यों को निजामशाही के धार्मिक अत्याचारों से मुक्ति दिलाई। सिंध के सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन और पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन से भी उनका निकट का सम्बंध रहा। स्वास्थ्य के बिगड़े रहने पर भी वे कारागार जाने से नहीं हिचकिचाये और उन्होंने डटकर पंजाब सरकार की हिन्दी विरोधी नीति का प्रबल प्रतिरोध किया।

महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के वे मृत्यु पर्यन्त प्रधान रहे। उसी हैसियत से वे अजमेर में ऋषि निर्वाण दिवस पर आयोजित होने वाले ऋषि मेले में सम्मिलित हुआ करते थे। इन पंक्तियों के लेखक को महाशय जी के दर्शन का सौभाग्य दो वर्ष निरन्तर ऋषि मेले पर ही हुआ। यद्यपि उस समय भी उनकी अवस्था ८० वर्ष से ऊपर की थी, परन्तु वे युवकों जैसे साहस और उत्साह से परोपकारिणी सभा की प्रवृत्तियों में भाग

लेते थे। महाशय जी का व्याख्यान आर्यसमाज के पुराने खेवे के नेताओं और विद्वानों जैसा होता था। भाषा यद्यपि शुद्ध उर्दू होती थी, परन्तु विषय सामग्री विशुद्ध आर्य सामाजिक। यद्यपि वे स्वयं संस्कृत के जानकार नहीं थे, परन्तु आर्यसमाज के वेद विषयक दृष्टिकोण को उन्होंने भलीभाँति हृदयंगम कर लिया था। उस समय महाशय जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री वीरेन्द्र जी 'आर्य ज्योति' नामक एक उत्तम साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन करते थे और मैं उसमें नियमित रूप से लिखता था। जब मैंने महाशय जी से अपना नाम निर्देश पूर्वक परिचय दिया तो उन्होंने मुझे तुरन्त पहचान लिया और कहा आप भी खूब लिखते हैं, विविध विषयों पर और प्रचुर मात्रा में। द्वितीय बार जब उनसे भेंट हुई तो महाशय जी के साथ लाला चरणदास जी पुरी, एडवोकेट थे। पुरी जी आर्य-समाज रातानाडा, जोधपुर के मुकद्दमे में आर्यसमाज की ओर से पैरवी करने जोधपुर आये थे। महाशय जी ने लाला जी से मेरा परिचय कराया और कहा कि ये जोधपुर के प्रोफेसर जी आर्यपत्र पत्रिकाओं में खूब लिखते हैं। महाशय जी मेरे तुलनात्मक अध्ययन विषयक लेखों को रुचिपूर्वक पढ़ते थे। मैंने उनसे आर्य ज्योति को बंद करने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि आर्थिक हानि होने के कारण उक्त पत्र का चलाया जाना सम्भव नहीं था।

महाशय जी हिन्दी और उर्दू के निर्भीक पत्रकार के रूप में सदा याद किये जायेंगे। वे अविभाजित पंजाब में उर्दू प्रकाश का सम्पादन करते थे। बाद में उन्होंने उर्दू प्रताप और हिन्दी वीर अर्जुन का प्रकाशन भी आरम्भ कर दिया। वे प्रत्येक राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक विषयों पर बड़ी मार्मिक टिप्पणियाँ लिखा करते थे। सहस्रों व्यक्ति केवल महाशय जी की टिप्पणियों को पढ़ने के लिये नियमित रूप से वीर अर्जुन के ग्राहक बनते थे। उनकी दृष्टि आर्य-समाज की प्रत्येक प्रवृत्ति की ओर रहती थी। मुझे स्मरण है कि एक बार उन्होंने 'आर्य ज्योति' में आर्यसमाज में वेदविषयक अनुसंधान के कार्य की शिथिलता और अनियमितता पर बड़ी महत्त्वपूर्ण टिप्पणी लिखी थी। यद्यपि वेद उनके अध्ययन का विषय नहीं था, परन्तु आर्यसमाज में अनुसंधान केन्द्रों के नाम पर जो धांधली चल रही है और ठोस काम के नाम पर कुछ नहीं हा

रहा है, इस तथ्य से वे परिचित थे। टंकारा स्मारक की प्रगति के लिये वे सदैव चेष्टा करते रहे। आर्य जगत में जहाँ भी जो भी महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय कार्य होता उसे महाशय जी तुरन्त वीर अर्जुन द्वारा Publicity दे देते। मुझे स्मरण है, जोधपुर में आर्यसमाज के प्रयत्न से रेलवे पुल से लेकर वायुयान के स्टेशन तक के मार्ग को 'महर्षि दयानन्द मार्ग' नाम दे दिया गया था और वहाँ विश्वविद्यालय के बाहर महर्षि के जोधपुर आगमन और प्रस्थान तथा उनके प्रमुख उपदेशों को शिलालेख के रूप में स्थापित करने की योजना थी। मैंने आर्यमार्तण्ड के अधिष्ठाता की हैसियत से यह समाचार मार्तण्ड में प्रकाशित कराया। महाशय जी ने उसे पढ़ा और अपनी मूल्यवान् टिप्पणी सहित वीर अर्जुन में प्रकाशित कर दिया।

वे आजीवन आर्यसमाज के अतिरिक्त और किसी संस्था में नहीं गये और न आर्यसमाज और महर्षि के अतिरिक्त अन्य किसी व्यक्ति या समाज के प्रति निष्ठावान् रहे। आज जब कि आर्यसमाज की आन्तरिक स्थिति अत्यन्त डाँवा-डोल हो रही है और हम अनेक समस्याओं में फँस कर भविष्य के प्रति निराशापूर्ण दृष्टिकोण बना बैठे हैं, महाशय जी का हमारे बीच से उठ जाना निस्सन्देह दुःखद है। उनकी क्षति सदा अपूरणीय रहेगी।

वैदिक धर्म प्रचार के लिए

आर्योदय के

सदस्य बनिए !

कुछ स्मृतियाँ

श्री कुन्दन लाल

१९४७ में पंजाब के विभाजन से पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन जालन्धर में हुआ। महाशय जी कान के दर्द के कारण उपस्थित न थे। विरोधी ग्रुप से सम्बन्ध रखने के कारण में उनके सख्त खिलाफ था। मगर जिस समय यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि इस संकट के समय सभा की बागडोर किसके हाथों में सौंपी जाये तो मेरी अन्तरात्मा ने बिना किसी रोक टोक के एक ही नाम पुकारा। वह महाशय कृष्ण जी का था। पीडित विश्वम्भरनाथ जो यह बात सुन कर अवाक् रह गये। महाशय कृष्ण जी का आर्य समाज से प्रेम निर्विवाद था। अपने और पराये सब उनके इस प्रेम की प्रशंसा करते थे।

एक सज्जन जिनका आर्य समाज से सम्बन्ध है और जो मन, वचन और कर्म की एकता में विश्वास नहीं रखते अक्सर महाशय जी को धोखा दिया करते, मैंने एक दिन कहा आप भी कैसे आदमी हैं, रोज रोज धोखा खाते हैं और फिर विश्वास किये जाते हैं। तो हंसकर बोले.....।

“भरवत को अदा पर बन्द आँखें करके मिट जाना।

यह नादानी सही लेकिन, यह नादानी नहीं जाती ॥”

आर्य समाज सावुन बाजार लुधियाना का वार्षिक उत्सव था। महाशय जी रात की गाड़ी से वापिस लौट जाना चाहते थे। सीट रिजर्व करवाकर जब हमने टिकट लाकर दी और कीमत लेने में आना कानी करने लगे तो उन्होंने कहा कि

: ६८ :

मैंने आर्य समाज का हर काम अपने पास से खर्च करके किया है, मेरी प्रतिज्ञा में रुकावट क्यों डालते हो तब सब अधिकारी चुप हो गये और पैसे ले लिये।

वीरेन्द्र जी साडरस कतलया के केस में पकड़े गये। प्रताप के कार्यालय में काम करने वाले एक सज्जन सी० आई० डी० के आदमी थे और उनकी उल्टी सीवी रिपोर्टों पर यह सब कुछ हुआ था। महाशय जी को इस सज्जन की करतूत का पता चल गया। परन्तु क्षमाशील महाशय जी ने उनको कुछ भी नहीं कहा। लेकिन अन्तरात्मा की फटकार और मालिक से बेवफाही के पश्चात्ताप का बोझ वह देर तक न उठा सका और प्रताप छोड़कर चला गया।

महाशय जी अपने दोनों पुत्रों का बहुत सम्मान करते थे। उनके प्रबन्ध में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करते थे। परन्तु जब एक सज्जन ने आकर कहा कि हिन्दी रक्षा आन्दोलन के कारण एक विशेष प्रकार की भावना के वशीभूत होकर वीरेन्द्र जी ने मेरी प्रताप की ऐजन्सी छीन ली है। महाशय जी ने वीर जी से सारी स्थिति के स्पष्टीकरण के लिये कहा। स्पष्टीकरण सुनने के पश्चात् उन्होंने कहा प्रताप तो किसी को अपने आप छोड़ता नहीं यह नई बात क्या कायम की जा रही है। आज्ञाकारी पुत्र पिता की मन्शा को समझ गया और ऐजन्सी पहले सज्जन को लौटा दी।

देश के विभाजन के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में था। सारी परिस्थितियाँ उलझी हुई थीं। किसी को ना सूझता था कि इस आपत्तिकाल में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की नैया का खेवनहार कौन बने। पंडित भीमसैन जी, पंडित यशपाल जी, पंडित ज्ञानचन्द्र जी तथा और कई सज्जन गंगा की नहर के किनारे इस समस्या का हल सोच रहे थे। सर्व सम्मति से सबने एक ही नाम तय किया कि जो इस संकट के समय में पंजाब की आर्य समाज की नैया को परिस्थितियों के तूफान से बचाकर किनारे ले जा सकता है। और वह नाम महाशय कृष्ण जी का था। मैंने साधारण अधिवेशन में प्रस्ताव रखा कि महाशय कृष्ण जी को अधिकार दिया जाये कि जिस सज्जन को चाहें उसका नाम सभा प्रधान के पद के लिये घोषित कर दें। प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास हो गया भोजनोत्तर महाशय जी ने खड़े होकर घोषणा कि सब उपस्थित माननीय प्रतिनिधियों में से मैं इस पद के

योग्य पंडित विश्वम्भरनाथ जी को समझता हूँ। परन्तु बहुत जोर देने पर भी उन्होंने इस पद को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। इसलिये उनके बाद इस पद के योग्य मैं अपने आपको समझता हूँ। इस पर हँसी का फुवारा फूट पड़ा और तालियों के मध्य महाशय जी ने इस समस्या को सुलझाने का सारा बोझ अपने जुम्मे ले लिया।

माता जी (महाशय जी की धर्मपत्नी) बीमार थी। मैं उनके पास बैठा बातें कर रहा था। इतने में स्वामी सत्यानन्द जी महाराज आये। उन्होंने स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पूछताछ की। बातों-बातों में माता जी ने कहा कि मैं आर्य समाज और ऋषिदयानन्द की अनुगृहीत हूँ कि मेरे जैसी स्त्री जिसका मंके की तरफ से कोई सहारा नहीं और कमर टूट जाने के कारण चल फिर भी नहीं सकती उसको महाशय जी जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति इतना आदर और मान देते हैं, ऐसा वह आर्यसमाजी होने की वजह से ही करते हैं। यह कहते हुये उनकी आँखों से गंगा-जमुना की धारा वह निकली। मैं और स्वामी जी एक आर्य सज्जन के श्रेष्ठ व्यवहार के वर्णन से द्रवीभूत हुये।

नौजवानों को सभा में आगे न लाने आक्षेप का उत्तर देते हुये मुझे कहा कि हमारी संस्कृति में तो नवयुवकों के सुपुर्द घर गृहस्थी बनाने का काम है। समाज सेवा का कार्य तो पचास वर्ष से ऊपर की आयु के लोगों के लिये हैं। नवयुवक घर का दिया जलाये वगैर मन्दिर का दिया जलाने में क्यों उतावले हो रहे हैं। तजुरबा ने बताया कि महाशय जी की बात शत प्रतिशत ठीक थी। लोग वजीरों की खुशामद करते हैं लेकिन वजीर उनकी किया करते थे। पंजाब के कई चीफमिनिस्टर खुफिया से खुफिया बातों के सम्बन्ध में भी उनसे मशवरा लिया करते थे। पूर्णस्थापन विभाग के एक मिनिस्टर ने सौगन्ध लेने के पश्चात् सब से पहला टेलीफोन महाशय जी को किया और अपने कार्य की सफलता के लिये उनका आशीर्वाद मांगा। एक राजनैतिक पार्टी के नेता उनसे उलझे और खींके-खींके रहते थे। दैवयोग से यह चुनाव में एक राजनैतिक पार्टी के उम्मीदवार थे। आर्य समाजी वोटों की सहायता लेने के सम्बन्ध में उन्हें महाशय जी के पास जाना पड़ा। अगरचे महाशय जी ने उनके व्यवहार के

आर्योदय

१०१

६ वैशाख २०२०

सम्बन्ध में उन्हें कोई इशारा तक भी न दिया। शर्मिन्दगी से वह रो पड़े। इत्त-फाक से फैसला उन्हीं के हक में हुआ। महाशय जी दुख-मुख में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं की भरसक सहायता किया करते थे। लड़के लड़कियों की विवाह शादियों का खर्च, रोगियों की चिकित्सा का खर्च वह स्वयंमेव बर्दास्त करते और किसी को पता तक ना लगने देते थे। प्रताप और उसकी पालिसी को जनता की धरोहर समझते थे। वह जनता के हित के लिये लड़ते। प्रताप की हिमायत मांगने के उत्तर में एक चीफ मिनिस्टर को उन्होंने कहा कि यह नीलाम की वस्तु नहीं है—यह प्रजा की अमानत है और यह उसी के हित में बर्ती जा सकती है। मतभेद होने पर वह किसी कार्यकर्ता को आर्य समाज की सेवा से वंचित नहीं होने देते थे। और हर वर्कर का हर तरह से ध्यान रखते थे उनके दिल में सबके लिये दर्द था।

“काँटा लगे किसी के तड़पते हैं हम अमीर।”

सारे जहाँ का दर्द हमारे जिगर में है॥



मस्तिष्क एवं हृदय

सम्बन्धी भयंकर पागलपन, मृगो, हिस्टोरिया, पुराना सरदर्द,

ब्लडप्रेसर, दिल की तीव्र धड़कन, तथा हार्दिक पीड़ा

आदि सम्पूर्ण पुराने रोगों के परम विश्वस्त

निदान तथा चिकित्सा के लिए

परामर्श कीजिए—

कविराज योगेन्द्रपाल शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि

मुख्याधिष्ठाता—कन्या गुरुकुल हरिद्वार

मुख्य सम्पादक—‘शक्ति-सन्देश’ साप्ताहिक, कनखल

संचालक—आयुर्वेद शक्ति-आश्रम कनखल

पो० आ० गुरुकुल कांगड़ी, (सहारनपुर)

फोन नं० कार्यालय ६०, निवास ७७

महाशय कृष्ण जी के पत्रों के अंश

कुन्दनलाल वैद्य लुधियाना

आप को वाजे हो कि मैं जन संघ का अधिकारी नहीं। अधिकार तो मैं जितने चाहूँ मिल सकते हैं। लेकिन आर्यसमाज मुझे कोई अधिकार लेने ही नहीं देता।”

“मुझे कांग्रेस से इतना इखतलाफ नहीं जितना कि पंडित नेहरू की नीति से। अगर कांग्रेस ने गैर हिन्दुओं के सामने झुकना इख्तियार ना किया होता तो मैं इस वक्त कांग्रेस में होता।”

“आपने मुझे प्रधान बना कर जो ज़ुम्मेदारी मेरे कंधों पर डाली है उसमें मैं आपको सम्मिलित करना चाहता हूँ। इस सम्बन्ध में मेरे आपसे दो निवेदन हैं एक यह कि अपने अपने क्षेत्र में आर्यसमाज तथा सभा के कार्य को उन्नत करने का प्रयत्न कीजिये। और दूसरा यह कि मुझे अपने कर्त्तव्य से सचेत करते रहें। इस वर्ष सभा को कौन-कौन सा कार्य अपने हाथ में लेना चाहिये अर्थात् हमारा नया प्रोग्राम क्या होना चाहिये।”

मुनासिव यह है कि या तो मैं किसी दोस्त के पास ठहरू या आर्यसमाज के किसी अधिकारी के पास। इसलिये आप मेरे ठहरने के बारे में निश्चित रहें। और जो सज्जन मुझे अपना मेहमान बनाना चाहते हैं उन तक मेरा शुकरिया पहुँचा दें।”

“आर्यसमाज.....का केस चल रहा है। आर्यसमाज की बदकिस्मनी है कि इसके भगड़े बन्द होने में नहीं आते। अच्छा ! ईश्वर की मर्जी या उन लोगों की जो लड़ने भगड़ने में लुत्फ महसूस करते हैं। अगले माह किसी न किसी दिन पंजाब आकर इन्हें खत्म करवाने का प्रयत्न करूँगा।”

×

×

×

“आर्य कालेज, आर्य स्कूल और दूसरी संस्थाओं के प्रबन्ध के सम्बन्ध में मेरे विचार बने हुए हैं, उनमें कोई तबदीली नहीं आई। अन्तरंग सभा जो मुनासिब समझे मैं उसे मान लूँगा।”

×

×

×

“अच्छा या बुरा लेकिन मैं मुकामी झगड़ों में दिलचस्पी नहीं ले सकता। सभा जज तो बन सकती है घड़ा नहीं। आर्य समाजों के मुकामी झगड़ों की मुश्किल का हल मुझे यह नजर आता है कि किसी पुरजोश और शक्ति वाले अनुभवी नौजवान को सभा का प्रधान बनाया जाये जो दिन रात सभा के कार्य के लिए जगह बजगह फिरता रहे और इसे फिर अपने पावों पर खड़ा कर दे। आप ऐसे अधिकारियों के सम्बन्ध में दिमाग लड़ायें और मुझे बतायें।”

×

×

×

“सारी उमर जंग करते गुजर गई अब इस जिन्दगी से मन उक्ता गया है। जी में आया तो अपनी बात कह दूँगा। सभा माने या न माने मुझ से आप ना ही पूछें तो अच्छा है। आप जो भी आर्यसमाज के हित के लिए अच्छा समझें करें।”

×

×

×

“आपकी चिट्ठी में कोई ऐसी बात नहीं थी जिससे मुझे नाराजगी हो। ना मैं आपसे नाराज हूँ। मैं नाराजगी की मजिल से गुजर चुका हूँ अब मैं किसी से भी नाराज नहीं होता।”

×

×

×

“मैडिकल स्कूल लुधियाना में भर्ती के लिए। ४ लड़कों की सिफारिशें मेरे पास आईं उनमें अपने बहुत नजदीकी आदमी थे लेकिन मैंने किसी की सिफारिश करना मंजूर ना किया। वजह यह कि अगर लड़के मैडिकल स्कूलों में सिफारिशों

से लिये जाने लगे तो फिर वहाँ से नालायक डाक्टर निकला करेंगे.....
 अगर आप किसी लड़के को उसके नम्बरों की बिना कर मैडिकल स्कूल में लिए जाने के काबिल समझते हैं तो उसे इस बिनाह पर दाखिल करने से इन्कार ना किया जाये कि उसका पिता आपको संस्था के लिए मुँह मांगा दान नहीं दे सकता। लड़का योग्य और सुशील हो तो उसके पिता की तरफ से कम से कम दान भी मंजूर कर लेना चाहिए। लेकिन अगर वह दाखिल होने के योग्य ना हो तो बड़ी से बड़ी रकम और सिफारिश होने पर भी न लेना चाहिए।”

X

X

X

“इस सवाल का एक पहलू और भी है। आर्यसमाज की वेदी से पालेटेकस पर बहस तो की जा सकती है। लेकिन आर्यसमाज को बराबर रास्त पालेटेकस में नहीं डाला जा सकता। धार्मिक समाजों का अपने प्रोग्राम में पालेटेकस दाखिल करना खतरनाक होगा।”

X

X

X

“आज देशी इलाज में आर्य स्कूल की हैडमास्टरी के मुतलक मजमून पड़ा। मुझे यह सख्त नापसन्द है कि हमारे भाड़े अखबारों में आये। इस तरह संस्थायें बदनाम होती हैं।”

X

X

X

“मैं जीवन के उस मोड़ पर पहुँच चुका हूँ कि जिसमें किसी वक्त अचानक कुछ भी हो सकता है किन्तु समझना यही चाहिए कि मैं अच्छा ही चल रहा हूँ। आर्यसमाज के कामों में अब भी कुछ ना कुछ भाग लेता ही हूँ।”

X

X

X

“आप आर्यसमाज के..... चुने गए। अब आपको अपनी इच्छानुसार आर्यसमाज की सेवा करने का अवसर मिलेगा ही। आपका पहला काम यह होना चाहिए कि यदि कोई भाई रुठे हुए हों तो उन्हें घर जाकर मनायें। आर्यसमाज को हर काम करने वाले की जरूरत है।”

X

X

X

“मुझे अब किसी व्यक्ति पर गुस्सा नहीं आता ना मैं किसी से नाराज होता हूँ। मैं उन लोगों से क्या लहूँ जो मेरे पुत्रों के समान हैं। दूसरी वजह

आर्योदय

१०५

६ वैशाख २०२०

यह भी हो सकती है कि मुझ में नराज होने की शक्ति ही नहीं। नराज हो सकता है शक्तिशाली मनुष्य जो दूसरों को सजा भी दे सके। इसलिये मैं नराज ही नहीं होता।”

‘हिन्दी रक्षा आन्दोलन में हरयाणा प्रान्त के आर्य भाईयों ने जो सहयोग दिया है उसको नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता।

“मैं नहीं चाहता कि आर्य समाज सोचा राजनीति में पड़े। मैं केवल यह चाहता हूँ कि आर्य समाज यदि कोई राजनैतिक संस्था बना सके तो बनायें। सालत का तकाजा ही ऐसा है। यह मेरी निजि सम्मति है। मैं इसे आर्य समाज पर नहीं ठोसता। सामूहिक रूप से आर्य समाज का जो निश्चय होगा उसका मैं पाबन्द हूँगा।”

‘वेदार्थ तथा ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो सुझाव आपने दिए हैं उस पर जब आप मिलेंगे तब आप से विचार होगा। सत्यार्थ प्रकाश का ऋषि दयानन्द के हस्तलेख से मिलान करके एक कापी तैयार कर ली गई है। इसलिए आगामी संस्करण उसी के अनुसार छपेगा कुछ वेदों का हिन्दी भाष्य भी प्रकाशित हो चुका है। ऋग्वेद और यजुर्वेद के भाष्य के नये संस्करण निकल रहे हैं। किन्तु इस सम्बन्ध में आर्थिक समस्या जो उपस्थित होती है उससे निकलने का मार्ग आप से मिल कर ही समझा जा सकता है।”

“परोपकारणी सभा ने दो पंडित मुकरंर किये दोनों ने अपना-अपना काम मुकम्मल कर के सभा में देदिया है। सत्यार्थ-प्रकाश का नया संस्करण संशोधित कापी के अनुसार छापा जायेगा।”

“अगर आपकी जंग असूली है जातीय नहीं तो आप को दूसरे फरीक को यह जवाब देना चाहिये कि मेरी आप से कोई जाती लड़ाई नहीं न यह औहदों की जंग है। मैं ईमानदारी से यह मानता हूँ कि लुधियाना की आर्य संस्थाओं का मुफाद इसमें नहीं कि वह चन्द अशखास के हाथ में रहे बल्कि इस में है कि वह पंजाब की आर्य समाजों की शिरोमणी सभा के आधीन रहें। अगर आप यह बात मान लें तो मैं सब औहदे आपके हवाले करने को तैयार हूँ। असूल की कुरबानी पर मैं कोई समझौता करने को तैयार नहीं।”

“लुधियाना का आर्य स्कूल हमारा सबसे बड़ा शिक्षालय है, उसका प्रधानाध्यापक आर्य समाज का कोई विशेष व्यक्ति ही होना चाहिए।

आप आर्य समाजी भी हैं काँग्रेसी भी, इसलिए यह आपको गवारा नहीं कि आर्य समाज की किसी सरगर्मी को हिन्दूसभाई या संघी शकल दी जाए। अगर कोई देता है। तो उसे इसकी जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार रहना चाहिए। मुझे आपकी इस बात से इतफाक है कि जिन लोगों ने आर्य समाज के नगर कीर्तन को एक आम हिन्दू जलूस की शकल देने की कोशिश की उन्होंने इस सवाल के हुस्तो कबा पर (बुराई भलाई पर) गौर नहीं किया। अब जो कुछ हो चुका है हो चुका। अब कदम पीछे नहीं हटाया जा सकता। अकाली भूठ पर भूठ बोल रहे हैं और भूठों के जरिये अपने गुनाहों पर परदा पोशी करना चाहते हैं। इस वक्त हम पर वाजिब है कि जिन बेगुनाह हिन्दुओं को गिरफ्तार किया गया है उन की हम पूरी तरह मदद करें। सुलह की कोशिश भी जारी रखनी चाहिए। क्योंकि हर एक जमायत के मुफाद का तकाजा यही है कि अमन रहे। लेकिन याद रखें कि अकालियों की शरायत पर सुलह नहीं हो सकती। मुझे उम्मीद है कि बेगुनाहों के मुकदमात की पैरवी के लिए आपको लुधियाना से वकील मिल जायेंगे। लेकिन सख्त जरूरत की हालत में दिल्ली से भी भेजे जा सकते हैं।”

“मेरे जैसा शख्स जो आईन को अच्छी तरह समझता है वह एक फिकरे में अपनी राय किस तरह खत्म कर सकता था। आईन मुअत्तल हो सकता है तो सर्वसम्मति से बहु पक्ष से नहीं। अगर फरीक मुखालिफ का एक भी मैम्बर एतराज कर देता तो यह फैसला नाजायज हो जाता।”

× × + ×

“सभा घड़े बन्दी में नहीं पड़ सकती। न वह समाज के मुकाबले में कोई पक्ष बन सकती है। यह मेरी निश्चित सम्मति है।”

सारी स्थिति पर गम्तीरता से विचार करने पर मेरी यह निश्चित सम्मति बन गई है कि आर्य समाज की सारी समस्याओं का हल उसकी सर्वमान्य लीडर शिप में है। यदि हम सब लोग अपने में से किसी भी श्रेष्ठ व्यक्ति को अपना नेता मान कर उसके पीछे संगठित होकर चलें तो हम सब सस्याओं पर

आर्योदय

१०७

६ वैशाख २०२०

विजयी होसकते हैं। प्रभु हम सब को इस आवश्यक और उत्तम कार्य के लिए सुमति दें।

X

X

X

महाशय जी के बीसियों पत्रों में में कुछेक से कुछ अंश हम सबके पय-प्रदर्शन के लिए उद्धरित किए गये हैं सामयिक समस्याओं पर उनके सुभावबति उत्तम हैं। प्रभु हम को सुमति दें कि इन से हम क्रियात्मक लाभ उठा सकें।

—प्रेषक कुन्दनलाल वैद्य ●

सभा का नया प्रकाशन

बलिदान-जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित
बलिदान-जयन्ती स्मृति ग्रन्थ

जिसमें

आर्यसमाज के समस्त शहीदों का जीवन परिचय,
आर्यसमाज के सिद्धान्तों की व्याख्या है।

आज ही संगवाइए

सजिल्द ! १८ X २२/८ साईज के २५० पृष्ठ।

शहीदों-नेताओं के चित्र (बढ़िया कागज)

मूल्य ४-५० नये पैसे वो० पो० द्वारा ५)

एक से अधिक प्रतियाँ संगवाने पर डाक व्यय की छूट

यह पुस्तक प्रत्येक आर्यसमाज, गुरुकुल, स्कूल

तथा कालेज के पुस्तकालयों के लिए

बहुत उपयोगी है।

पुस्तक विभाग-आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

गुरुदत्त भवन, जालन्धर,

१५ हनुमान रोड़, नई दिल्ली।

महाशय जी और लुधियाना

श्री बाबूराम लुधियाना

स्वर्गीय महाशय जी आर्यसमाज लुधियाना के प्रायः प्रत्येक वार्षिकोत्सव पर पधारते, दिल्ली जालन्धर जाते आते समय भी यहाँ ठहरते, न ठहर सकते तो रेलवे स्टेशन पर मिल कर हमें कृतार्थ और अपनी प्रसन्नता प्रगट करते, मेरे साथ वर्षों से उनका पत्र-व्यवहार रहा, वह मेरे प्रत्येक पत्र का तुरन्त, अवश्य, और उचित, उत्तर देते; इन पंक्तियों को लिखते समय उनके पत्र मेरे सामने हैं ।

×

×

×

(१) सन् १९४३ ई० में यंगाल अकाल के समय जब मैं समाज और सार्वदेशिक सभा की ओर से सेवार्थ मा० श्रवण कुमार जी के साथ कलकत्ते पहुँचा वहाँ कई दिन ठहर सेवा करके वहाँ से लुधियाना के लिये २५ अनाथ बंगाली बालक लाया तब श्री महाशय जी ने पत्र लिखा, जब आप सभा प्रधान थे मेरे प्यारे गुप्त जी नमस्ते, आपका २७ सितम्बर का पत्र मिला, मैं आप को वधाई देता हूँ कि आप २५ बालक लाने में कामयाब हो गये हैं, अच्छा हुआ आपने सभा की कसर किसी हद तक तो पूरी कर दी..... हमें यह तस्लीम करना चाहिये कि हम इस बार पोछे रह गये हैं..... क्योंकि हमारे पास नौजवान वर कर नहीं हैं, क्या आप “प्रताप” में कलकत्ते के सम्बन्ध में लेख भेज सकते हैं ? जल्दी भेजिये उम्मेद के आपकी सेहत अच्छी होगी ।

आपका भाई “कृष्ण”

: १०८ :

(२) १९४७ में जब स्वर्गीय श्री नारायण स्वामी जी लाहौर अस्पताल में बीमार थे श्री महाशय जी घण्टों उनकी सेवा में रहते, मैंने ५ रुपये स्वामी जी के फलाहार के लिये महाशय जी को भेजे तो आपने लिखा, क्या मैं आपसे शिकायत कर सकता हूँ कि आपने हमें इस योग्य क्यों न समझा कि हम इन्हें फल खिला सकें,.....इत्फाक यह है कि इस समय लाहौर में कोई फल ही नहीं, होते तो “हम जैसे गरीब किसी न किसी तरह यह प्रबन्ध कर देते आपके ५ रुपये जमानत पड़े हैं, स्वामी जी महाराज से जिकर किया तो मुस्करा दिये ।

आपका

“कृष्ण”

(३) आर्यसमाज के उपनियमों में ४० वां नियम है “यदि कोई आर्य भाई किसी हेतु से संकट में हो.....तो आर्य समाज उसकी रक्षार्थ यथा शक्ति यथेचित प्रबन्ध करे” ५ फरवरी सन् १९४८ को जब मैं रा० स्व० संघ की पकड़ धकड़ में गिरफ्तार किया गया तो इस त्रस्त युग में श्री महाशय जी ने अपनी लोह लेखनी से ६ अप्रैल १९४८ के प्रताप में एक लीडिंग लिखा जो मेरे नाम से ही आरम्भ होता है आपने लिखा ।

“भारत सरकार ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को खिलाफ कानून जमायत करार दिया इस पर मुल्क भर में गिफ्तारियाँ हुई दूसरे सूबों के बारे में नहीं कह सकता.....लेकिन पंजाब और दिल्ली के बारे में कह सकता हूँ यहाँ तो गंदम के साथ धुन भी पिस रहा है.....लुधियाना के ला० बाबूराम गुप्ता को मिसाल मेरे सामने है, वोह बरसों आर्य समाज के मन्त्री रहे हैं । और आर्य समाज के सिवाय किसी समाज से उनका सम्बन्ध नहीं रहा पहले इन्हें एक माह के लिये नजर बन्द किया गया अब उनकी नजर बन्दी बढ़ा कर ६ माह कर दी गई है,.....लुधियाना की पुलिस को मेरा चैलेंज है कि वह ला० बाबू राम गुप्ता का ताल्लुक रा० स्व० से० संघ से साबित करे अगर कर दे तो मैं पब्लिक तौर पर माफी माँग लूँगा, लेकिन अगर साबित न हो सके तो ला० बाबूराम गुप्ता को रिहा करना होगा.....वोह आर्यसमाजी जेल में क्यों सड़ते रहें जिनका संघ से कोई ताल्लुक नहीं, जो महज इसलिये धर लिये गये हैं कि

मुकामी (स्थानीय) पुलिस की इन पर नजरे कहर थी मैं सरदार स्वर्णसिंह का ध्यान ला० बाबूराम गुप्ता केस पर दिलाता हूँ... उन्हें खुद मालूम हो जायेगा कि पुलिस ने कतन एक वेगुनाह शख्स को पकड़ कर जेल में डाल दिया है, ला० बाबूराम ६ मास जेल में रहकर भी जिन्दा रह सकते हैं लेकिन पंजाब की वजारत वे गुनाहों को जेल में डाल कर जिन्दा नहीं रह सकती मैं । ला० बाबूराम को फिल्लौर जेल से बाहर देखना चाहता हूँ इसलिये कि वह वे गुनाह हैं.....

(४) महाशय जी ने ६ तारीख को यह लेख लिखा ११ तारीख को मैं सै० जेल फिरोज पुर से बाहर था, घर पहुँच कर आँसुओं की बरसती बरसात में यह लेख पढ़कर धन्यवाद का पत्र लिखा और रिहाई का पता दिया, महाशय जी ने उत्तर में लिखा ।

१३ अप्रैल नई दिल्ली,

मेरे प्यारे बाबूराम जी सादर नमस्ते अभी अभी आपकी रिहाई की चिट्ठी मिली, जिससे मालूम हुआ कि आप रिहा होकर घर पहुँच गये हैं इस पर मुझे इस कदर ख़शी हुई कि मैंने फौरन आपके खत का जवाब देना जरूरी समझा मैं १५ अप्रैल को आर्य समाज के जलसे पर लुधियाना पहुँचूँगा उस वक़्त आपको गले लगा कर अपनी खुशी का इज़हार करूँगा आप जेल के हालात लिखकर भेजें तो प्रताप में छाप दिये जायेंगे १५ की रात को मेरा व्याख्यान रखवा दें,

आपका कृष्ण"

×

×

×

(५) पूज्य महाशय जी सभा के प्रधान थे तब और तद् पश्चात् भी सदैव इस विचार के रहे कि सभा से सम्बन्धित समाजों की बड़ी-बड़ी संस्थायें कालेज और स्कूलादि, सभा के आधीन होने चाहियें । लुधियाना के लिए भी उनका यही प्रयत्न था । और अन्त में सन् १९५१ से जब पूज्य महाशय जी सभा के "यूनिवर्सिटी शिक्षा व्यवस्थापक" बने तब उनके आदेशानुसार सं० २३५४-तियि २८२० के अनुसार आर्य कालेज लुधियाना आर्य समाज ने आर्य प्रतिनिधि को सौंप दिया पूज्य महाशय जी ने जिस वृक्ष को रोपा और सभा के वर्तमान अधिकारियों ने जिस कृपा जल से उसे सींचा आज वह पंजाब के सभी कालेजों में बढ़ते हुए दिनों दिन उन्नत अवस्था में है ।

स्वर्गारोही महाशय जी, जब तक सभा के प्रधान रहे तब तक और उनके पश्चात् उनकी सुनीति पर चलते हुए सभा के जो भी अधिकारी हुए सब का आर्य समाज लुधियाना से कृपा पूर्वक वर्ताव रहा है, यह समाज सदैव सभा की आज्ञाओं का पालन करती रही है, किन्तु श्री महाशय जी के स्वर्गारोहण से आर्य जगत को जो हानि पहुँची है। उसकी पूर्ति मुश्किल है।

“महफले हस्ति में पूछूँ किस से “महाशय” का पता।

शमा भी खामोश है परवाना भी खामोश है॥

पं० भगवदत्त जी द्वारा संशोधित

सत्यार्थ प्रकाश का अपूर्व स्वागत

श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक श्री आचार्य विश्वश्रवा जी, पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज, श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री, श्री लाला रामगोपाल जी, श्री डा० हरिप्रकाश जी आदि आदि महानुभावों ने इस संस्करण का हृदय से स्वागत किया तथा मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

मूल्य १२) इस समय विशेष छूट देकर १०) में।

कनैल श्री पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार (उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी) लिखते हैं—

“.....ग्रन्थ का प्रकाशन श्री पं० भगवदत्त जी जैसे विद्वान् की देख रेख में हुआ है, इससे इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता बढ़ गई है। श्री भगवदत्त जी जीवन भर शोध कार्य में लगे रहे हैं, खासकर ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के साथ उनका गहरा सम्बन्ध रहा है, इसलिए आपके इस प्रकाशन को चार चांद लग गये हैं। मैं आपको इस प्रयास के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क दिल्ली।

फोन नं० २२२७६५

मैंने उनसे क्या सीखा ?

क्षितिष वेदालंकार, एम० ए०

शायद सन् ४२ की बात है। लाहौर में आर्यसमाज बच्छोवाली के वार्षिकोत्सव पर मेरा पहली बार भाषण हुआ था। आर्यसमाज बच्छोवाली की आर्य जगत् में उस समय जो स्थिति थी उसके कारण उसका वार्षिकोत्सव उपदेशकों की परीक्षा के लिये एक तरह से उच्चतम न्यायालय का काम करता था। प्रायः समस्त पंजाब की आर्यसमाजों के प्रतिनिधि उस उत्सव में उत्साह के साथ भारी संख्या में शामिल होते थे और वहाँ से प्रेरणा लेकर फिर वापिस अपने-अपने नगर में जाकर आर्यसमाज के काम में और अधिक जोश के साथ जुट जाते थे।

मुझे गुरुकुल कांगड़ी से स्नातक की दीक्षा लिये अधिक अवसर नहीं बीता था और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक के रूप में भी जनता की दृष्टि में मेरा व्यक्तित्व अपेक्षाकृत नया था। इसलिये बच्छोवाली समाज के वार्षिकोत्सव पर बोलते हुए मेरे मन में भिन्न स्वभाविक थी। मैं नहीं जानता था कि नेताओं की दृष्टि में और उससे भी बढ़ कर जनता की दृष्टि में—जिन दोनों का निर्णय मिल कर किसी न्यायालय के निर्णय से कम महत्वपूर्ण नहीं होता—मेरा वह भाषण कैसा रहा। साथियों और इष्ट मित्रों की प्रशंसा को तो केवल उनके प्रेमपूर्ण पक्षपात का ही प्रदर्शक समझा जा सकता था।

किन्तु सहसा एक दिन मुझे पता लगा कि महाशय कृष्ण जी ने उस समय

आर्यसमाज की गतिविधियों की चर्चा करने वाले सबसे प्रमुख पत्र—“प्रकाश” में मेरे सम्बन्ध में कुछ लिखा है। उर्दू से अनभिज्ञ होने के कारण मैं स्वयं अपनी आँखों से उसे नहीं पढ़ सका और प्रशंसा-भीरू होने के कारण कहीं से किसी न किसी प्रकार उस अंक की प्रति तलाश करवा के उर्दू जानने वाले किसी व्यक्ति के मुख से पढ़वा कर अपने कानों से सुनकर तृप्ति लाभ करना भी मुझे हिमाकत और छिछोरापन लगा किन्तु अपनी प्रशंसा सुनकर मन-मन में जो एक सहज रम का निर्भर भरता रहता है, उससे भी मैं मुक्त रहा—इतना बड़ा झूठ मैं नहीं बोलूँगा।

परन्तु उस समय भी आत्म-गौरव की भावना से मन उतना स्फीत नहीं हुआ जितना महाशय जी की गुण ग्राहकता के प्रति और नव-युवकों को प्रोत्साहित कर देने की भावना के प्रति मन कृतज्ञता से भर उठा।

इससे पहले भी अनेक अवसरों और अनेक प्रसंगों पर महाशय जी के साक्षात्कार का अवसर मिला था। परन्तु इस घटना को मैं उनके साथ प्रथम मानसिक परिचय का निदर्शक समझता हूँ। अब तक उनके बारे में मेरे मन में यही धारणा थी कि महाशय जी की लौह-लेखनी एक बार जिसके पीछे पड़ जाती है, राम के बाण की तरह वह त्रिलोक में भी उसका पीछा नहीं छोड़ती। पर-निन्दा में उनकी लेखनी की उदारता विख्यात है, परन्तु पर-प्रशंसा में भी कंजूस बने रहना, गुण को गुण न कह सकना, किसी गुणज्ञ के लिये कितना बड़ा अभिशाप है—इस बात के मर्म को वे भली-भाँति समझेंगे जो महाभाष्यकार की ‘अज्ञानं तस्य शरणम्’ उक्ति के मर्म को समझते हैं।

×

×

×

एक और प्रसंग याद आ रहा है।

शायद सन् ४४ या ४५ की बात है। महाशय जी कुछ दिनों के विश्राम के लिये कश्मीर गये हुए थे। उनके कश्मीर-निवास काल में ही श्रीनगर की आर्य-समाज हज़ूरी बाग का वार्षिकोत्सव आ गया। सभा की ओर से उपदेशकों और भेजनोपदेशकों का यथोचित प्रोग्राम लाहौर से बना कर भेज दिया गया।

उपदेशकों की सूची में मेरा नाम नहीं था। सभा की दृष्टि से आवश्यक और सुविधाजनक समझ कर सभा ने मुझे किसी दूर दराज के इलाके की समाज के वार्षिकोत्सव का कार्य-क्रम देकर भेज रखा था। दो तीन वर्ष तक लगातार श्रीनगर समाज के वार्षिकोत्सव पर जाते रहने के कारण श्रीनगर वालों का स्नेह असंगत नहीं था। किन्तु वारम्बार लिखने पर भी जब सभा ने मुझे वहाँ भेजने से इन्कार कर दिया। तब श्रीनगर समाज के अधिकारियों ने महाशय जी के पास जाकर शिकायत की। महाशय जी ने लाहौर तार दिया और लाहौर से वेद प्रचाराधिष्ठाता का तार, मैं जहाँ भी था, मुझे तुरन्त श्रीनगर जाने के लिये मिला। मैं हैरान था कि अकस्मात् यह परिवर्तन क्यों हुआ और क्यों मुझे इतने लम्बे सफर के लिये विवश किया जा रहा है। लगातार चार दिन के सफर के पश्चात् जब मैं श्रीनगर पहुँचा तो वस्तु स्थिति का पता लगा।

श्रीनगर के वार्षिकोत्सव पर रविवार के दिन अपने भाषण में मैंने एक ऐतिहासिक घटना का उल्लेख किया। भाषण के समय महाशय कृष्ण जी वहाँ उपस्थित थे। भाषण के पश्चात् उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया, प्यार से पीठ थपथपाई, और भाषण के सामान्य स्वर की, भावना की और शैली की प्रशंसा की। किन्तु सहसा उनके बाद उनके मुख पर कुछ रोष-मिश्रित तीखापन झलक उठा। मुझ से पूछने लगे कि तुमने अपने भाषण में जिस ऐतिहासिक घटना का उल्लेख किया है वह तुमने कहाँ पढ़ी है, और उसका ऐतिहासिक प्रमाण क्या है?

महाशय जी का यह प्रश्न सुन कर मैं दंग रह गया कि किस प्रकार बारीकी से उन्होंने मेरे एक-एक शब्द की नाप तौल की है। निश्चय ही मैंने वह घटना किसी इतिहास की पुस्तक में नहीं पढ़ी थी। किन्तु सुनी सुनाई किंवदन्ती के आधार पर ही उस घटना का उल्लेख मैं कर गया था। जब मैंने उनके सामने यथार्थता प्रकट कर दी तब मैंने देखा कि उनके मुख पर रोष के स्थान पर सहसा वात्सल्य का भाव उभर आया है। उन्होंने मेरी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा—“देखो, तुम अभी नवयुवक हो, तुमको अभी आर्यसमाज की काफी सेवा करनी है, तुम्हारे जैसे सुपठित व्यक्ति से हम कोई ऐसी बात सुनने की आशा नहीं करते जो बात निराधार हो या जिसके पक्ष में तुम किसी इतिहास के

विद्वान् को प्रमाण रूप में पेश न कर सको ।” फिर उन्होंने कहा—“इसी प्रकार मेरे साथ भी एक घटना घटित हो गई थी । मैं अपने व्याख्यान में एक ऐसी ही ऐतिहासिक घटना का उल्लेख कर गया । किन्तु मेरे भाषण के तुरन्त बाद एक विधर्मी ने खड़े होकर मुझे चुनौती दी कि मैं अपनी बात को किसी ऐतिहासिक विद्वान् के प्रमाण से प्रमाणित करूँ ।” उस विधर्मी की चुनौती का जवाब मैं नहीं दे सका, इसीलिये तुम्हें अपने अनुभव से यह नेक सलाह देता हूँ कि तुम भी अपने भाषण में कोई ऐसी बात न कहो, जिसे तुम प्रमाणित न कर सको । तब से यह सलाह मैंने गाँठ बाँध ली ।

X

X

X

महाशय जी गुणों के पारावार थे । परन्तु फिर भी व्यक्ति के काम तो जलाशय का उतना ही पानी आयेगा जितना कि वह अपनी लुटिया में भर सकता है ।

जलाशय जितना विस्तृत होता है, लुटिया उतनी ही सीमित । मैंने अपनी लुटिया की सीमा की बात आपसे कही, न कि जलाशय की याह की ! ●

आर्य हवन सामग्री

सुगन्धित सर्व रोग नाशक विश्व विख्यात आर्य हवन सामग्री
से हो नित्य यज्ञ करें

नं० १ मेवा युक्त हवन सामग्री का भाव ८०) मन है ।

नं० २ सुगन्धित हवन सामग्री का भाव ५०) मन है ।

आज ही लिखें ।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य

भंडा धारी

संचालक आर्य हवन समाग्री

निर्माणशाला

सरायखेला दिल्ली—५

महाशय कृष्ण के सम्बन्ध में— महत्वपूर्ण समाचार पत्रों व पत्रकारों के विचार

एक महान् पत्रकार !

श्रीयश

सम्पादक—

दैनिक हिन्दी व उर्दू मिलाप



महाशय कृष्ण की मृत्यु पंजाब की ही नहीं, अपितु पूरे आर्य-जगत् की महातीक्ष्णता है। आज से लगभग ४५ वर्ष पहले उन्होंने पंजाब के सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। इस बीच परिस्थितियों ने कई करवटें लीं—सुखद भी और असुखद भी, लेकिन महाशय जी हर अवस्था में पंजाब की राजनीति को प्रभावित करते रहे—केवल लेख के द्वारा ही नहीं, अपितु संभाषण से भी। उनकी कलम का लोहा उनके विरोधी भी मानते थे। उनका सबसे बड़ा गुण उनकी स्थित-प्रज्ञता था। एक बार जो स्टैंड ले लिया, ले लिया, फिर बदला नहीं। जिस व्यक्ति का साथ दिया, पूरा दिया। उनके विचारों से किसी को मत भेद हो सकता था। लेकिन यह सभी मानते थे कि उन्हें कोई अपनी राह से विचलित नहीं कर सकता था। वह अंग्रेजी सरकार से भी टकराते रहे और फिर अपनी सरकार से भी। इन्हें अपना सिद्धान्त प्यारा था ऐसे व्यक्ति का उठ जाना स्थित प्रज्ञता की क्षति है। बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो अपने सिद्धान्त पर दृढ़ रह सकें।

क्रांतिकारी !

दैनिक 'ट्रिब्यून' की श्रद्धांजलि !

महाशय कृष्ण सही अर्थों में—'उत्तर भारत में पत्रकारिता के जनक' कहे जा सकते हैं ।

महाशय कृष्ण का जन्म पाकिस्तान में गुजरात के उस वजीराबाद नगर में हुआ था जिसने अनेक अग्रणी पत्रकारों को जन्म दिया है । वह अपने माता पिता की परमप्रिय सन्तान थे और उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा वजीराबाद में ही प्राप्त की थी यह विमस्य जनक प्रतीक होता है कि उन्होंने अपनी कालेज की शिक्षा इस्लामिया कालेज, लाहौर में प्राप्त की । उनका संबन्ध एक धर्मनिष्ठ परिवार से था और इस्लामिया कालेज में शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद एक क्रांति की भावना उनमें बहती रही । आगामी वर्षों में वे राजनीति तथा धर्म दोनों ही क्षेत्रों में क्रांतिकारी सिद्ध हुए ।

आगे चल कर वे आर्यसमाज के शिरोमणि नेताओं में गिने जाने लगे । राजनीति में यद्यपि उनकी कुछ व्यक्तिगत धारणायें थीं, वे सदैव उन लोगों के साथ रहे जो दासता की शृङ्खलाओं को तोड़ डालने के लिए प्रयत्नशील थे ।

महाशय कृष्ण आर्यसमाज के गुरुकुल विभाग के सर्व मान्य नेता थे । अनेक वर्षों तक वे पंजाब प्रतिनिधि सभा के मन्त्री और प्रधान रहे । वैदिक संस्कृति और हिन्दुत्व में उनकी अटूट आस्था थी ।

आलोचना में किसी को भी नहीं छोड़ते थे फिर भी भूल जाने और क्षमा कर देने की उनमें क्षमता थी ।

एक संस्था !

श्री जगतनारायण

सम्पादक

दैनिक हिन्दू समाचार जालंधर

आदरणीय महाशय जी स्वयं एक संस्था थे। आर्यसमाज में उनका विशेष स्थान था उनके विरोधी भी यह मानते थे कि आर्यसमाज का नेतृत्व जिस सुचारु ढंग से महाशय जी कर सकते थे कोई अन्य न कर सकता था। उनका परामर्श बड़ा महत्वपूर्ण होता था। मुझे महाशय जी के निकट आने का समय १९३२ के पश्चात् मिला जब कि वीरेन्द्र के साथ मुझे कांग्रेस में एक साथ काम करने का अवसर मिला। वैसे मैं दैनिक प्रताप का अध्ययन १९२४ से करता आ रहा हूँ और पूज्य महाशय कृष्ण का सम्पादकीय अवश्य पढ़ता था। उनकी लेखनी में शक्ति थी और पंजाब में हजारों लोग उनके सम्पादकीय को पढ़ने की प्रतीक्षा में रहते थे और वह भी उसे बड़ी श्रद्धा से पढ़ते जिनकी उनके विचारों से सहमति न थी। मेरी गणना भी महाशय जी के उन हजारों श्रद्धालुओं में थी जो कि प्रतिदिन उनके लेखों को पढ़ना भोजन की भांति ही अनिवार्य समझते थे।

आदरणीय महाशय जी का भारतीय पत्रकारिता में विशेष स्थान था। वह प्रथम पत्रकार थे जो अपने सम्पादकीय के नीचे अपना नाम लिखते थे और पाठकों को उनके नाम से स्नेह था। पत्रकारिता में सम्पादकीय के नीचे नाम लिखने की प्रथा महाशय कृष्ण ने ही शुरू की। महाशय कृष्ण के बारे में कुछ लोगों के विचार थे कि वह कट्टर साम्प्रदायिक हैं। मैं भी पर्याप्त समय तक उनके बारे में यह धारणा रखता रहा हूँ। लेकिन विगत सात या आठ वर्ष में

उनके निकट जाने का जो अवसर मिला। मैं उसके आधार पर यह कह सकता हूँ कि वह एक बहुत बड़े देश-भक्त थे। देश की चिन्ता उन्हें बीमारी के मध्य भी, लगी रही। और इसी चिन्ता के कारण उनकी बीमारी लम्बी होती चली गई। महाशय जी जहाँ एक महान् पत्रकार थे वहाँ वह एक महान् राज नीतिज्ञ भी चाहे उनका कार्य क्षेत्र धार्मिक ही क्यों न रहा हो। वह अधिकांश आर्य-समाज का ही काम करते थे। उनके लेख देश और विशेषकर पंजाब की राजनीति से सम्बन्धित होते थे। २१ फरवरी को उन्होंने मेरे साथ जो बातचीत की थी मैं उससे बड़ा प्रभावित हुआ था। महाशय जी हिन्दू जाति के उत्थान का भी पूरा-पूरा ध्यान रखते थे। उन्हें चीनी अतिक्रमण का बड़ा शोक पहुँचा था और उनको पता था कि प्रधान मन्त्री श्री नेहरू को अमरीकी सहायता की कदर करनी चाहिए। स्वर्गीय ने आर्यसमाज के लिए बहुत काम किया है। वह वास्तव में आर्यसमाज के स्तम्भ थे और पत्रकारिता के शिरोमणि। वह पत्रकार जगत में विशेष स्थान रखते थे। पंजाब का जो इतिहास लिखा जायगा विशेषकर जो १९१६ से लेकर १९६२ तक लिखा जायगा उसमें महाशय कृष्ण की सेवाओं का अवश्य उल्लेख होगा और स्वर्ण अक्षरों में। चाहे महाशय जी विभाजन के पश्चात् दिल्ली चले गये थे लेकिन उनका मन पंजाब में था और पंजाब की भलाई के लिए दैनिक 'वीर प्रताप' और 'प्रताप' में अपने विचार प्रकट करते रहे हैं। उनका वियोग पंजाब की जनता के लिए बड़ा ही कष्टप्रद है लेकिन मनुष्य प्रभु की इच्छा के आगे विवश है। ●

सफल पत्रकार !

दैनिक 'अकाली-पत्रिका' के विचार

आप एक सफल पत्रकार थे। आपने अपने समाचार पत्र को एक मामूली से स्तर से प्रारम्भ कर एक उच्च कोटि तक पहुँचाया। किसी दैनिक समाचार पत्र को चलाना कोई आसान कार्य नहीं। लेकिन महाशय कृष्ण ने अपने विशेष गुणों से ही इस क्षेत्र में अनुकरणीय सफलता प्राप्त की थी। महाशय जी आर्यसमाज के मुखिया थे। निरन्तर कई वर्ष तक उसकी नीति तैयार

करते रहे। हो सकता है कि उनकी विचारधारा के साथ हम सहमत न हों। लेकिन मनुष्य द्वारा शरीर त्यागने के पश्चात् सारे मत-भेद भी समाप्त हो जाते हैं। महाशय जी दक्षिण-पंथी विचारधारा के थे लेकिन इसके बावजूद उनका हमारे साथ बड़ा स्नेह था।

महाशय जी के स्वर्ग सिंघारने से उर्दू की पत्रकारिता में जो स्थान रिक्त हुआ है वह पूरा नहीं किया जा सकेगा। महाशय जी जैसे पत्रकार भारत में बहुत कम हैं। निःसन्देह महाशय जी की मृत्यु ऐसी क्षति है जिसकी पूर्ति कठिन है। आपने आर्यसमाज को जीवित रखने के लिए बड़ा संघर्ष किया है जो कि भुलाया नहीं जा सकता।

युग प्रतीक !

श्री प्रियतम ज्यायी

दैनिक प्रदीप जालंधर

श्री महाशय कृष्ण जी की मृत्यु से पंजाब में पत्रकारिता के उस युग का अन्त निकट आ गया है जिस के प्रतिनिधि बाबू काली नाथ राय, मौलाना जफर अली खां और मेला राम बफा जैसे कलम के धनी समझे गए हैं। हर युग के अन्त का एक समय निश्चित है। यह युग भी वापिस नहीं आ सकता परन्तु उसकी स्मृति पंजाब के सामाजिक, राजनीतिक इतिहास पर अंकित रहेगी। सन् १९१९ में होश सम्भालने में बहुत पहले मैंने उर्दू पत्रकारिता का प्रारम्भिक दौर देखा। लेखनी की स्वतन्त्रता के लिए इन बुजुर्गों को पग-पग पर संघर्ष करना पड़ा। कोई जन आन्दोलन ऐसा नहीं था। जिसमें उन्होंने सर गर्मी से भाग न लिया हो एक सहानुभूति विहीन विदेशी सरकार और उसके सम्मान प्राप्त समर्थकों के साथ उनके कई जबरदस्त मोर्चे हुए परन्तु इन लड़ाइयों में भी वे कुछ निश्चित सिद्धान्तों और शिष्टाचार के कुछ तरीकों

पर जमे रहना आवश्यक समझते थे। वह सब कुछ अब समाप्त हो चुका है राजनीति और पत्रकारिता के मूल्य ही बदल गए हैं। आज राजनीतिक भगड़ों में जो घटिया हथियार प्रयुक्त होते हैं और सार्वजनिक जीवन जिस तरह स्वार्थ-मय संघर्ष होकर रह गया है उनको देखते हुए अब राजनीतिक लड़ाइयों और पत्रकारिता के मार्कों में भी वह आनन्द नहीं रह गया। जिन्होंने यह युग देखा और इस के निर्माण में भाग लिया वह लोग समाप्त हो गए जो शेष हैं वे समाप्त हो रहे हैं।

महाशय कृष्ण की गतिविधियाँ अधिकांशतः आर्य समाज के क्षेत्र तक समिति थीं। समय-समय पर उन्होंने कई अन्य सार्वजनिक आन्दोलनों में भी भाग लिया परन्तु पत्रकार के रूप में वे सारे राज्यकी राजनीति पर छाये रहे वह जिस मिट्टी के बने थे वह मिट्टी विधाता आजकल मानव निर्माण के लिए प्रयोग में नहीं लाता, वे स्वयं कहा करते थे कि उनकी गर्दन टूट सकती है, झुक नहीं सकती, उनकी राजनीति से मत भेद रखने के बावजूद इस बात से इन्कार करना सम्भव नहीं कि इस बुजुर्ग ने जिस पक्ष के समर्थन का बीड़ा उठाया, उस के लिए सैनिक की तरह लड़ता रहा। पराजय स्वीकार करना उनके स्वभाव में नहीं था। उनमें एक और भी विशेषता थी। पत्रकारिता के क्षेत्र में यदि उनके किसी शत्रु के साथ भी शासन की ओर से कोई कठोरता हुई तो महाशय जी अपने मत भेदों को तिलांजलि देकर उसकी सहायता के लिए खम ठोक कर खड़े हो गए। और उन्हें उस समय तक चैन नहीं आता था जब तक वह उस अन्याय का अन्त नहीं करा लेते थे। ओडवायर, मैक्लेगन, डीमाँठ मारन्सी आदि पंजाब के गवर्नरों, सर सिकन्दर हयात, चौ, छोद्दराम, मिस्टर जिन्ना और मा० तारारसिंह के विरुद्ध उनका संघर्ष ऐतिहासिक घटनायें हैं।

विभाजन के बाद स्थिति बदल गई परन्तु उनकी संघर्षमयी वृत्ति कुछ अवस्थाओं में भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री को भी क्षमा करने के लिए तैयार न हुई। समय पाकर उनकी आलोचना का प्रसाद भारतीय जनसंघ को भी मिला। वास्तविकता यह कि कोई भी जीवित और प्रगति-शील आन्दोलन उनकी लेखनी से बच नहीं पाया।

मैंने महाशयजी से बहुत कुछ सीखा हैं। विद्यार्थी जीवन में प्रकाश में उनके लेख पढ़ कर मेरे मन में लिखने का भाव उत्पन्न हुआ। पत्रकारिता उनका व्यवसाय भी था, और उनकी रुचि भी। यही कारण था कि बीमारी में भी वे लिखने का मोह छोड़ नहीं सकते थे। जिस दिन उनकी मृत्यु हुई उस दिन भी उन्होंने एक काफी लम्बा लेख लिखवाया था। पत्रकारिता एक ऐसी पत्नी है— जो सपत्नी को सहन नहीं कर सकती। सम्भवतः यही कारण है कि महाशय जी ने कोई पुस्तक नहीं लिखी। उनकी पुस्तक कम से कम मैंने तो नहीं देखी। लम्बे समय से रोग ग्रस्त होते हुए भी उनका साहस और कर्मठता प्रशंसनीय थी। उनकी मृत्यु रविवार को हुई परन्तु इस से केवल दो दिन पूर्व वे दिल्ली में ऋषि-बोधोत्सव के प्रधान बने और वहाँ उन्होंने भाषण दिया। उनका देहान्त उनके मित्रों और श्रद्धालुओं के लिए एक बहुत बड़ा आघात है। ●

इतने मोटे अक्षरों में ~~१०~~ स्थूलाक्षर सत्यार्थ प्रकाश

* प्रसिद्ध विद्वान् पं० जगदेवसिंह जो सिद्धान्ती की टिप्पणियाँ *

* आकार १"—१"×१०" पृष्ठ सं० ६०० *

* सुन्दर मोटे कागज पर दुरंगी छपाई । *

* कपड़े की पक्की जिल्द । *

* मूल्य केवल १३) *

छोटा सत्यार्थ प्रकाश

(ऋषि चित्र सहित सुन्दर संस्करण)

मूल्य केवल—दो रुपया—मात्र

पता—(१) वैदिक साहित्य सदन २/३१, रूपनगर, देहली-६

(२) हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल भुजभर (रोहतक)

स्वाध्याय तथा प्रचारोपयोगी उत्तम साहित्य

१. उर्दू सत्यार्थ प्रकाश—आर्यसमाज के प्रसिद्ध अद्वितीय विद्वान् पं० चमूपति जी एम० ए० द्वारा अनूदित ! मूल्य ३.५० न० पं०

२. भागवत खण्डनम्—वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० युविष्ठिर जी मीमांसक द्वारा अनूदित । मूल्य ५० नए पैसे ।

३. वेदों का यथार्थ स्वरूप—लेखक पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड । इस पुस्तक में पूज्य पण्डित जी ने वेदों के स्वरूप को अति सरल और यथार्थ रूप में बड़ी विद्वत्ता से प्रस्तुत किया है । ६.५० नए पैसे ।

४. बुद्ध ऐण्ड दयानन्द—(अंग्रेजी) ले० श्री पण्डित गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० । मूल्य २)

५. वैदिक उपासना का प्रकार—ले० श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज । मूल्य १२ नये पैसे ।

६. बलिदान-जयन्ती स्मृति ग्रन्थ—आर्यसमाज के समस्त शहीदों का जीवन-परिचय, आर्यसमाज के सिद्धान्तों की व्याख्या, शहीदों तथा नेताओं के चित्र । बढ़िया कागज, मूल्य ४.५० न० पं० और बी० पी० द्वारा ५)

७. सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी—मूल्य २)

८. संस्कार विधि—मूल्य १.२५ नये पैसे

९. आर्यसमाज दर्शन—लेखक श्री रामचन्द्र जावेद । मूल्य २)

१०. ईशोपनिषद्—व्याख्याकार श्री पं० हरिशरण जी सिद्धान्तालंकार । मूल्य ७५ नये पैसे)

११. खरी बातों का खोटापन—ले० स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज । मूल्य ६ नये पैसे ।

अधिष्ठाता

साहित्य प्रकाशन विभाग, आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब,

★ ओ३म् सत्यमेव जयते ★

बम्बई से हर प्रकार का कपड़ा खरीदते समय

—हमें सदैव याद रखिये—

- * फायदे से खरीदी
 - * रहने व शाकाहारी भोजन का योग्य प्रबन्ध
 - * शीघ्र चालानी
 - * भाव य दी मुप्त
 - * तुरन्त प्रश्नोत्तर
 - * परचून खरीदी - का विशेष प्रबन्ध
- पत्र-व्यवहार के लिए सदैव आमन्त्रित करते हैं ।

भगवान्देव आर्य एण्ड कम्पनी

स्थापित इन्दौर १९४६

बम्बई १९५३

Leading Purchaser in Bombay Cloth Market.

४५/४७ चम्पागली—मूलजी जेठा मार्केट

पोस्ट बाक्स नम्बर २४१५ बम्बई—२

तार का पता—कमलराज

फोन—३०५५३—३४२६३

★ ओ३म् सत्यमेव जयते ★

महर्षि टैक्सटाइल्स

कपड़ा खरीदते समय 'महर्षि टैक्सटाइल्स' को अवश्य याद रखिये

रंगीन बायल	धुला मलमल	धुली धोती	ग्रेधोली	लठा
आर्य रमणी	कमला रानी	आर्यकिरण	मेघदूत	अमर
आर्य कुमारी	सुनीता	आर्य संदेश	जीन ज्योति	किशोर
आर्यनन्दनी	कमल	आर्य प्रेमी	राजेन्द्र	४६२४
आर्य कन्या	४४४४	आर्य वीर	रमेश बाबू	२६०००
राजकुमारी	राज प्रभा	अशोक आनन्द आचार्य		K५५३६
शोभाकुमारी	B ८७६	वैदिक किरण श्रीमान		५४०३६
	B ३६६	वैदिक सन्देश	आर्य पुरुष	५१५१६

भगवान्देव आर्य एण्ड कम्पनी

दुकान	तार	कार्यालय
सांचागला	रमेशराज	४५/४७ चम्पा गली
मूल जेठा मार्केट	फोन—३०५५३	मूल जी जेठा मार्केट
बम्बई—२	३४२६३	बम्बई—२

Phone No 163

फोन नं० १६३

आरोग्य (Regd) यमुनानगर की ओर से दमा के रोगियों के लिये शुभ संदेश ।

श्वास (दमा) के बारे में ये कहावतें सुनी जाती हैं कि “दमा दमों के साथ” आज से लगभग १५ वर्ष हुये मैं भी इस कहावत को सुनकर चुप हो जाया करता था, किन्तु मेरे तन में वह भावना बराबर उठती रही कि मैं श्वास के रोगियों को इस भयंकर रोग से छुटकारा दिलाने में कुछ सहायता कर सकूँ ।

परम पिता परमात्मा की कृपा से मुझे इसके लिये विशेष गुणकारी ओषधी **श्वास रिपु** प्राप्त हुई । अब मैं गत १५ वर्षों में हजारों रोगियों की सेवा के पश्चात् पूर्ण विश्वास के साथ यह कह सकता हूँ कि महानरक में तड़पते हुये श्वास (दमा) के रोगी **श्वास रिपु** के सेवन से एवं योगासन, प्राणायाम, उपासना आदि स्वास्थ्य के प्राकृतिक नियमों का पालन करते हुये अपना जीवन सुख से व्यतीत कर सकते हैं ।

अतः आपको मैं सहर्ष ये संदेश देना चाहता हूँ कि यदि आपका कोई बन्धु या सम्बन्धी इस रोग से पीड़ित हो तो ‘आरोग्य मन्दिर’ में पधार कर लाभ उठायें । श्वास (दमा) रोगियों के उत्साह वर्धनार्थ इस ओषधी से लाभ प्राप्त करने वाले बहुत से व्यक्तियों की सम्मतियाँ प्राप्त हो चुकी हैं ।

कविराज रामसिंह वैद्य वाचस्पति आयुर्वेदाचार्य श्वास रोग विशेषज्ञ (स्वर्ण पदक प्राप्त) ।

नोटः—स्वास्थ्य के प्राकृतिक नियमों, योगासन और प्राणायाम की जानकारी के लिये “आरोग्य मन्दिर” की ओर से प्रकाशित पुस्तक “आरोग्य प्रकाश” (Regd.) ।

यह पुस्तक गवर्नमेंट आफ इंडिया से रजिस्टर्ड तथा प्रान्तीय सरकारों से स्वीकृत एवं सम्मानित हैं । हर प्रकार के पत्र व्यवहार का पताः—
आरोग्य मन्दिर (Regd.) यमुनानगर, (जिला अम्बाला)

गुरुकुल

कांगड़ी

फार्मेसी,

हरिद्वार

की

दो अपूर्व भेंटें



भीमसेनो सुरमा

आँखों के लिए अपूर्व गुणकारी



ब्राह्मी तेल

दिमागी शक्ति को बढ़ाने के लिए उत्तम तेल

फार्मैसी की एजेंसियां

१. अम्बाला छावनी—अलंकार मंडिकल हाल;
निकट निगार सिनेमा ।
२. अमृतसर—शांतिस्वरूप, कटरा आहलुवालिया ।
३. होशियारपुर—निधि फार्मैसी ।
४. जालन्धर—इण्डियन मंडिसन हाऊस, भैरों बाजार ।
५. पानीपत—जय भगवान् जैन, अत्तार, बड़ा बाजार ।
६. पटियाला—वेद प्रकाश महता, आर्य समाज ।
७. भटिण्डा—गोपाल मंडिकल हाल ।
८. रोहतक—आर्य वस्तु-मंडार, रेलवे रोड ।
९. लुधियाना—विष्णुदत्त जी, चौक अलेरीगंज ।
१०. नरवाना मण्डी—कांशीराम वृजलाल, रेलवे रोड ।
११. जगाधरी—जगदीश औषधालय, बुड़िया अड्डा ।
१२. गुरदासपुर—गुप्ता मंडिकल हाल, सदर बाजार ।

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा

निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार संचालित

हिन्दी स्तर की परीक्षाएँ

विज्ञ (Hindi High School Examination) परीक्षा

भूषण (Hindi Intermediate Examination) परीक्षा

विद्यारत्नाकर (Hindi B. A. Examination) परीक्षा

वर्ष में एक बार दिसम्बर माह में

धार्मिक परीक्षाएँ

वैदिक संस्कृति के प्रचारार्थ
विद्यारत्न, विद्या भूषण
विद्याविचक्षण, विद्यातीर्थ
विद्याधुरीण
प्रतिवर्ष जून में

साहित्यिक परीक्षाएँ

संस्कृत निष्ठ भाषा के प्रचारार्थ
प्रथमा
मध्यमा (साहित्य प्रभाकर)
उत्तमा (साहित्यरत्न)
प्रतिवर्ष जून दिसम्बर में

आंग्ल भाषा की परीक्षाएँ

जूनियर हाई स्कूल, हाई स्कूल, इन्टर आर्ट, कामर्स साइन्स
प्रतिवर्ष मार्च दिसम्बर में

हिन्दी ज्ञान परीक्षाएँ

अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी माध्यम के लिये छात्रों को तैयार करने हेतु
संचालित ।

विद्यारम्भ प्रथम (अ)

विद्या प्रवेग (कक्षा १)

विद्याव्रती (कक्षा ३)

विद्यारम्भ द्वितीय (ब)

विद्याबोध (कक्षा २)

विद्यार्थी (कक्षा ४)

नगर, ग्राम जहाँ भी सुविधा हो, केन्द्र, पाठशालाएँ, रात्रि कक्षाएँ
चलाइये, सभी प्रकार के विवरण के लिये लिखिए :—

सैन्ट्रल बोर्ड आफ हायर एजुकेशन

विद्या मन्दिर भवन, नई दिल्ली—१८

क्या आप चाहते हैं कि—

- आर्य समाज का लक्ष्य पूरा हो—
 - वैदिक प्रचार धारा फैले—
 - मत मतान्तर समाप्त हों—
- तो

सहयोग दीजिए
आर्योदय की

एजेंसी लोजिए
अपने साप्ताहिक सत्सङ्ग में

आर्योदय

वितरित करें ।

नियमावली मंगाएँ

व्यवस्थापक

आर्योदय

फोन ४०६८७

१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली

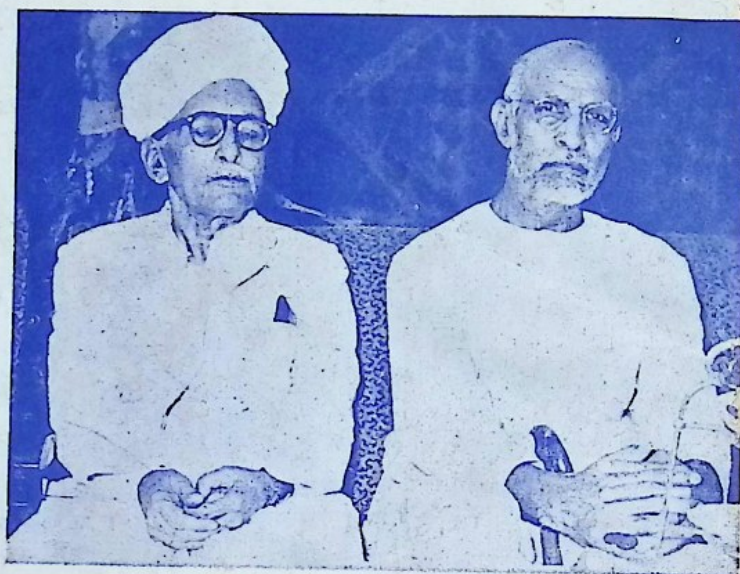
CEGD. NO. D-1344,

२१ अप्रैल १९६३]

आर्योदय

[६ वैशाख २०२]

हिन्दी साप्ताहिक १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली



सावंदेशिक समा के प्रधान
श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी के साथ श्री महाशय कृष्ण

वैदिक धर्म प्रचार के लिए
भारत की राजधानी से प्रकाशित
आर्य समाज के एक मात्र साप्ताहिक
आर्योदय के
आज ही ८) भेजकर सदस्य बनें

शिवकुमार शास्त्री मुद्रक व प्रकाशक १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के लिए
सम्राट प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली में मुद्रित ।

6-
42



